શ્રી દ્વારકેશો જયતિ

શ્રી દ્વારકાધીશ - તૃતીયગૃહની વર્ષભરની

સેવા - શૃંગાર - સામગ્રી - પ્રણાલિ

સંપાદક
તૃતીય - ગૃહ તિલકાયત

પુ. પા. ગો. શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજશ્રી
કાંકરોલી

પ્રકાશક
વિદ્યાવિભાગ - કાંકરોલી

વિ. સં. ૨૦૫૦ વલ્લભાબ્દ - ૫૧૬

શ્રી

નિર્દેશક
તૃતીય ગૃહાધીશ્વર
ગો. શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજ
કાંકરોલી

॥ श्री हरिः ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥
॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥
॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः ॥

प्रास्ताविकम्

श्रीमत्परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम प्रभुने भारतवर्ष के मनीषियो को, मुनियो को वेद–ज्ञान की अतुल बुद्धिसम्पदा से सम्पन्न कर विश्व की श्रेष्ठतम चिन्तन प्रणाली का पुरोगामी बनाया है । इन महर्षियों ने **"यावत् जीवन जीओ अग्नि होत्र करो"** ऐसी वेदाज्ञा का पालन करते हुए यज्ञपुरुष भगवान् का चिंतन और सेवन किया ।

कालान्तर में युग प्रभाव से शिथिल जनमानस को पुनर्जागृत करने को अनेक आचार्यों ने और संत विचारकों ने देश काल के अनुरूप उस वेदज्ञान के अनेक विभाग किये, श्रुति और स्मृति विधा से चिन्तन करते हुए ज्ञान, कर्म और भक्ति इस प्रकार त्रिविध प्रकार से पृथक् वा सयुक्त मार्ग से दिशा निर्देश करते हुए अनेक मार्ग दिखलाये । इन्हीं आचार्यों की चिन्तन परंपरा का चरमोत्कर्ष यदि देखना हो तो महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजीकी शुद्धाद्वैत दर्शन विधा के पुष्टिमार्ग में ही मिलता है ।

श्रीमहाप्रभुजीने वेद की उस अग्निहोत्र वाली आज्ञा को ही युगानुरूप परम तात्विक चिन्तन और दीर्घ दृष्टि के

फलस्वरुप जनसामान्य के उपयुक्त भगवत्सेवा के रूप में समझाया है । क्योंकि देशकालद्रव्यकर्तृमंत्रकर्मादि का विचार करने पर आज उस यज्ञ परंपरा को यथावत् जन सामान्य के व्यवहार के उपयुक्त नहीं समझाजा सकता है । उस प्रकार का अधिकारी जीव बनना मुश्किल है अतः श्रीमद् वल्लभ ने श्री प्रभु के मुखारविंद स्वरूप वैश्वानर - अग्नि में हविष्यान्न की आहूति रूप से ही सेवा सामग्री समर्पण करने का प्रकार समाज के सन्मुख प्रस्तुत किया ।

शुक्ल यजुर्वेद में जनक याज्ञवल्क्य संवाद के रूप में इस अग्निहोत्र का चिन्तन किया गया है । वहाँ बतलाया गया है प्रत्येक को अग्निहोत्र करना चाहिये समस्त हविष्य पदार्थो से, तदभाव में पंच समिधाओं से, तदभाव में वन्य काष्ठ से और वह भी अनुपलब्ध हो तब केवल आज्य (घी) से ही करे, परन्तु करना अवश्य चाहिये ।

इसी बात को समझाते हुए श्रीवल्लभने आज्ञा दी है कि प्रत्येक व्यक्ति को भगवत्सेवा अवश्य करनी चाहिये । भगवत्सेवा एक यज्ञ है, इसके माध्यम से हर व्यक्ति को भगवान् के मुखारविंदरूप अग्नि में हविष्यान्न की आहूति अवश्य देनी चाहिये । पूर्व निर्दिष्ट क्रम से-समस्त हविष्य = सखडी, पंच समिधा = अनसखडी, वन्यकाष्ठ = दूधघर, फलादि, केवल आज्य = मिश्री इस प्रकार यथाशक्य प्रकार से ही सेवा करें परन्तु सेवा अवश्य करें । इस प्रकार का सिद्धांत, जिसमें उस वेदाज्ञा का पालन हर जीव कर सके और जीवन क्रम और युग धर्म के अनुरुप भी हो, जनसमाज को

देना महाप्रभु श्री वल्लभ के गूढ़चिंतन और गहन दृष्टि का ही परिणाम है ।

इसी प्रकार जैसे वेदाध्ययन के लिये व्यक्ति को उपनयन द्वारा दीक्षा दी जाती है तथा यज्ञ करने के पूर्व पुनः दीक्षित किया जाता है उसी प्रकार वैष्णव को अष्टाक्षर और गद्य मंत्रादि के रुप में उभयधा दीक्षित करके भगवान् के नामात्मक स्वरूप और रूपात्मक स्वरूप दोनों के सेवन का अधिकार उपलब्ध कराया जाता है ।

इससे नामदीक्षा और निवेदन दीक्षा के बाद प्रत्येक वैष्णव को भगवत्सेवा करनी चाहिये । देश काल और अपनी परिस्थिति के अनुसार हर एक को अपनी विवेक-बुद्धि के द्वारा विचार पूर्वक सेवाक्रम निश्चित कर के गुरुदेव की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये ।

सेवा करने के लिये सर्व प्रथम श्री प्रभु का स्वरुप पधराना चाहिये । श्रीमद् भागवत में आठ प्रकार के भगवत् स्वरुप बतलाये हैं, (१) शिलाखण्ड से निर्मित, (२) काष्ठ से निर्मित, (३) धातु से निर्मित (४) चंदनादि के लेप द्वारा (अंगराग) निर्मित, (५) चित्र रूप (६) मृतिका से निर्मित (७) मन की तीव्र एकाग्रता द्वारा प्रत्यक्षीकृत और (८) रत्नादि द्वारा निर्मित इस प्रकार आठ स्वरूपों में से यथा उपलब्ध और अपने सेवन के लिये उपयुक्त स्वरूप को गुरु की आज्ञा से पधराना चाहिये ।

श्रीमद् वल्लभाचार्यजीने श्री प्रभु के द्विदलात्मक स्वरूप

भावना को सिद्ध करने के लिये जो संकेत किया है उसको श्री प्रभुचरण से लेकर श्री हरिरायचरण पर्यन्त के महानुभाव मनीषियों ने पुष्पित और पल्लवित किया है । उस भावना सिद्धान्त के अनुसार श्री गोवर्द्धनधर प्रभु का ध्येय स्वरूप सप्त स्वरूप भावनानुसार सेव्य बनता है और तत्तत्स्वरूप भावना सहित ही श्रीमदाचार्य स्वरूप भावना युक्त होकर **"रूप तत्त्रितयात्मकं"** रूप से प्रत्येक व्यक्ति की सेवा को स्वीकार करके उसे पुष्टि के उस अमृत का आस्वाद प्रदान करता है जो अन्य किसी भी प्रकार की आराधना विधा से सर्वथा अनुपलभ्य है ।

इस तरह त्रिविध स्वरूप भावना का प्रकार समझे बिना अपने स्वय के सेव्य स्वरूप का भी वास्तविक ज्ञान नहीं होता है और इसी कारण से सेवा जो अपन करते है वह श्री प्रभु को प्रिय लगने वाली और नवनवोन्मेष शालिनी न होकर गति–रति हीन और क्रियारूपा बन जाती है। अतःएव अपने सेव्य रूप में जो चित्र रूप में या स्वरूप रूप में श्री प्रभु बिराजते है, उनमें सप्त स्वरूपों में से जो भी सेव्य करने की भावना का स्थापन किया गया हो वही स्वरूप भावना का ध्यान अपने अतःकरण में होना चाहिए । उदाहरण स्वरूप जैसे श्रीनाथजीके चित्र स्वरूप या कोई और स्वरूप को जब हम परंपरानुसार सेव्य करते हैं तो उस स्वरूप में ही श्रीद्वारकाधीश प्रभु की भावना का स्थापन भी होता है, तब जो सेवा की जाती है। वह श्रीद्वारकाधीश प्रभुकी सेवा रीति से ही करनी होती है ।

यही कारण होता है कि एक गृह परपरा का आग्रह

वैष्णवजन वर्षो से रखते आये हैं । सर्वत्र श्री वल्लभ का बिंब देखने पर भी सेव्यत्व भावना भेद से भगवद् रूप को समझे बिना और उनकी रूचि को न समझ कर की गई सेवा प्रायः फल पर्यंत अवस्था में नहीं पहुँचती और कभीकभी तो श्रीप्रभुको श्रमदेने वाली भी बनजाती है । अतः स्पष्ट हो जाता है कि गृहपरंपरा का विरोध करनेवाले लोग स्वार्थवश या अज्ञानवश ही वैसा करते हैं । वैसे अज्ञान तो आज स्वरूप भावना स्थापन कर सेव्य करने की प्रक्रिया में भी है । श्री प्रभुचरणोदित श्रीपुरुषोत्तम प्रतिष्ठा प्रकारान्तर्गत भाव क्रम के अनुसार गुरुमुखोदित मार्ग से सेव्य करना भी विस्मृत हो गया है । केवल चरण स्पर्श मात्र की व्यक्त क्रिया ही देख लोग उसे ही स्थापन प्रकार मान बैठते हैं । अस्तु ,

इस तरह यह स्पष्ट है कि सेव्य किये हुए अर्थात् स्वरूप–त्रितयभाव युक्त श्रीप्रभु के विग्रह की सेवा पुष्टि का मूल तात्विक सिद्धान्त है । मर्यादा या मर्यादामिश्रपुष्टि प्रकार की सेवा ही उक्त त्रिविध भाव से न्यून होने पर भी पुरुषोत्तमत्व की प्रतीति में संभव हो सकती है । और जहाँ पुरूषोत्तम भावके स्थान पर अक्षरात्मक गुणभाव ही वही प्रवाह मर्यादा या प्रवाह पुष्टि का प्रकार जाना जाता है । इसके अनेक सूक्ष्म भावों का विश्लेषण यदि किया जाय तो लेख का विस्तार हो जाने के कारण सूक्ष्म शब्दों में ही श्रीहरिरायचरण निर्दिष्ट मार्ग से श्रीवल्लभ के हार्द को समझाने का प्रयत्न किया है । वैसे रसेश रासेश्वर के व्रजभक्त गणो के तापात्मक भाव से भावित स्वरूप की भावना लेखिनी से व्यक्त हो भी नहीं सकती ।

प्रकृतमनुसरामः :— वैष्णव होने के बाद नामात्मक और रूपात्मक स्वरूप की सेवा अपने कर्त्तव्य के रूप में प्राप्त होती है, तब व्यक्ति अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार सेवार्थ पुर्वोक्त आठ प्रकार के स्वरूपों में से यथा योग्य स्वरूप गुरू से आज्ञा लेकर पधराता है । उसमें शुरुवात में जब व्यक्ति को सेवा श्रृंगार सामग्री आदि का मार्ग रीति अनुसार ज्ञान नहीं होता है, तब केवल चित्र स्वरूप पधराते हैं और केवल मिश्री भोग से सेवा प्रारंभ की जाती है । श्री प्रभु के सुन्दर और मन मोहक स्वरूप से उनका ध्यान करने में भी चित्त को सहूलियत होती है । फिर धीरे धीरे वैष्णर्व जनो के सम्पर्क और गुरुघर के सेव्य स्वरूप की सेवा का दर्शन, मनन और अनुसंधान होने पर गौर स्वरूपों में से कोई स्वरूप या युगल स्वरूप पधराकर सेवा श्रृंगार भोगराग के क्रम को बढाया जाता है । तदनतर श्याम स्वरूप की सेवा करने का या अंगराग संवलित स्वरूप की सेवा का क्रम लिया जाता है ।

इसे यों भी कह सकते हैं कि प्रायः प्रेम की प्रारंभिक अवस्था के दृढ होने के लिये चित्रसेवा, आसक्ति की अवस्था प्राप्त होने के लिये गौर स्वरूप सेवा और व्यसन दशा की उत्कटता प्राप्ति के हेतु श्याम स्वरूप की सेवा की आज्ञा गुरूदेव प्रदान करते हैं । जीव की भावदशा की उत्कटता ही स्वरूप सेवा के उक्त प्रकार को आगे बढा कर भक्ति की उस चरमसीमा की और ले जाती है जो प्रेमा भक्ति या वदनाश्रयाभक्ति का फलात्मक स्वरूप मानी जाती है ।

जो लोग चित्र सेवा करते हैं वो जीवन पर्यन्त चित्र

सेवा ही करते हैं और उन्हें ही श्रृंगारादि कर मन के उस भाव को व्यक्त करना चाहते हैं जो वात्सल्यपूर्ण माता यशोदा के भाव का हैं । परन्तु स्वरूप – गौर या श्याम पधराये बिना उस श्रृंगार–वस्त्रादि का चित्र स्वरूप पर विपरीत असर प्रतीत होता है और चित्र के दर्शन ही नहीं होते । ऐसी दशा में मन की एकाग्रता को बांधने वाला जो श्रीप्रभु का सुन्दर रूप है वह तिरोहित हो जाता है और मन भटकने लगता है, स्थिरता समाप्त हो जाती है । अतएव समझने की बात यह है कि चित्र सेवा शुरुआत में करनी चाहिये और जब मार्ग रीतिका ज्ञान हो और श्रृंगारादि की इच्छा हो तब स्वरूप सेवा पधरानी चाहिये । इस तरह की गतिशीलता सेवा में होने से आगे बढा जा सकता है और एक ही स्थान पर रूके रह कर हाथ पैर चलाने से तो केवल व्यायाम रूप क्रिया होती है, सेवा रुक जाती है । सेवा को गति दें तो मन की स्थिरता स्वतः बन जायगी । तथा भगवत् अनुभूति भी होने लगेगी । इस तरह चित्र सेवा करने वाले भगवदीय जन श्री प्रभु की स्वरूप सेवा में आगे बढ कर चित्त को एकाग्र कर सेवा करें । यही सेवा साधन रूपा है, इसे ही **"चेतस्तत्प्रवणं सेवा"** के रूप में समझाया गया है । जीव की स्वतः थोड़ी सी भी भगवद् अभिमुख रूचि उसके दैवी होने का प्रमाण तो बन जाती है पर उसके बाद सेवा मार्ग में आगे बढने के लिए थोड़ा प्रयत्न जरूरी हो जाता है ।

इस प्रयत्न को वैष्णवयोग कहा गया है । क्योंकि योग को चित्तवृत्ति का निरोध कहा गया है, और अपनी चित्तवृत्ति का भगवान् में निरोध करने के लिये ही श्रीमदाचार्यचरणने ये

साधनरूप सेवा का विधान किया है । थोड़े समय अपने लोग यदि प्रयत्नपूर्वक मन का निवेश सेवा मे कर चित्तवृत्ति को भगवदभिमुख बना लेते हैं तो फिर मन को अभ्यास होने लगता है और स्वतः उनका केन्द्रीयकरण सेवा मे होने लगता है, तथा धीरे धीरे मानसी सेवा की सिद्धि पर्यंत पहुँचा जा सकता है । जैसा कि कहा गया हैं "तत्सिद्धये तनुवित्तजा" इसे इस तरह समझना चाहिये कि देह और द्रव्य अथवा मैं और मेरा, इसका विनियोग जब भगवदर्थ करते हैं तो उससे मन की नियंत्रित एकतानता को लाभ होता है ।

अथवा कायिक सेवा जैसे सोहनी, मंदिर वस्त्र, जलसेवा आदि करने से देहशुद्धि और अहंकार निवृत्तिपूर्वक सेवोपयोगी नूतन देह प्राप्तिवत् फल प्राप्त होता है । वित्तजासेवा - अपने पास यथोपलब्ध साधनो का भगवत् प्रीत्यर्थ उपयोग करना । उत्तमोत्तम, नूतन वस्त्राभरणादि सभी सोवोपयोगी साधनो का भगवत्प्रीत्यर्थ उपयोग, श्रीमद्भागवत् एकादशस्कंध में श्री प्रभुकी उक्ति - 'ममपर्वानुमोदनम्' के रूप में विभिन्न मनोरथों के रूप मे इनका उपयोग वित्तजा सेवा का अर्थ होता है । तनुजा और वित्तजा सेवा का अर्थ यहीं समझना चाहिये । इन शब्दार्थो के भ्रामक उपयोग से भ्रमित नहीं होना चाहिए ।

वित्तजा का प्रकार और भी विचारा जाय तो जिस प्रकार व्यक्ति अपने लिये आधुनिक युग के यांत्रिक साधनो का उपयोग- पंखा, फ्रीज़, एयरकन्डीशनर आदि के रूप में करते है, उसी प्रकार इन उत्तम उपलब्धियों का उपयोग भगवत् प्रीत्यर्थ करने का विचार क्यो नहीं आता है ? भगवदालयो मे प्राचीन युगोचित और संप्रति अव्यवहार्य प्रणालियो का आग्रह रख कर केवल खस की टाटी और छिड़काव का ही उपयोग करते है । उसमें टाटियों पर जल छिड़कने वाले व्यक्ति के अभाव मे सूखी खस शीतलता प्रदान करने में जैसे असमर्थ होती है वैसे ही वित्तशाठ्य से भगवत्सुख के विचार से रहित उक्त प्रकार की सेवा भी केवल क्रिया मात्र रहती हैं । और उसी में यदि उचित साधन संपत्ति का उपयोग कर तत्सुख विचार युक्त वित्तजा और तनुजा सेवा मानसी सेवा पर्यन्त की सिद्धि अवश्य ही प्रदान करती हैं । **"यथा देहे तथा देवे"** का विचार मन से दूर हो जाने के कारण सेवा में से सेवाशब्द का वास्तविक तत्त्व तिरोहित हो जाता है और वह क्रिया न तो पूजा ही रहती है और न सेवा बन पाती है । सेवा वही होती है जो वात्सल्य और प्रेम युक्त भाव से भगवत्सुखका विचारकर चित्त लगा कर की जाती है । **"चेतस्तत्प्रवणं सेवा"** से पूर्वोक्त क्रम से इसे समझाना चाहिये ।

यह भाव तनुजा और वित्तजा सेवा द्वारा मानसी सेवा की प्राप्ति में उसी तरह सहायक है जैसा कहा जाता है - **"हेतु मृदम्बु सम्बुद्धा बीजमाला लतामिव"** अर्थात् जैसे बीजमाला मिट्टी और पानी के सहयोग से लता को पुष्पित और पल्लवित बनाने में कारण होती है । उसी तरह भगवदीय जनों का वात्सल्य और प्रेम भावरूप बीज इस मिट्टी (तनुजा) और पानी (वित्तजा) के सहयोग से मानसी सेवा रूपी लताको पल्लवितकर फलवती बना देता है ।

भगवत्सेवा की पद्धति श्रीमहाप्रभुजी ने एक ही प्रकार की समझायी है । जिसमें सेवक स्व सामर्थ्य और अनुकूलता का विचार कर गुरूआज्ञा से बहुत सूक्ष्म प्रकार से भी कर सकता है और राज वैभव से भी कर सकता है । श्री गोवर्द्धनधरण का अन्नकूटोत्सव सवामण से लेकर सवासोमण चावलसे करके इसे समझाया है । फिर सेवा के इस प्रकार को श्री गोपीनाथजी और श्री गुसांईजी ने विस्तृत रूप से समझाया है । जिसमे ऋतु का विचार, समय का विचार आरोग्यशास्त्र का विचार, धर्मशास्त्र का विचार, और सबसे अधिक भगवत्सुख का विचार करके सम्पूर्ण कलाओ का उपयोग करते हुए सेवा पद्धति का निर्माण किया है ।

श्री गुसांइजी द्वारा सप्त गृहों के रूप में जब पृथक् पृथक् सब लालजीओं को सेव्य स्वरूप पधाराये, तदनन्तर उन महानुभावों को और उनके वंशधर महानुभावों को यथासमय उन स्वरूपों ने जैसे स्वअभिलषित प्रकार के संकेतानुभव दिये उन्हें यथावत् ग्रहण कर स्वीकारने से सेवा की सात रीतियाँ बन गयी ।

सातो घरों की रीतियो में जो फर्क है वह उन स्वरूपों की इच्छानुसार का है । अष्टस्वरूपों में से श्री गोवर्द्धनधर को ध्येय स्वरूप मान कर उनकी सेवा मुख्यतः तिलकायत भी अपने सेव्य श्री नवनीतप्रियलालजी की रीति से करते है तथा अन्य घरो के गोस्वामीबालक जब श्रृंगारी होते है तो स्वगृह की सेवा रीति से उनकी सेवा करते हैं । इनके अतिरिक्त मुख्यतः सेवारीति (१) श्रीनवनीतप्रियलालजीकी, (२) श्री मथुराधीशजी की, (३) श्रीविठ्ठलनाथजी की, (४) श्रीद्वारकाधीशजीकी, (५) श्री गोकुलनाथजीकी, (६) श्रीगोकुलचन्द्रमाजी की और (७) श्री मदनमोहनलालजी की ही मुख्य हैं । इन्हीं सात सेवारीतियों से श्री गोवर्धनधर प्रभु की सेवा होती है अन्य सब गोस्वामी बालकों के घरमें इन्हीं रीतियों में से किसी रीति को स्वीकारा गया है । तथा च इन्हीं सेवा रीतियों में स्वसेव्य स्वरूप द्वारा प्रदत्त संकेतों से यत्किंचित् परिवर्तन भी किया है । परन्तु मूलतः इन सात पद्धतियों में ही और सबका समावेश है । क्योंकि अन्य सब स्वरूपों में भी इन्हीं सप्त रूपों का भाव है जो निकुंजनायक के ध्येय स्वरूप से संयुक्त होकर **"वस्तुतः कृष्ण एव"** के त्रितयात्माकरूप में सर्वत्र विराजकर निजजनो को आनन्द दान करते हैं ।

श्री द्वारकेश प्रभु की सेवा रीति का प्रकाशन इस बात को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि हर प्रकार की सेवा करने वाला उससे मार्गदर्शन प्राप्त कर सके । विशदविस्तार से रीति का संकलन कनिष्ठ भ्राता श्री त्रिलोकीभूषणजी कर रहे हैं परन्तु सामान्य जनोपयोगमें यथाशक्य लाभकारक बन सके इस हेतु यह लघु प्रकाशन गुजराती माध्यम से किया जा रहा है । इसमें चित्र सेवा का सामान्य क्रम करने वाले भी वस्त्र, श्रृंगार, पदभाव का अनुभव और प्रशिक्षण ग्रहणकर सकते है, और स्वरूप सेवा का आनन्द लेने वाले भगवदीय जन भी **"सेवारीति प्रीति ब्रजजन की"** भावानुभूति कर सकते हैं ।

इसमें रीति के श्रंगारादि के अलावा सामान्य दिनों के श्रृंगारो का वस्त्रों का संयोजन किया है । जो वस्तुतः लेख का

नहीं है । और उसमें यथारूचि या पदकीर्तनो मे उल्लिखित अनेक भाव-श्रृंगारो का परिवर्तन किया जा सकता है। सामान्य जन अनुभव बिना कोई श्रृंगार की न्यूनता महसूस न करे इससे उन दिनों में भी यथा रूचि श्रृंगार लिखे गये हैं । इस का उद्देश्य यही है कि अधिक से अधिक वैष्णवजन भगवत्सेवा करके अपने कर्तव्य का पालन कर श्री प्रभु के अनुग्रह भाजन बनें ।

सेवा रीति संबंधी भाव और विचार शुद्ध भाव से सिद्धान्तानुसार व्यक्त किये हैं । उन्हें उसी शुद्ध भाव से वैष्णव जन ग्रहण करें, यही अभिलाषा है ।

"सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः"
॥ इति शुभम् ॥
॥ स्वस्ति कल्याणमस्तु ॥

श्रा. कृ. ८ संवत २०४१
बेठक मंदिर केवडा बाग,
मदनझांपा, वडोदरा - १.

गो. श्री. व्रजेशकुमारजी महाराज
तृतीय गृह पीठाधीश.

* * *

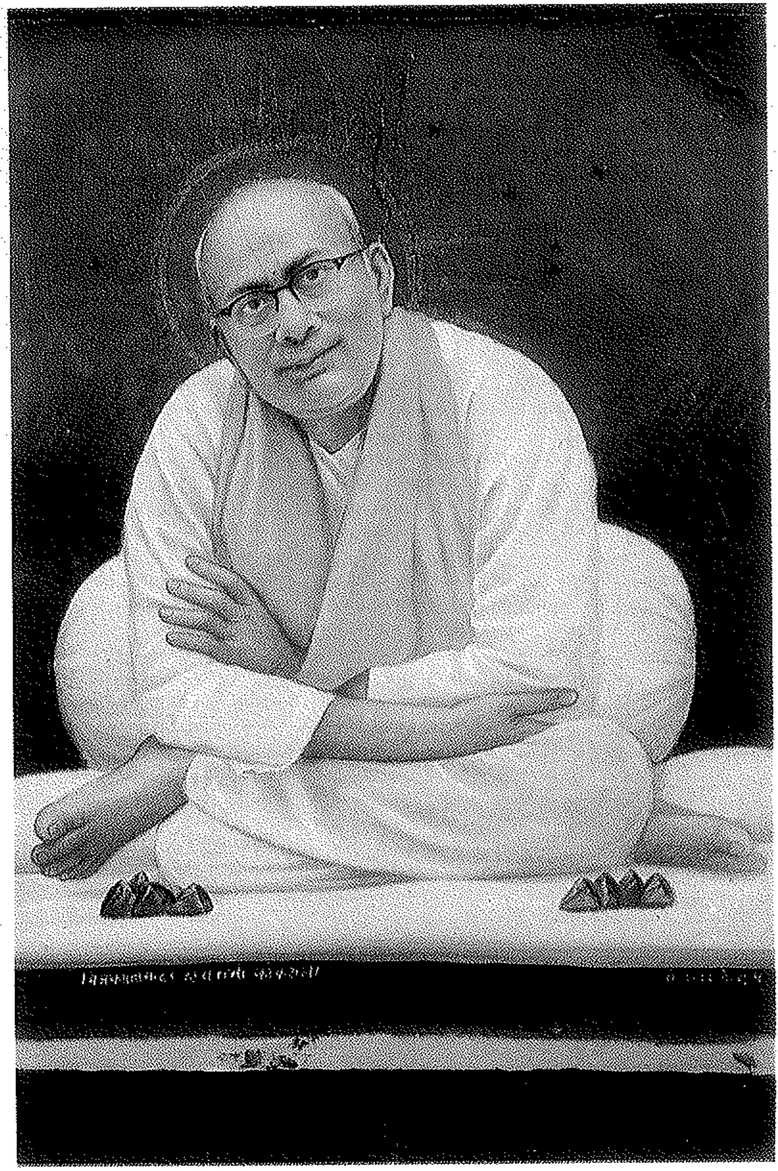

परिशिष्ट–अ

पुष्टिमार्गीय सेवा–कीर्तन–पद्धति
का
भावनात्मक व्यावहारिक स्वरूप

(नि.लि. गोस्वामी १०८ श्री ब्रजभूषणलालजी महाराज–काकरोली

श्रीजन्माष्टमी महोत्सव (भा. कृ. ८)

वधाई—

पुष्टिमार्गीय सेवा–पद्धति की परंपरा में श्रीजन्माष्टमी और नन्द महोत्सव का सर्वातिशय प्राधान्य है । यों तो पुष्टिमार्ग उत्सव–बहुल और उत्सव–प्रधान साधन, फल स्वरूप है, और क्यों न हो? जब इसके आराध्य परमश्रेष्ठ स्वानन्दतुन्दिल रसरूप नन्दनन्दन भगवान श्रीकृष्ण है, "न तत्र शोको न जरा न मृत्यु:" का सन्देहवाहक पथ जीवन के सर्वतोमुखी विकास का राजमार्ग है, जहां "धावन्निमील्य वा नेत्रे न स्खलेन्न पतेदिह" का प्रतिपद कलरव कर्णकुहरो को पावन करता रहता है, सावधानता की पराकाष्ठा निःसाधनता मे परिवर्तित हो जाती है । और क्यों न हो? जब स्वयं रसनिधि परात्पर परमात्मा भक्तपरवश ही बडभागी नन्दयशोदा के द्वारा नन्दांगण मे मनोरथ के मंजुल पालने में झूलने आगया हो, और इसीलिये तो सूर की वाणी गा उठती है —

(बिलावल)

पालनै गोपाल झुलावै ।
सुर नर देव कोटि तैंतीसौ कौतुक अम्बर छावै, ॥
जाकौ अंत न ब्रह्मा जाने सिव सनकादि न पावै ।
सो अव देखौ नन्द जसोदा हरषि-हरषि हुलरावै ॥

हुलसत हँसत, करत किलकारी, मन-अभिलाष बढ़ावै ।
"सूर" स्याम भक्तन हित कारन नाना भेप वनावै ॥
सुर सा. ६६३ ॥

इसी मंगलमय दिवस से पुष्टिमार्गीय वर्पोत्सवों का प्रारंभ होता है । आजका दिन तो गणना का आरंभ हैं, यहां तो नित्य उत्सव नित्य मंगल है, सो बधाई आज से एक महिना चार दिन पूर्व (भा. कृ. ४) से ही वैठ जाती है, वन-उपवन, सरोवर, नदी-तडाग, लताप्रतान वृक्ष शैल-शिखर पल्लवित, कुसुमित, कलरव कूजित हो हर्ष की हरीतिमा लेकर झूमने लग जाते हैं, आधिभौतिक जगत भी वर्षाकालीन माध्यमिक पूर्णता का आवरण, आभूषण, वेष-भूषा धारण कर उस मंगलमय घडी की एकटक वाट जोहता है, जिसकी प्रशंसा वीतरागी शुकमुनि के मुख से सहज ही निकल पड़ती है, वे गाने लगते है —

"अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः,
यर्ह्येवाजन-जन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम् ।
दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडु-गणोदयम्,
मही मंगलभूयिष्ठा पुरग्रामव्रजाकरा" ॥ आदि
(भा १०,३,१ से ८॥ श्लोक ।)

आनन्दमय बधाई बैठने के साथ ही मंगलमय वातावरण का शनैः शनैः प्रादुर्भाव होने लगता है । बधाई के दिन से प्रत्येक दर्शन में नगाडा सहनाई वजने लगती, और भीलों की थाली मादल की मधुर ध्वनि चारो और गूंजने लगती है । प्रत्येक दर्शन में मृदंग झांझ पखावज के साथ अष्टछाप तथा अन्य भक्तों के बधाई के पद गाये जाते है, सायंकाल भोग के दर्शनों बाद मन्दिर में स्त्रियां मंगलाचार के मधुर गीत गाना प्रारंभ कर देती है, और यह क्रम जन्माष्टमी तक चलता है । इसको 'बधाई वैठना' कहाजाता है .

इस प्रकार प्राकटय दिन के पूर्व से ही हर्षपूर्ण मंगलमय वातावरण का प्रादुर्भाव हो जाता है .

शु. पुष्टिमार्गीय ज्योतिष-गणना के अनुसार आज से पांच हजार कुछ वर्ष पूर्व द्वापरयुग में सच्चिदानन्द भक्तवत्सल पूर्ण पुरुपोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ था । भाद्रपद कृष्णपक्ष ८ बुधवार रोहिणी नक्षत्र में ठीक अर्धरात्रि के समय भगवान का प्राकटय होने से आजका दिन उनका जन्म दिवस माना जाता है । धर्मशास्त्र और सेवामार्ग की पद्धति के अनुसार भक्तगण आज व्रत-उपवास रखकर अपना समग्र दिवस भगवद्ध्यान, पूजा, सेवा, हरिकीर्तन तथा भगवदवार्ता के आनन्द में व्यतीत कर प्रभु की नानाविध सेवाओं का आनन्द उठाते रहते है ।

मंगला—

* प्रातःकाल सेवा के सौकर्यानुसार आज की विशेषताओं के साथ नित्यवत् सेवाक्रम चालू होता है । मंगला के समय घंटानाद् शखनाद "त्रिसत्या वेदेवाः" इस श्रुति के अनुसार तीनवार होकर श्री प्रभु का जागरण होता है । यथावत् उपकरण साजसज्जाके साथ नित्यक्रम में सेवा प्रणाली के अनुसार फेनी मंगल भोग के साथ विसेष सामग्री आती है ।

जागने के समय झांझ पखावज से यह कीर्तन होते है :—

(१) श्रीवल्लभ ३ गुन गाऊं. (२) जय २ श्रीवल्लभ प्रभु (३) जागिये व्रजराज कुंवर. (४) छगन मगन प्यारे लाल.(५) जय २ श्रीसूरजा कलिन्द. (६) आजु वडौ दरबार देख्यो. (७) माई सोहिलरा आजु नन्द.

एक घडी समय होजाने पर भोग सरते है । भोग सरते समय 'मंगलमगल. व्रजभुवि मंगलम्.' पद गाया जाता है, औरश्रीप्रभु के नित्यश्री नित्यमंगल-रूप मंगला के दर्शन खुलते हैं ।

'उठु गुपाल प्रातकाल देखों मुख तेरो ।' पाछे गृहकाज करो नित्यनेम मेरो । (परमा. ८५) लाल को मुख देखन हौ आई (८६) आछौ नीकौ लौनो मुख भोर ही दिखाइ. (८४) की मावना और लालसा लेकर-आए हुए भक्तों को मंगला के स्वरूप की झांकी में 'नयन भरि देखो नन्दकुमार' कीर्तनके भाव में प्रभु के साक्षात्कार से आनन्द का ठिकाना नहीं रहता .

श्रीप्रभु निजमन्दिर की तिवारी में सिंहासन पर विराजमान केवल मधुर मुखारविन्द के दर्शन देते है । समस्त श्रीविग्रह पीत उपरना (सेला) से आवृत, उसके ऊपर हीरा का एक हार धारण किये होते हैं । श्रीमस्तक पर लाल पाग और कर्णयुगल में माणिक जडित कर्णाभूषण से मुखारविन्द की अनुपम छबि दर्शनीय होती है । मानो जन-मनमोहिनी कनककपिश सात्विकी माया से विश्व ब्रह्माण्ड के व्यापक ज्ञान को अन्तर्हित किये हुए, उस पर शोमित कीर्तिमयी माला के विजय द्वारा अपने असीम अनुग्रह की वृष्टि सस्मित मुखारविन्द द्वारा करते हैं । सांख्ययोग रूपी कुंडल उस दर्शन में भक्ति का अनुपद पोषण करते है "आछौ नीकौ लोनौ" वदन कमल देखकर दर्शनार्थियोके त्रिविध तापो का उपशम हो जाता है ।

दर्शन मे 'नैन भरि देखो नन्दकुमार.' यह कीर्तन होता है ।

चूनकी थाली की आरती जिसमे रंगों और चावल के छोटे २ मोतियों के द्वारा 'बलू की भांत' तथा पचीस पद्मों का चित्रण किया जाता है, और जो सर्वप्रथम श्रीभामिनी बहूजी के द्वारा सम्पन्न चित्रण-कला की प्रतिकृति है-होती है ।

दर्शन के वाद टेरा आकर भीतर पंचामृत-स्नान की तयारी होने लगती है ।

पंचामृत —

पंचामृत-स्नान के समय प्रभु के श्रीविग्रह पर अनुरागमय

---

* श्रीद्वारकाधीश प्रभु की सेवा कीर्तन-प्रणाली के अनसार यहा सेवा कीर्तन क्रम लिखा गया हे ।

लाल रेशमी धौत वस्त्र और उपरना का परिधान रहता है । आभूषणों में चरणयुगल में सुवर्णमय नूपुर–युगल, कटि में कौधनी, श्रीकंठ में कंठाभरण और श्रीहस्तो में चार कडा धारण करते हैं । इस समय केवल यही चार सुवर्णमय आभूषण श्रीअंग के संस्पर्श से स्वकीय आभा को दीप्त करते है । श्रीप्रभु सिंहासन के नीचे–जहां हरदी का चौक मडा रहता है– स्नान की विशेष चौकी पर बिराजते है, बाई ओर पंचामृत की तैयारी रहती है । सिंहासन पर गादीजी, मंगला में ओढ़े हुए पीत उपरना से आच्छदित रहती है । बडे है रजत पात्रो में पंचामृत की वस्तुए भरी रहती है । संकल्प की झारी, तिलक की थाली, सुवर्णमंडित शंख और पंचामृत के लिये बडा थाल यह सब यथास्थान सुशोभित होकर सेवा की उपयोगिता प्रदर्शित करते है ।

प्रारभ मे तिलकायित अथवा उनकी अनुपस्थिति में मुखियाजी " विष्णुर्विष्णुः ३ श्रीमदभगवतः श्रीपूर्णपुरूषोत्तमस्य." आदि उच्चारण कर आज के पंचाग का आख्यान करते हैं । श्रीप्रभु को तिलक कर पंचामृत स्नान के प्रारंभ में सामग्री में तुलसी पत्र समर्पण कर उसकी सेवापयोगिता सिद्ध करते हैं । क्रमशः दूध, दही, घृत, शर्करा और अन्त में मधु द्वारा यथेष्ट स्नान होता है । मधु के अनन्तर पुनः दुग्धस्नान बाद पांचशंख से शीतल जल–स्नान होता है । तिलकायित उत्सव के केसरी वस्त्र पहिने हुए शंख द्वारा स्नान कराते है और मुखियाजी या अन्य वल्लभ–वंशज कटोरियों के द्वारा दुग्धादि शंख में पधराते जाते हैं ।

धवलोदर शंख–धारा द्वारा समर्पित दुग्ध, दही आदि का प्रवाह श्रीअंग के साथ कुछ विलक्षण ही शोमा धारण करता रहता है । पंचामृत के समय वस्त्राभूषण और आयत श्रीविग्रह, विश्वब्रह्माण्ड की व्यापकता का प्रत्यक्ष दर्शन कराकर उस माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढ सर्वतोधिक स्नेह की समुद्भावना करता है, जो भक्तजनो को सौभाग्य से ही उपलब्ध होता है । विविध रसों का समवाय मानो चारो ओर से उमड २ कर रसनिधि में एकत्रित होता हुआ वहा से प्रवहमान होकर जगत का कल्याण करता है । मधुर अम्ल और मिष्ट रस "मधुराधिपतेरखिलं मधुरं" में अपना सर्वस्व समर्पण कर उस महान रस की उत्पत्ति करते है जिसे भाग्यशालिनी ब्रज–सीमन्तिनियों ने वेणु के द्वारा अधरसुधा के रूप में पाया था, और जो उनकी कृपा द्वारा भगवत्प्रादुर्भाव के अनन्तर पंचामृत रूप में भक्तजनो को सुलभ हो सका है * ।

रसों के इस अप्रतिहत प्रवाह में कभी दूध की अतुल धारा, सात्विक शीतलतामयी वृष्टि की अविच्छिन्न जलधारा का भान कराती है, तो कभी दधि का प्रत्यर्पण सान्द्र धनता को लिये तुषार–पात का परिज्ञान कराता है। 卐 कांचननिभ शुद्ध गोघृत स्वकीय स्निग्धता की अभिवृष्टि का द्योतक होकर स्नेह के प्राबल्य का प्रत्यक्ष कराता रहता है, इधर शर्करा का ओघ अपनी मधुरिमा के साथ प्रसरणशीलता को लिये सिकनामयी झंझावात का दर्शन कराता हैः तो मधु अपनी सहज नितान्त एकान्त मधुरिमा की स्निग्धता और अविकारिता के साथ परिपूर्णता का उदाहरण उपस्थित कर देती है, श्री विग्रह पर सृष्टि के विकृत और अविकृत दोनो परिणाम–बाद प्रत्यक्ष होते है । विविध गुणों का स्वरूप और परिणाम अपने कार्यकारण भाव में आकर संमिलित होजाता है. मानों व्यापक

---

* पारणा के समय प्रसादी पंचामृत का प्राशन जहां भौतिक देह के लिये आप्यायक है वहां आध्यात्मिक और अधिदैविकता के रूप में साक्षात्संसृष्ट होने से पारमार्थिक महोत्कर्ष का भी साधक होता है ।

卐 इसीको लक्ष्य कर एक स्थान पर कहा गया है—

"मानो वरसत भादो मास नदी घृत दूध वही" (सूर)

विश्व-ब्रह्माण्डरूप श्रीविग्रह पर प्रकृति का साहजिक सामयिक प्रवाह होते रहने पर भी वे उनके सौन्दर्य की सहज आराधना करते रहते है, वास्तव में यह पंचामृत भावुको की विविध भावना की समष्टि है, और अपनी विशेषता से दर्शनीय .

पंचामृत के दर्शन समय कीर्तन-प्रणाली के अनुसार 'व्रज भयौ महरके पूत.' यह कीर्तन गाया जाता है, विविध मनोरम वाद्य झालर घंटा शंख तुमुल ध्वनियों के साथ मानस सरोवर में आनन्द की लहरिया उठाया करते है । जै जैकार का निनाद कर्णकुहरो को पावन कर सांसारिक वातावरण की विस्मृति करा देता है ।

पंचामृत स्नान के अनन्तर प्रभु के अभ्यग में फुलेल, आंबला का उबटन तथा चन्दन, उष्णजल, अंगवस्त्र द्वारा श्रीविग्रह का श्रमापनोदन किया जाता है । सुगन्धित अत्तर समर्पण हो जानेबाद श्रृंगारपद्धति के अनुमार वस्त्राआभुषण अंगीकार कराये जाते है । श्रृंगार में आज को पृथक् विशेषता है जो पूर्ण. श्रृंगार की द्योतक होती है ।

अभ्यग के समय (१) आपुन मंगल गावै. (२) सब मिलि मंगल गावो माई. यह कीर्तन गाये जाते है ।

श्रृंगार हो जाने पर दर्शन खुलते है । श्रीप्रभु को तिलक होकर चून की दीवलाबाली आरती होती है, तिलकायित इस समय श्रीफल रुपया भेट करते है, और भगवान श्रीपूर्णपुरुपोत्तम की 'आयुष्याभिवृद्धयर्थं' आदि उच्चारण द्वारा निष्क्रय रूप गोदान का संकल्प कराया जाता है । ज्योतिषी इससमय पंचांग सुनाता है,

जिसमे भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्य की वर्ष-गणना का उल्लेख और उस दिन को ग्रहस्थिति रहती है ।

तिलक दर्शन के समय राग सारंग की आलापचारी में (१) आजु बधाई कौ दिन नीकौ (२) जसोदा रानी जायो हो सुत नीकौ. यह कीर्तन गाए जाते है ।

दर्शनबाद पीतांबर उढाकर और पुष्पमाला धराकर श्रीप्रभु के खेल होते है . खेल में चन्दन, चोवा, गुलाल, अबीर का प्रयोग होता है, जो भावना के अनुसार चार वर्ण के प्रतीक है, और लीला में चतुर्विध स्वामिनीजी के श्रीअंग की कान्ति का निदर्शन कराते है । यह पीत, श्याम, रक्त और श्वेत रूप श्रीस्वामीनी-चतुष्टय के श्रीअंग-संस्पर्श या एकीकरण माव का बोधक है ।

खेल के वाद सोने के कटोरा में केशरी दूध जिसमे आवश्यक तिल, गुड, शर्करा का संमिश्रण होता है, मार्कण्डेय-पूजा की मावना से आयुष्याभिवृद्धयर्थ भोग आता है । 'सतिल गुडसंमिश्रमञ्जल्यर्धशृतं पयः, मार्कण्डेयाद वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुः समृद्धये' यह श्लोक तीनवार वोलकर श्रीनन्दरायजी की भावना से शुभकामना की जाती है । वात्सल्य का कोमल उपयोग श्रीप्रभु के अनिष्टनिवारण की कामना से होता है ।

गोपीवल्लभ —

गोपीबल्लभ भोग में पाटिया, मीठाभात, फेनी तथा दूध यह विशेष सामग्री समर्पित होती है, भोग आने पर (१) आजु बन कोऊ वे जिनि जाइ. (२) यह सुख देखौरी तुम (३) जनम फल मानति

जसुदा. (४) झगरनि ते मोहि बहुत. (५) जसोदा नाल न छेदन देहों.– यह कीर्तन गाए ज्ञाते है ।

गोपीबल्लभ भोग सरजाने के अनन्तर नित्य क्रमानुसार श्रीप्रभु को राजभोग समर्पण किया जाता है, जिसमें आज नित्य की सामग्री के सिवाग लुचई के ठिकाने दूनी पचरंगी सामग्री, रायता नहीं–वडा की छांछ, इस प्रकार सामग्री विसेष रहती है .

राजभोग आने पर— (१) हौ व्रज मांगनो जू. (२) नंदजू मेरे मन आनंद. (३) नंदजू तिहारे सुख दुख. (४) ब्रजपति मांगिये जू.–यह ढाढी के कीर्तन होते हैं । नित्यक्रम के अनुसार राजभोग का समय ३ घडी हो जाने पर भोग सरते है . आचमन होकर बीडी समर्पी जाती है ।

राजभोग —

नित्यवत् राजभोग–दर्शन में आज उत्सव की विशेषता से खंडपाट की साजसज्जा और पिछवाई जरदोजी साज की होती है, खंडपाट पर सुवर्ण के खेल खिलौना साज सजे रहते हैं । दरवाजे पर बन्दनवार बंधते है ।

दर्शन में झांझ पखावज के साथ कीर्तन प्रणाली के अनुसार (१) आजु नन्द राइ के आनंद भयौ. – यह कीर्तन होता है । थाली की मोती की आरती–जिसमें रंगों से पूर्ववत् चित्रण रहता है, और जो सर्व प्रथम श्रीकमलावहुजी के श्रीहस्तद्वारा निर्मित आरती की प्रतिकृति है–होती है । बाहर नगारखाना में शहनाई थाली मादल पूर्ववत बजता है और दर्शनार्थी राजभोग–दर्शन कर अपना जीवन सफल करते है ।

दर्शन के बाद डोल–तिवारी के बाहर सभी लोग एकत्रित होते है जहां मुखियाजी नन्द–महोत्सव करानेवाले श्रीतिलकायित को बीडा प्रदान करते है, और तिलकायित नन्दरायजी, गोपी ग्वालों का वेश–धारण करने के निमन्त्रण स्वरूप में निर्धारित व्यक्तिओं को बीडा प्रदान कर साष्टांग दण्डवत् करते हैं । इस प्रकार नन्दमहोत्सवकी तैयारी होती है । श्रीप्रभु के अनोसर हो जाते है ।

उत्थापन —

सायंकाल १ घडी दिन रहते नित्यवत् शंखनाद आदि होकर उत्थापन के दर्शन खुलते है । उत्थापन–भोग आकर समय होने पर भोग के दर्शन खोले जाते है ।

भोग–सन्ध्या–आरती–

नित्यवत् भोग, सन्ध्या आरती के दर्शन खुलते हैं । संध्या भोग में छूटी बूंदी, बंटा जलेबी की विशेष सामग्री आरोगते हैं ।

कीर्तन–प्रणाली के अनुसार भोग के दर्शन में– (१) रानी जू जायो पूत सुलच्छन. (२) कन्हैया कब चलि है पॉइनि. यह पद तमूरा पर गाया जाता है । संध्या आरती में– (१) मेरे मन आनंद भयौ. इस पद का गायन होता है । आज भोग सन्ध्या में झांझ नही बजती ।

सन्ध्या–आरती मोती की थाली की होती है, जो–सर्वप्रथम श्रीरुकिमणी बहूजी के श्रीहस्तनिर्मित आरती की प्रतिकृति है ।

ठीक सूर्यास्त के समय पंडयाजी द्वारा समय–परिज्ञान के लिये घडी की स्थापना की जाती है, जिसके आधार पर

निशीथ-काल जाना जा सके । शयन-भोग में विशेषतया छडियाल, दाल, कढी के स्थान पर शाक होता है, पापड नहीं आते । समय पर भोग सरते है और दर्शन की तैयारी होती है ।

शयन —

शयन-दर्शन में तकिया, खंडपाट, चौपड यथावस्थित रहते है, बडे नहीं होते । चोगान नहीं आते । थाली की मोती की आरती होती है जो सर्वप्रथम श्रीजानकी बहुजी के श्रीहस्त निर्मित आरती की प्रतिकृति है । दर्शन बन्द होने और टेरा आजाने बाद शैया-मन्दिर में पेडा बिछने की सेवा होती है । जिसमें वेणु शय्या पर पधारते है ।

शयन दर्शन में-(१) मोहन नन्दरायकुमार. (२) पद्म धर्‍यो जन तापनिवारण. यह पद झांझ पखावज के साथ राग मालव के आलाप में गाए जाते है ।

इसके अनन्तर जागरण के दर्शन की तैयारी होती है ।

जागरण —

आज जन्माटमी के जागरण-दर्शन विशेष महत्व पूर्ण माने जाते है । जागरण के दर्शन वर्ष में दो बार ही खुलते है, एक जन्माष्टमी के दिन और एक प्रबोधिनी एकादशी के दिन । जिसका जन्मदिन हो उसका जागरण होता है एसी आभीर जाति की परंपरा की भावना के अनुसार* अपने जागरण में प्रभु

---

* श्री द्वारकेशजी की भावना (जन्माष्टमी)

अपने स्वरूप से ही विराजते है । मुखियाजी या तिलकायित द्वारा बाहर दरवाजे पर झाटकिया को चंवर दिये जाते है, जिन्हें भावुक भक्त दरवाजे पर खडे-खडे डुलाते रहते है । दर्शन तबतक खुले रहते है जबतक जन्म-प्रादुर्भाव-का समय सन्निकट नहीं होता ।

कीर्तन-प्रणाली के अनुसार सभी कीर्तनियां झांझ बजाते है और कीर्तन झेलकर गाते है । इस समय के पद इस प्रकार है:— (१) धनि रानी जसुमति के घर (२) गावति गोपी मृदु मधु बानी. (३) हरि को विमल जसु. (४) यह धन धर्म ही ते. (५) ऐसो पूत देवकी जायौ. (६) जनमत ही आनंद मयौ. (७) आनंद वधावनौ. (८) जन्म लियौ शुभ लग्न. (९) रंग वधावनो. (१०) आजु तो आनंद माई. (११) भादोंकी अतिरैनि अंधियारी (१२) आठें भादों की अंधि. (१३) भादों की रैयनि अंधियारी. (१४) श्रवन सुनु सजनी बाजै. (१५) रावल के गोप. (१६) जसोदे वधाइया (१८) श्रीगोपाललाल गोकुल चले ।

दर्शन खुलने पर निजमन्दिर की तिवारी के तीनों द्वारों पर मंगल बोधक विविध बन्दनवार बांधे जाते हैं । यह तीनो द्वार भगवद-दर्शन के तीन मार्ग का बोध कराते है, जहा से यथायोग्य अधिकारी स्वकीय भावना-कामना-के अनुसार प्रभु का साक्षात्कार करते हैं, बन्दनवारों से सजावट इनकी सफलता का ज्ञान कराती है, सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी सभी प्रकार के भक्त समय पर भगवत्प्रादुर्भाव की कामना लिये लालायित खडे प्रतीक्षा करते है । पहिली वन्दनवार खजूर के पत्रों की होती है जो-स्वकीय सात्विक

भावना से श्वेतता का, दूसरी बन्दनवार पुष्पो की होती है जो राजसिक विचित्रता का और तीसरी बन्दनबार काष्ठ के खिलोनो–झूमरो–की होती है, जो अपनी तमोगुणमयी जडता के साथ प्रभु के विनोदरूप होती है । निजमन्दिर की तिवारी चारो और कारचोबी दिवालगीरी, चंदुवा, पिछवाई आदि से सजी होती है, जहां उज्ज्वल प्रकाश झिलरमिलर होकर रत्नमय निजगोलोकधाम के सौन्दर्य का निरीक्षण कराता है । दिव्य वैकुण्ठधाम की शोभा लक्ष्मी–निवास के साथ यहां मूर्तिमान होकर नाचने लगती है ।

जागरण के दर्शनो में ही कुछ समयबाद दही की उस बडी नाद का पूजन होता है जिसमें–नन्दमहोत्सव के लिये दही भराजाने वाला है । इसको 'गोल की पूजा' कहते है । इस समय नन्दमहोत्सव वाले चौक में चारो ओर आम्रपल्लव के बन्दनवार बांधे जाते और चारों कोनों में बडे–बडे दर्पण बांध कर उनके आगे ऊपर चारचार ताम्रकलश रक्खे जाते हैं, जिनमें नारियल स्थापित होते है, कलशस्थापना से विशाल चौक की प्रभु–क्रीडांगण की उपयोगिता में चार चांद लग जाते हैं । निर्धारित समय तक श्रीप्रभु विराजमान रहकर दर्शन देते रहते है और ब्रजजन उनकी वैमवमयी लीला का दर्शन करते हुए, आलस्य प्रमाद निद्रा का त्याग कर बडी कुतूहलता में उस शुभ घडी की प्रतीक्षा करते है–जिसमें साक्षात प्राकटच लेकर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण ने उनके उद्धारार्थ अनुग्रह–मार्ग प्रशस्त किया था ।

जागरण के दर्शन में आरती नहीं होती । जन्म–समय से आधी घडी पूर्व जागरण के दर्शन बन्द होकर टेरा आजाता है । भीतर शय्या मंदिर से वेणु पधराकर खंडपाट साज उठाकर

जन्म–सामयिक पंचामृत की तैयारी की जाती है ।

सिंहासन के आगे हरदी का सुरम्य अष्टदलात्मक चौक मांडकर रजत थाल में छोटी सी चौकी पर शालिग्रामजी विराजमान किये जाते है । समीप में पंचामृत तथा स्नान का सभी साहित्य सजा होता है । श्रीप्रभु की माला बडी होती है :— मानों विशद कीर्ति श्रीवैकुण्ठाधाम से चलकर प्रादुर्भाव के पूर्व भूतल पर विस्तृत होजाना चाहती है । टेरा लगाकर बाहर तिलकायत, मुखिया, भितरिया सभी खडे होकर ठीक निशीथ–समय* की प्रतीक्षा करते रहते है ।

जन्म–समय —

जन्म के समय तिलकायित स्वयं हाथ में घंटा लेकर बाहर खडे होते है और श्रीमागवत के जन्म–प्रकरण द. स्कं. ३ अ के १ से ८॥ श्लोकों का तीन वार पाठ करते हैं जोः— "अथ सर्व गुणोपेतः कालः परमशोमनः" से लेकर "आविरासीद् यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः" तक समाप्त होते हैं ।

---

* महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य ने सुबोधिनी (जन्म प्रकरण दशम स्कन्ध) में भगवत्प्रादुर्भाव के समय का निर्णय दिया है । जिसके हिसाब से श्रीजन्माष्टमी के ब्रत–उत्सव का निर्णय होता है । श्रीप्रभुचरण श्रीगुसांइजी तथा श्रीपुरुषोत्तमजी आदि अन्य आचार्य वंशज विद्वानो तथा शु. साम्प्रदायिक पंडितो ने इस पर पर्याप्त विचार कर, छोटे मोटे कई ग्रन्थ लिखे है, तात्पर्य यह कि जन्माष्टमी के प्रादुर्भाव समय और व्रतोत्सव का जितना महत्व है उतना ही उसके काल निर्णय का ।

श्लोको की तीन आवृत्ति पूर्ण होते ही घंटानाद होने लगता है । तिलकायित भगवदीय सूरदास के पद "ब्रज मयौ महर के पूत जब यह बात सुनी" यह तुक गाते हुए टेरा खोलते है, आनन्दमय श्रीप्रभु के प्राकट्य का यही समय है, सो बाहर देव, नर, गन्धर्व, किन्नर, कीर्तनिया, अष्टछाप के आठ सखाओं के रूप में सम्मिलित होकर घंटानाद के साथ ही "ब्रज भयौ महर के पूत." आदि कीर्तन का गान करने लगते है । झांझ, पखावज, झालर, शंख, भेरी, दुन्दुभी, नगाडा आदि विविध मंगल बाद्यों की सुमधुर तुमुल ध्वनि होने लगती है ।

निशीथ के पंचामृतस्नान —

पंचामृत के दर्शन खुलते ही दर्शनोत्कण्ठित भक्तों के मुख से जयजय नाद का कलरव गूंज उठता है । तिलकायित श्रीशालिग्राम-स्वरूप को पंचामृतस्नान की तयारी करते है । श्रीमहाप्रभु को प्रणाम कर देशकाल कार्य-बोधक विष्णुः. ३ आदि संकल्प भगवान श्रीपुरुपोत्तम के प्रादुर्भावोत्सवार्थ पंचामृतस्नान का बोला जाता है । तुलसीदल को चन्दन में संश्लिष्ट कर श्रीप्रभु के चरणारबिन्दो में और इसी प्रकार श्रीशालिग्रामजी पर समर्पित किया जाता है ।

पंचामृत के समय 'ब्रज भयौ महर के पूत.' यह पद गाया जाता है । श्रीशालिग्रामजी को पूर्व निर्दिष्ट क्रम से-दूध, दही, घृत, शर्करा और मधु से-स्नान होता है, मधु के अनन्तर शीतल जल और केवल चन्दन से अभ्यग होकर शुद्ध स्नान के बाद उन्हें पीताम्बर

परिवेष्टित कर प्रभु के सानिध्य में (पार्श्व में) बिराजमानकर किया जाता है ।

दर्शन बंद हो जाने पर भीतर श्रीप्रभु को पीताबर तथा पुष्पमाला अगीकार कराई जाती है, जो आज के दिन विशेष रूपमें जूही की गुथी होती है चार जयन्तियो में चार प्रकार की विशेष पुष्पमालाए धारण कराने की परिपाटी है, यूथिका की माला श्रीस्वामिनीजी के चतुर्विध यूथ-भावना का प्रतीक है । श्रीस्वामिनीजी की भावना से चन्दन, चोवा, गुलाल, अबीर से खेल होता है श्रम के निवारणार्थ शीतल सामग्री का विशेष भोग आकर तत्काल ही महाभोग की तैयारी होने लगती है ।

महोत्सव के विशेष रूप में होने के कारण आज सर्वविध सामग्री का बाहुल्य रहता है, जिससे प्रायः सभी स्थान भर जाता है । इस समय प्रभु तिवारी में ही सिंहासन पर विराजमान हो महाभोग आरोगते है । सेवा-प्रणाली के अनुसार, (१) सखडी (२) अनसखडी, (३) दूधघर और (४) भंडार की अनेकविध सामग्री आरोगते है । महाभोग आजाने बाद धूप, दीप, तुलसी, शंखोदक होकर मंदिर में बंदोबस्त हो जाते है । प्रातःकाल और जन्म-समय के दोनों पंचामृत संमिलित कर सर्वसाधरण को वितरण किया जाता है, वैष्णव जनता भक्ति-भावना से उसे प्राप्त कर अहोभाग्य समझती है, और अपने ब्रतोपवास की पारणा करती है ।

छठ्ठी पूजन —

श्रीकृष्णावतार के अवसर पर छठवे दिन पूतना - उद्धार -

प्रसंग आजाने से भगवान की आरोग्यकामना के लिये छट्ठी...... षष्ठिका देवी...... का पूजन नहीं हो सका था, अतः महाभोग आजाने बाद उसका उपक्रम होता है ।

छट्ठी की तिवारी में पवित्रा एकादशी से ही छट्ठी मांडी जाती है, जो किसी भित्तिपर पश्चिममुख होती है । प्रायः अधिकांश महिलाएं ही इसको चित्रित करती है । विविध पल्लवों के हरे रंग और अनेक प्रकार के रंगो–उपकरणों से यह बडे सुन्दर ढंग से सावधानता पूर्वक तैयार की जाती है । चांवल के एपन में हरदी का पीला रग मिला कर यह लिखी जाती है । सूर्य चन्द्र, स्वस्तिक, कलश, लताप्रतान पुष्प कमल शंख चक्र गदा, दोहिनी मथानी पलना, वंशी और विविध वाद्य तथा गौ, हाथी घोडा खेल खिलौना छत्र चमर विविध चित्रों से इसे मंडित किया जाकर वीचमें षष्ठिका देवी का नियत–चतुष्कोण स्थान में पूजन होता है । तिलकायित अथवा उनकी अनुपस्थिति में मुखियाजी श्रीनन्दकुमार की सर्वबाधा–निराकरणार्थ मगलकामना से पूजन का संकल्प करते है । छट्ठी–पूजन के कीर्तन गाये जाते है सौभाग्यवती स्त्रियां पूजन के गीत गाती है । धूप दीप नैवेद्य आदि षोडशोपचार पूजा के द्वारा श्रीप्रभु की मगल–कामना की जाती है, और षष्ठिका देवी के स्थान पर घृत से "वसोर्धारा" की विषम रेखाए चित्रित करते है । पूजन के स्थान पर श्रीगोपालनन्दन की वेणु, श्रीनन्दरायजी की यष्टिका, माया शक्ति–भगवत्स्वसा–की प्रतिरूप तलवार और माता यशोदा की मधुर वात्सल्य–भावना की मूर्ति मथानी स्थापित कर इन सबका आधिदैविक रूप में स्मरण पूजन किया जाता है । आरती दक्षिणा मन्त्राक्षता होकर सभा विसर्जन होती है ।

पूजन के समय (१) आजु छठी जसुमति के सुत की. (२) मगल घोस छठी को आयो. यह कीर्तन गाये जाते है ।

महाभोग के दर्शन—

महाभोग का समय (६ घडी) होजाने पर भोग सरने, आचमन और बीडी आरोगने के बाद केवल सिंहासन पर विराजमान प्रभु की थाली की आरती होती है, यह आरती सर्व प्रशम श्रीअक्काजी के श्रीहस्तकी निर्मित आरती की प्रतिकृति होती है ।

इस समय यह फीर्तन गाया जाता है :—

राग रामकली :

लालन हौं वारी तेरे या मुख पर,
मेरी दृष्टि लगौ जिनि माई मसि–बिन्दुका दियौ भ्रुव–ऊपर,
सरवसु मैं पहिले ही दीन्हौं दँतिया नन्हीं नन्हीं दू–पर;
अब कहा नोछावर करौं 'सूर' सुनि ललित त्रिभंगी–ऊपर.

सो सच है तो है–अभी तो माता देवकी, की प्रार्थना पर 'बभूव प्राकृतः शिशुः' होकर श्रीगोकुल में पधारकर प्राकृतिक बाल–लोललीला करने लगे है । अपार बाल–सौन्दर्य का पार माता यशोदा को नहीं मिलता, दर्शनार्थी ब्रज़भक्तो की दृष्टि इस रूप महा–सिन्धु में एक अल्प बिन्दु हो रही है ?

पलना की तयारी—

महाभोग, दर्शन बाद पलना की तयारी होती है, सुखी हलदी के

चौक पर चना के दाल की खिचडी, हलदी की गांठ रखकर सुन्दर रेशमी आसन पर सुवर्णका पालना स्थापित कर उसके आसपास झारी, बंटा, बीडा चन्दन की बर्णी कुंजा पडगी पद्धति अनुसार थाल में भोग, खेल–खिलौना आदि यथास्थान सब साज सजाया जाता है ।

बाहर नन्दमहोत्सव के लिये चौक कि मध्य में मुपाडी स्थापन कर गन्धाक्षत पुष्प आदि पंचोपचार पूजा से नन्दांगण की भावना से उसे अलंकृत किया जाता है । अक्षर ब्रह्म जो–साक्षात् लीला के लिये ब्रज में इस रूप में अब अवतीर्ण हुआ है ? क्यों न हो? अपनी वास्तविक धामरूपता के फलस्वरूप उसे आज नन्दमहोत्सव की दर्शनीय बाललीला का कोटि कल्पो में पहिलीबार परम सुख मिलनेवाला है ।

वेश–धारण —

परम सौभाग्य की महानिधि श्रीमती यशोदा के ललना के पलना झूलने की इधर तयारी होती है, उधर श्रीनन्द, यशोदा, गोपीग्वाल के वेश–धारण का कार्य चलता रहता है । अन्तः पुर में श्रीयशोदाजी का वेश–धारण होता है । कोई गोस्वामि बालक श्रीयशोदाजी का वेश–धारण करते हैं* इनके लिये वस्त्राभूषण सब श्रीभडार से और बहूबेटियो के उपस्थित होते है . चातुर्य और सौन्दर्य–प्रसाधना की परिकल्पना से माता यशोदाजी को नव

---

* श्रीयशोदाजी के वेश के लिये कोई वल्लभवशज बालक न हो तो भगवत्सेवाधिकारी सचीहर जाति का कोई यज्ञोपवीती ब्रह्मचारी बालक लिया जाता है ।

सत–षोडश नखशिख–श्रृंगार धारण कराया जाता हैं, इस समय सुवासिनी स्त्रियां मंगलगीत गान करती है ।

इसके साथ गोपीग्वालों और श्रीनन्दरायजी का वेश गादीजी के चौक में धारणकिया जाता है । मन्दिर के बडे मुखिया श्रीनन्दरायजी और जिन्हें गत दिवस बीडा प्रदान किया गया था— गोपीग्वालों का भेष धारण करते हैं, ग्वाल और गोपी चार–चार होते हैं । गोपियां व्रज का वेश साडी, लंहगा, चोली काजर टीकी चूडी, महावर आदि, और गोप मल्लकच्छ उपरना और ग्वालो की विसेष टोपी धारण करते है, श्रीगोपियों के हाथ में कांसेकी थाली में पूजन–सामग्री के साथ एकएक श्रीफल और भेट का द्रव्य होता है । गोपों के कन्धों पर मटुकियों में दूधदही भरी कांवड होती है ।

श्रीनन्दरायजी वृद्धावस्था के प्रतीक श्वेत धोती–उपरना पाग, कमरबन्दा डाढी–मूछ, गुंजा और तुलसी की माला धारण करते है । उनके हाथ में वेणुवेत्र रहता है । गोप व्रज की निराली छटा और सांस्कृतिक वेश से अपने वांकापन को शोभा धारण किये हुए कन्हैया के सखा बनने को उत्सुक आकुल, आस्तरण पर विराजमान प्रतीक्षा करते हैं ।

नन्दमहोत्सव करानेवाले तिलकायित केसरी धोतीवस्त्र केसरी इक्लाई बंडी, गले में तुलसी और गुंजामाला पहिने हुए नन्दमहोत्सव के समारंभ और व्यवस्था की व्यग्रता में आनन्दित दर्शन देते है ।

श्रीयशोदा का पधारना —

वेशधारण के उपक्रम के अनन्तर उधर श्रीनन्दालय में

निजमन्दिर में श्रीनन्दनन्दन पालने में विराजमान होते हैं । इस समय उपस्थित गोस्वामिबालक बहुबेटियां श्रीनन्दकुमार को विविध रंगरंगीले पीताम्बर उढाते है, जो झगला टोपी के प्रतीक होते हैं । श्रीफल के साथ भेट धरकर दंडवत करते है ।

पालना के दर्शन खुलने के पूर्व तिलकायित अन्तःपुर में जाकर प्रभु के समीप मातृ श्रीयशोमति को पधारने के लिये चार साष्टांग दण्डवत करते है । भीतर के ही मार्ग से उन्हे आदरपूर्वक पधराते हैं । साथ में सजातीय बहूबेटियां तथा सेवकों की स्त्रियां होती है । जो मधुर कंठ से 'एक दंतन' नामक तेलंगी भाषा का पद तथा अन्य पद का गान करती चलती है ।

पलना के दर्शन के पूर्व स्वयं तिलकायित 'मंगलं मंगलं व्रजभुवि मंगलं.' तथा 'प्रेंखपर्यंकशयनं.' यह श्रीगुसांईजी रचित संस्कृत गीत गाते हैं ।

पलना के दर्शन —

श्रीप्रभु के समीप पधार कर माता यशोदा दाहिनी ओर बिछी हुई लाल गादी पर विराजमान हो श्रीहस्त से सुवर्ण के झुनझुना बजाती हुई डोरी लेकर शनैः–शनैः पालना को झुला देती है । बहू–बेटियां श्रीप्रभु को बीड़ा अरोगाना प्रारंभ करती हैं, बीडी–अरोगाना पालना की आरती तक चलता है .

इसी समय जै–जै कार कोलाहल "नन्द के आनन्द भयौ जै कन्हैयालाल की" आदि के कलरव निनाद, वधाई–पालना के

कीर्तन–गान के साथ दर्शन खुलते हैं .

नन्द–महोत्सव के दर्शन खुलने पर कीर्तनियां सारंग राग की आलाप–चारी में खड़े होकर विविध वाद्यो के साथ इस प्रकार पदों का गान करते हैं ।

१. ए हो ए आजु नन्दराई.
२. सब ग्वाल नाचै गोपी गावै.
३. आंगन नन्द के दधिकांदौ.
४. तिहारें जायौ पूत.
५. नन्द बधाई दीजे हो.
६. आजु महा मंगल महराने.
७. घर–घर ग्वाल देत है हेरी.
८. नंन्दमहोत्सव हो बड कीजे.
९. तुमजु मनावत सोइदिन आयौ और बेठकर
१०. जायो हो सुत नीको
११. सोवन फूलन फुली.
१२. चिरजीयौ गोपाल.
१३. बधाई माई आजु.
१४. मै जोगी जसु गाया.
१५. झूलौ पालने गोविन्द.
१६. अपने बालगोपाल.
१७. नन्द को लाल व्रजपालने.
१८. हालरौ हुलरावति माता.
१९. माइरी कमलनयन स्याम.
२०. फूली चाइन हुलरावे
२१. वारी मेरे लटकन पग
२२. तुम व्रजरानी के लाला

दर्शनार्थियों की अपार भीड स्त्री बाल वृद्ध नागरिक ग्राम ग्रामसे कन्हैया ही सलौनी झांकी लेने आये विचित्र वेश भूषा धारी ग्रामीण जन उमड पडते है. किसी का किसी की सुधबुधनहीं रहती । भीड–भडक्का रेलम–पेल आवा–जाई में अपार जन–समुह हो द्रष्टि गोचर होता है । ठेठ मन्दिर से लेकर नगरी की वीथी मार्ग दर्शनार्थियोंकी भीडभाड से मुखरित होजाते है.

'आजु नन्द के द्वारें मीर,' 'इक आवत कि जात विदाहै इक

ठाढे मन्दिर के तीर'. और "ब्रजमें होत कुलाहल भारी", आनंदमगन ग्वाल सब नाचत देत परस्पर तारी. 'चलो भैया नन्दराई पै जैये' आदि कीर्तनो के रूपमें साक्षात् दर्शन करनेवाले सूर और परमानन्द की वाणी गोकुल के नन्दालय में हो रहे महामहोत्सव का प्रत्यक्ष परिचय उपस्थित करती है ।

श्रीनन्दरायजी का पधारना —

पालना के दर्शन खुलजाने के अनन्तर तिलकायित कीर्तनियां और साजवाज के साथ श्रीनन्दरायजी तथा गोपीग्वालों को पधराने जाते है । गादीजी के चौक में वे श्रीनन्दस्वरूप को चार साष्टांग दंडवत और एक दंडवत गोपीग्वालों को कर पधारने की प्रार्थना करते हैं । आगे–आगे तिलकायित और अपने पुरोहित–जो महाबनियां होता है–के हाथ का सहारा लिये श्रीनन्दरायजी श्रीनन्दकुमार के सांनिध्य में पधारते हैं । जब इस समय "ए हो ए आजु नन्दराइ के आनंद" यह कीर्तन गाया जाता है, तब उससे महोत्सव का समस्त वातावरण आधिदैविक रूप में परिणत होजाता है ।

महामुनि श्रीशुक की वाणी में–गोपगण—

"विचित्रधातुबर्हस्त्रग्वस्त्रकांचन–मालिनः
महार्हवस्त्राभरणकंचुकोष्णीष भूषिताः ।
गोपाः समाययू राजन् ! नानोपायनपाणयः" ॥
(भा. द. ५/७–८)

के अनुसार परिदर्शित होते हैं । और श्रीगोपांगनाए—

"गोप्यश्चाकर्ण्य मुदिताः यशोदायाः सुतोद्भवम्,
आत्मानं भूषयांचक्रुः वस्त्राकल्पांजनादिभिः ।
नवकुकुमकिंजल्कमुखपंकजभूतयः,
बलिभिस्त्वरितं जग्मुः पृथुश्रोण्यश्चलत्कुचाः
(भा. द. ५/९–१०)

के अनुसार साक्षत्श्रीरूपिणी दर्शन देती है ।

आगे–आगे कीर्तनसमाज, बाद में तिलकायत, श्रीनन्दराय, गोपीग्वाल तथा आवश्यक परिकर मंगलमयपूजन की थाल लिये गोपललना और दूध–दही की कांवर लिये गोपग्वालो का समुदाय मूर्तिमान महोत्सव के आगमन रूप में उल्लास का वातावरण पेदा कर देता हैं . मंन्दिर में प्रभु के सन्मुख पहुंच कर नन्दरायजी बीच की तिवारी के आगे पीतपटावृत पट्टे पर विराजमान होते हैं, जहां पुण्याहवाचन मंगलस्नान नान्दीमुख संकल्प आदि के लिये झारी स्थापित रहती है । नन्दरायजी पुरोहित को तिलक करते है, श्रीनन्दराय पुरोहित के द्वारा "विष्णुः ३ (पूर्ववत्) अभिनवजात कुमार और मातापिता की नैरुज्यपूर्वक दीर्घायुष्य की कामना से गोदानांगभूत द्रव्य का संकल्प होता है ।

बालगोपाल के अभ्युदयार्थ गोदानसंकल्प के बाद गोपिकाए क्रमशः माता यशोदा को थाली की कुंकुम से टीकी करतीं, मस्तक पर दूब धरती, और प्रभु के सन्मुख नारियल के साथ चार–चार आना भेट कर दंडवत् करती हैं । तिबारी के दरवाजों पर

आसपास कुंमकुंम के मंगलसूचक थापे–स्थासक–लगाए जाते हैं । इधर ग्वाल श्रीनन्द के क्रमशः दही का तिलक कर मस्तक पर दहीं बिछडते और दूब धरते है । तिलकायित को भी दही का तिलक किया जाकर सभी की डाढी दही से रंगी जाती हैं । इस समय नन्दमहोत्सव का नाच शुरु हो जाता है । "नन्दकें दधिकांदौ. यह पद, गाया जाता है ।

दधिकांदौ —

सेवा–पद्धति के लिखित प्रमाणानुसार तिलकायित कीर्तनों के अनुरूप नन्दमहोत्सव का प्रारंभ करते है ।*

नन्द–महोत्सव के प्रारंभ में ज्यों ही 'नन्द के दधिकांदौ.' यह पद गान–प्रारंभ होता है, गोपीग्वाल–समाज नाचना प्रारंभ कर देते है । दुध, दहीं, हरदी कुंमकुंम चारों और छिरके जाने लगते है, नदी सी उमड पडती है । सभी लोग एक दूसरे के कपडों को दूध–दही की कीच में रंग देने में अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हैं, मानों पूर्ण पुरुषोत्तम के लीलामानुष–बाल–विग्रह धारण कर लेने पर जनसमाज कर्म की कीच को पैरों तले रोंध कर ज्ञान–विज्ञान से रंगे भक्ति से स्निग्ध पवित्र आनन्द में झूमते नजर आते हैं ।

'वारि–वारि पट भूषन देत.' इस गीत के गाते ही नन्दरायजी का दान प्रारंभ हो जाता है । श्रीशुक का यह कथन—

> 'नन्दो महामनास्तेभ्यो वासोऽलंकार गोधनं ।'
> सूतमागधबन्दिभ्यो येऽन्ये विद्योपजीविनः ॥ (भा. द. ५/१५)

अक्षरशः चरितार्थ दीखने लगता है । विष्णु के आरावन और स्वकीय आत्मज के अभ्युदय के लिये' इस समय वे जो न देदें कहीं कम है । इस प्रसंग पर एक व्रजकवि ने गाया था– 'नन्द कछू इतिनौ जु दियौ न बची छछिया, बछिया न पिछोरी' इसी समय सुवर्ण की अंगूठी नन्दपुरोहित को पहिराई जाती है, और छापा की साडी वारकर दी जाती है ।

नन्दरायजी श्रीप्रभु के आगे मध्य तिवारी की देहली को दही और मांखन लेले कर लीपते हैं । "लै–लै दही घृत देहरी पर वारो." यह पद इसका साक्षात् कराता है । सचमुच आज बड़ा भाग्य है कि–भगवान के धाम अक्षरब्रह्म को नंदराय की 'नवलख' गायो के गोरस का आस्वाद मिल रहा है, देहली का परिशोधन गोमय से न होकर उत्तम द्रव्य दही–माखन से किया जा रहा है ? समृध्दि का क्या कहना ?

"नन्द महोत्सव हो बड कीजै." इस पद–गान के साथ श्रीनन्दरायजी, पुरोहित और तिलकायित तीनों परस्पर मस्तक मिला कर चौक में नाचते हैं, मानों–महोत्सव का सारा ज्ञान–विज्ञान–परिज्ञान एकत्रित होकर नृत्य करने लगता हैं ।जब

---

* एसा प्रसिद्ध है कि–श्रीद्वारकाधीश के तृतीय घर में इस नन्दमहोत्सव की विशेषता है, श्रीविट्ठलेश प्रभुचरण के समय जब तृ. पुत्र श्रीबालकृष्णजी ने नन्दमहोत्सव मे सर्वप्रथम श्रीयशोदाजी का बेश धारण कर श्रीको पालना झुलाया था, मातृभावना के सात्विक भावोदय–स्वरूप आपश्री के स्तनों से दुग्धधारा का उन्मेष हो गया था । इस अतिशय भाव–प्रवणता को परिलक्षित कर श्रीप्रभुचरण ने उन्हे आर्शीवाद दिया था कि, 'तुम्हारे घर में सदाइसी प्रकार अलौकिक भाव से नन्दमहोत्सव होता रहेगा' । सो सत्य ही उसके फलस्वरूप दर्शनार्थी आज भी इस साक्षात् आनन्द का अनुभव करते है ।

कीर्तनकार अपनी बधाई "नन्द बधाई दीजै ग्वालनि." यह पद गाकर मांगते है, उन्हे परछनी और पैसे बांटे लुटाये जाते है । श्रीप्रभु के विनोदार्थ परिपकव रस पदार्थो की वर्षा होने लगती है । महाभोग में आई हुई अनेक भांति की सामग्री मिठाई पक्वान डला भर–भर दर्शनार्थियो पर लुटाए जाते हैं । "लूटत झपटत खात मिठाई.' इस पद का आनन्द लेने के लिये सचमुच इस लूट–झपटमें संमिलित होना पडता है । गोपीग्वाल दर्शनार्थी सभी, जो कुछ भी हाथ लगै, एक दूसरे के ऊपर कंधे पर चड़चढ़ कर कणिका महाप्रसाद के लिये हाथ बढाते है । मिठाई लुटती है और खूब लुटती है । किसीके पूरा लडू हाथ लगता है, तो किसीके मठडी, किसीके चन्द्रकला बिखर कर अपना नाम सार्थक कर जाती है .

इस प्रत्यक्ष आनन्द में नन्दरायजी श्री को पालना झुलाने से केसे अपने आपको भला रोक सकते है ? सो प्रभु को पालना झुलाने लगते है, 'जाताल्हादो महामनाः' का अवसर और कहां ? सो इस समय "वहुरि लियों ब्रजराज गोद." यह पद गाया जाता है ।

दर्शनार्थी स्वयं गोपी–ग्वाल बनकर नाचने कूदने का अनुभव करने लगते है । वे अनेक प्रकार के सामूहिक प्रदर्शन करते हैं, एक दूसरे को नचाते नाचते हैं, पंक्तियां बनाकर एक दूसरी ओर धावा–सा बोलते है, ठेलम–ठेल में अन्य पक्ष को पीछे ढ़केल कर विजय का अनुभव करते है, परस्पर भेटी देते हैं । विविध भांति के नृत्य, लास्य, तांडवों के प्रदर्शन में मंगल भी जहां मंगल मनाने लग जाय? आनन्द भी जहां लास्य नृत्य करने लग जाय ? वहां क्या कमी रहती है, और इस आनन्द में स्वयं रस लेने के लिये आकाश के सुर–किन्नर–गन्धर्व भी दर्शनार्थी मनुजों में संमिलित होकर नाचने–कूदने लग जाते हो तो कोई आश्चर्य नहीं?

इस प्रकार प्रभु–दर्शन–साक्षात्कार और भावना के अनुरूप, हर्षोल्लास आनन्द–मय जै–जैकार के बीच दर्शनार्थी ब्रजभक्त तन्मय हो जाते हैं । श्रीनन्दराजकुमार की थाली की आरती उतारी जाती है जिसमें पालना चित्रित होता है । यह आरती सर्वप्रथम श्रीअक्काजी के श्रीहस्त से निर्मित आरती की प्रतिकृति होती है तिलकायित आरती कर न्यौछावर करते हैं जो बाद में कीर्तनियो में वितरण कर दी जाती है । आरती के समय'तिहारों घर सुबस बसौ.' इस पद का कीर्तन होता है ।

इस समय कीर्तन का मुखिया नन्दरायजी को संग ठाढे रखकर हाथ में तमूरा लेकर ढाढी के पद–(१)नंदजू मेरे मन आनंद भयौ. (२) हौ ब्रज मागनो जू. (३) नंदजू तिहारे सुखदुख. गाकर ढाढी–लीला का साक्षात कराता है ।

श्रीनन्दरायजी की बिदा —

नन्दमहोत्सव के बाद यह प्रसंग अतिशय करुणाजनक होता है । तिलकायित श्रीनन्दरायजी के साथ तिवारी के आगे खडे होकर विदा लेते हैं । परिचारक मुखिया श्री के प्रसादी माला बीडा देकर दोनों की संभावना करते है । कीर्तन के साज के साथ श्रीनन्दरायजी को स्थान पर पधराया जाता है, वे श्रीमुख की स्वरूप–शोभा का निरीक्षण करते हुए शनैः शनैः चौक में पीछे पैरों से चलते जाते है इस समय धीरे २ नन्दरायजी के चलने पर ' व्रजपति मांगिये जू.' और जगमोहन के बहार आते हैं तब 'मिलि निकसी है देत असीस.' यह पद गाया जाता है । स्नेहातिभर से बिह्वल होकर वे कुछ आगे

आते पुनः पीछे चलते बढते चले जाते हैं,साथ का सभी परिकर भी प्रभु के सन्मुख दृष्टि रखकर विदा होता है । तिलकायित स्वयं उन्हे स्थान पर पहुचाने उनके हाथ को सहारा देकर ले चलते हैं. । चौक, जगमोहन को तिवारी और नीचे सीढियो तक–जहा तक श्रीमुख का दर्शन होता रहता है–सांमुख्य ही रक्खा जाता है, बाद में उनके यथास्थान गादीजी के चौक में पहुचने पर यह कीर्तन गाया जाता है:—

गह्यो नन्द सब गोपनि मिलिके दीजै हमहिं बधाई ।
अखिल भुवन की कान्ह महानिधि सो तुम्हरे घर आई ॥१॥

नाचत ग्वाल गावैं सब व्रजजन आनंद उर न समाई ।
कच–लर कुच–ऊपर लटकति है यह छबि वरनि न जाई ॥२॥

मन भाए पट, भूषन दीन्हे ग्वालिनि सब पहिराई ।
"परमानंद" नन्द–घर आनंद गोपी महानिधि पाई ॥३॥

इसके अनन्तर नन्दरायजी और तिलकायित परस्पर गले मिलते है, और उनका वेश बडा हो जाता है* ।

लोकनृत्य —

मंदिर में श्रीनन्दरायजी के विदा हो जाने के बाद कुछ और दर्शनार्थी साधारण जाति के लोग भी आकर नन्दमहोत्सव का आनन्द उठाते प्रभु की मधुर झांकी करते हैं । बाल–गोपाल

---

* नन्दरायजी की वस्त्रभूषा वेणुवेत्र के साथ मुखियाजी को ही दे दीजाती है और तिलकायित के वस्त्र महाबनिया को मिलते हैं । जो नन्दरायजी का पुरोहित माना जाता है ।

शिशु कन्हैया के विनोद के लिये नगारची नगारा शहनाई द्वारा पालना के सन्मुख मधुर आलाप सुनाता है । इतने सन्निकट मन्दिर में आकर अपनी कला को प्रभु के सम्मुख विनिवेदित करने का आज ही उसे सौभाग्य मिलता है । इसी प्रकार भीलवर्ग, जो–व्रज के भिल्ल पुलिन्दिनी के वंशज हैं. श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण कन्हैया के आगे आ–आकर आनन्द से नाचते कूदते, अपनी जातीय वाद्य–परंपरा के अनुसार थाली मांदल बजाते हुए हर्ष विभोर हो उठते हैं । उनके तालस्वर पर भीलिनियां घूंघट डालकर अंचल को इधरउधर फहराती हुई ठुमुक–ठुमुक नाचती और हावभाव दिखा कर प्रभु को प्रसन्न करती है । भीलों का तांडव और भीलिनियों का ग्रामीण लास्य देख कर नन्दनन्दन मुसक्याते हैं, न्यौछावर दिलाकर दोनों को स्वकीय कृपाभाजन बना लेते हैं । भीलों का यह लोक–नृत्य लगभग ढाई सौ वर्षों से परंपरया कांकरोली में ही होता है ।

एसे ही प्रसंग पर तो श्रीशुकाचार्य ने स्मरण कर गाया था—

"किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुल्कसा आभीर कंका यवनाः खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुद्धचन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः ।"
(भा. द्वि. ४/१८)

इस परमानन्दमय महोत्सव से पशुध्न मानुष के विना और कौन वंचित रह सकता है ? और रहना चाहता है ।

परमोत्कर्षः—

नन्द–महोत्सव में उछाले, फैके ढुले और ढोले गए दूध–दही

माखन, हरदी कुंकुम अक्षत–दूब आदि के घोल से सरावोर, लथपथ, भीजे हुए सभी नर–नारी ऊंच–नीच, बालक–वृद्ध, युवा, धनी–निर्धन पंडित–मूर्ख स्वामीसेवक, कुत्रिम भेद भुलाकर आनन्द में लीन एकरसमग्न होजाते है अपना जन्म सुफल करते हैं । 'नन्द कें आनन्दभयौ. की तालसुर वाद्यध्वनि में कूदते, नाचते–गाते हैं, छीना–झपटी ऊधम–मस्ती करते किसे देहानुसन्धान रह सकता है ? नन्दांगण में भीडभाड में अहमहमिका करते एक दूसरे को दूध–दही में रंगविरंगा करदेने की धुन सभी को समायी रहती है, ऊपर छज्जैं तिवारी अटारी झरोखो में बैंठी मानिनी महिलाए मी दूध–दही के कुछ छीटै वोछार और कणिका प्रसाद पाकर देवांगनाओं की भांति मन्द मुसकान में सुमन षर्पा करती है ।

इसी अलौकिक झांकी में महामुनि शुक का हार्दिक संकीर्तन—

"ता आशिषः प्रयुंजानाश्चिरं पाहीति, बालकें ।
हरिद्रा चूर्ण तैलाद्भिः सिन्चन्त्यो जनमुज्जगुः ॥१२॥
अवाधन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे ।
कृष्णे विश्वेश्वरेऽनन्ते नन्दस्य व्रजमागते ॥१३॥
गोपाः परस्परं हृष्टा दधिक्षीर घृताम्बुभिः ।
आर्सिचन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः " ॥१४॥
(भा. द. ५)

और

भगवदीय परमानन्द दास का कीर्तन :–

"दधिकांदौ आंगन नन्द कें ।
मंगल चारु भयौ दसहूं दिसि प्रगटे आनन्द–कन्द कें ॥

गांइ गोप गोपीजन क्रीडत रहसत बालमुकुन्द कें ।
मानों लाभ भयौ त्रिभुवन में मिटे सकल भव फन्द कें ॥

बरषत सुमन, देव मुनि हरषत, गावत जसु श्रुति छन्द कें ।
जो सुख नन्द जसोदा रानी, सो सुख 'परमानन्द' कें ॥
(पर. प. सं. १६)

वर्णित साक्षात् आनन्द पर्याप्तरूप में सभी को उपलब्ध हो जाता हैं, "धन्य नन्द धनि धन्य जसोदा जिनि एसौ सुत जायौ"।

इस आनन्द–परिदर्शन के बाद टेरा के भीतर श्रीयशोदाजी को माला–बीडा दिया जाता है, तिलकायित, तथा बहुवेटी उन्हे यथा स्थान पधरा लेजाती हैं, जहां उनको सभी दंडवत प्रणाम और चरण–स्पर्श करते हैं, वेश बडा होजाता हैं ।

नन्दोत्सव के दर्शन बन्द हो जाने पर प्रभु पालना में से निजमन्दिर में पधार जाते हैं, जहां मंगल–भोग आकर नित्य सेवाक्रम आरंभ हो जाता हैं, शृंगार ग्वाल राजभोग के बाद चालू सेवा में भोग–सन्ध्या आर्ति शयन अनौसर हो जाने पर जन्माष्टमी नन्दमहोत्सव का क्रम परिपूर्ण हो जाता हैं ।

भाद्रपद कृ. १३ के दिन छट्ठी का पलना होता है, और वर्षोत्सवों का क्रम चालू हो जाता है ।

इति शुभम्.

(वल्लभीय सुधा से साभार)

॥ શ્રી દ્વારકેશો જ્યંતિ ॥

તૃતીય ગૃહની - સેવા - શૃંગાર - સામગ્રી પ્રણાલિકા

વિષય : ઉત્સવ - સુચી - અનુક્રમણિકા

અનુક્રમ નંબર	વિષય : મોટા મુખ્ય ઉત્સવો	મિતી	પાન નંબર
૧	નિત્ય સેવા વિધી - પ્રકાર		૧
૨	જન્માષ્ટમી	શ્રાવણ વદ ૮	૯
૩	નંદ મહોત્સવ	શ્રાવણ વદ ૯	૧૨
૪	શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ	ભાદરવા સુદ ૨	૧૮
૫	શ્રી રાધાષ્ટમી	ભાદરવા સુદ ૮	૨૨
૬	દાન એકાદશી	ભાદરવા સુદ ૧૧	૨૪
૭	શ્રી વામન જયંતિ	ભાદરવા સુદ ૧૨	૨૫
૮	શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ (તૃતીય બડે)	ભાદરવા સુદ ૧૩	૩૩
૯	દશેરા	આસો સુદ ૧૦	૪૦
૧૦	શરદ પુર્ણિમા	આસો સુદ ૧૩	૪૪
૧૧	ધનતેરસ	આસો વદ ૧૩	૫૧
૧૨	રૂપ ચતુર્દશી	આસો વદ ૧૪	૫૨
૧૩	દીપોત્સવ (દીવાળી)	આસો વદ અમાસ	૫૨
૧૪	અન્નકુટ ઉત્સવ - ગોર્વધન પૂજા	કારતક સુદ ૧	૫૩
૧૫	ભાઇબીજ	કારતક સુદ ૨	૫૬
૧૬	ગોપાષ્ટમી	કારતક સુદ ૮	૫૯
૧૭	પ્રબોધિની	કારતક સુદ ૧૧	૬૧
૧૮	શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ	કારતક વદ ૧૪	૭૨
૧૯	છપ્પનભોગ ઉત્સવ	માગસર વદ ૭	૮૪
૨૦	શ્રી ગુંસાઇજીનો ઉત્સવ	માગસર વદ ૯	૮૫
૨૧	શ્રી વ્રજેશકુમારજીનો જન્મ દિવસ	પોષ સુદ ૧૦	૯૫
૨૨	મકરસંકાતિ		૯૮
૨૩	વસંત પંચમી	મહા સુદ ૫	૧૦૮
૨૪	હોરી—દંડા રોપણ	મહા સુદ ૧૫	૧૧૫
૨૫	શ્રી વ્રજભુષણલાલજીનો જન્મ દિવસ	મહા વદ ૨	૧૧૬
૨૬	શ્રી નાથજીનો પારોત્સવ	મહા વદ ૭	૧૧૯
૨૭	કુંજ એકાદશી	ફાગણ સુદ ૧૧	૧૨૯
૨૮	બગીચા ઉત્સવ	ફાગણ સુદ ૧૩	૧૩૧
૨૯	હોળી	ફાગણ સુદ ૧૫	૧૩૨
૩૦	ડોલોત્સવ	ફાગણ વદ ૧	૧૩૪
૩૧	સવંત્સર	ચૈત્ર સુદ ૧	૧૪૩
૩૨	રામનવમી	ચૈત્ર સુદ ૯	૧૪૭
૩૩	શ્રી મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ	ચૈત્ર વદ ૧૧	૧૫૭
૩૪	શ્રી પુરૂષોત્તમજીનો ઉત્સવ	વૈશાખ સુદ ૧	૧૬૧
૩૫	અક્ષય તૃતીયા	વૈશાખ સુદ ૩	૧૬૨
૩૬	નૃસિંહ જ્યન્તી	વૈશાખ સુદ ૧૪	૧૬૯
૩૭	શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ	જેઠ સુદ ૭	૧૮૨
૩૮	ગંગાદશમી	જેઠ સુદ ૧૦	૧૮૪
૩૯	સ્નાન યાત્રા	જેઠ સુદ ૧૫	૧૮૭
૪૦	રથયાત્રા	અષાઢ સુદ ૨	૧૯૬
૪૧	શ્રીદ્વારકાંધીશજીનો પાટોત્સવ	અષાઢ સુદ ૫	૨૦૦
૪૨	કસુંબા છઠ	અષાઢ સુદ ૬	૨૦૧
૪૩	વ્યાસ પૂર્ણિમા	અષાઢ સુદ ૧૫	૨૦૫
૪૪	હિંડોરા પ્રારંભ	અષાઢ વદ ૧	૨૦૬
૪૫	શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીનો ઉત્સવ (દોહરા મંડાણ)	અષાઢ વદ ૧૩	૨૧૨
૪૬	હરિયાળી અમાસ	અષાઢ અમાસ	૨૧૪
૪૭	ઠકરાણી ત્રીજ	શ્રાવણ સુદ ૩	૨૧૫
૪૮	પવિત્રા એકાદશી	શ્રાવણ સુદ ૧૧	૨૨૦
૪૯	રક્ષા બંધન	શ્રાવણ સુદ ૧૫	૨૨૨
૫૦	છઠ્ઠીનો ઉત્સવ	શ્રાવણ વદ ૭	૨૨૬

અનુક્રમ નંબર	વિષય : વિશેષ માહિતી	પાન નંબર
૫૧	અભ્યંગ (વિશેષ દિવસોએ અને ઉત્સવ પર વિવરણ - સાથે)	૨૨૭
૫૨	પંચામૃત	૨૨૮
૫૩	સ્નાન	૨૨૮
૫૪	તિલક	૨૨૮
૫૫	આરતી	૨૨૯
૫૬	માલા	૨૩૧
૫૭	અનોસરના પલના	૨૩૨
૫૮	શીતકાલની ચોકી	૨૩૨
૫૯	મંગળ ભોગ (શીતકાલ)	૨૩૩
૬૦	સખડી - મંગળ ભોગ (શીતકાલ)	૨૩૩
૬૧	મંગળ ભોગ (વિશેષ ઉત્સવોમાં)	૨૩૪
૬૨	ભોગ - સમયની ઘડી	૨૩૪
૬૩	વિશેષ ઉત્સવ—ભોગ સમયની ઘડી	૨૩૫
૬૪	ગોપી વલ્લભ ભોગ	૨૩૬
૬૫	રાજભોગ	૨૩૭
૬૬	ખેલની તબકડી	૨૩૭
૬૭	ડબરાનો સાજ (ઉત્સવ ક્રમ)	૨૩૮
૬૮	કટોરાનો સાજ	૨૩૮
૬૯	સંકલ્પ પ્રકાર - વિશેષ ઉત્સવોના	૨૩૯
૭૦	શ્રી કૃષ્ણ જન્મ સમયે બોલતા ૮II શ્લોક (શ્રીમદ ભાગવત્ ૧૦ સ્કંધ - તૃ. અ.)	૨૪૧
૭૧	કેટલાક કઠિન શબ્દોના અર્થ	૨૪૨
૭૨	કાંકરોલી ઘરના વિદ્યમાન ગોસ્વામી બાલકોના જન્મદિવસ	૨૪૭
૭૩	કાંકરોલી ઘરના શ્રીતિલકાયતજીઓના જન્મ દિવસ	૨૪૮
૭૪	કાંકરોલી ઘરના વાર્ષિક વિશેષ ઉત્સવોનો પરિચય	૨૪૯

✡ ✡ ✡

॥ શ્રી દ્વારકેશો જયતિ ॥

શ્રી દ્વારકાધીશજીની સેવા શૃંગાર પ્રણાલિકા

નિત્ય સેવા પ્રણાલિકા

શ્રીપ્રભુની સેવા માટે પ્રાતઃકાલ સમયસર વહેલા ઉઠીને સ્નાનાદિકથી પરવારી તિલક ચરણામૃત લઈને પછી ભગવદ્ મંદિર પાસે જઇ (જ્યાં પ્રભુ બિરાજતાં હોય) ત્યાં આવી દ્વાર સન્મુખ દંડવત પ્રણામ કરી પછી મંદિરના દ્વાર ખોલવાં. પહેલાં સોહની કરવી તે પછી ભીનું વસ્ત્ર લઇ મંદિર વસ્ત્ર કરવું. ગાદી તકિયાની ચાદર, સિંહાસન વસ્ત્ર વગેરે ઝાટકી ફરી બિછાવવા. મંગળામાં ધરવાના વસ્ત્ર કાઢી ગાદી પર મુકવા.

તે પછી ત્રણ વખત ઘંટાનાદ કરી, ત્રણ વાર શંખનાદ કરવા. શંખનાદ જ્યાં નિધિ સ્વરૂપ બિરાજતાં હોય ત્યાં જ થાય. ત્યારપછી શૈયા મંદિરમાં આજ્ઞા લઈને જવું.

મંગળા સમય : શ્રી મહાપ્રભુજી, શ્રી ગુંસાઈજી, શ્રી બાલકૃષ્ણજીના પાદુકાજીને ફુલેલ સમર્પવું. સુકું અંગ વસ્ત્ર કરવું અત્તર સમર્પી, તે દિવસનું ઓઢણી વસ્ત્ર જે હોય તે ધરવા. તે પછી શૈયા મંદિર માંથી રાત્રિના અનોસરના ઝારી બંટા વગેરે સરાવી માંજી ખાસા કરવા અને સૌ પ્રથમ ગાદીજી પર વેણુંજીને મુખવસ્ત્ર પધરાવવા. અને તે પછી શ્રી ઠાકોરજીને ગાદીજી પર પધરાવવા. મંગળાના જુદા કાઢી રાખેલા વસ્ત્ર ધરવા.

મંગળ ભોગ : મંગળ ભોગની સામગ્રીમાં માખણની કટોરી, મિસરીની કટોરી, મલાઈની કટોરી, સેવના લાડુ, ઠોર, સંધાણાની કટોરી (સંધાણામાં કેરી, ટેટી અને લીબુ એમાંથી વારાફરતી એક સંધાણું આવે) આ બધું એક થાળીમાં આવે. બદામનો શીરો. દુધનો કટોરો, દહીંનો કટોરો ડાબી બાજુ ધરવા. જે થાળીમાં સામગ્રી ધરી હોય ત્યાં વચ્ચે થોડી ખાલી જગ્યા રાખવી. એક ઠોરના ત્રણ ટુક કરીને તે ઠોર પર મુકવા. એક લાડુમાંથી અડધો લાડુ તોડવો. આમ થાળ સિદ્ધ કરી સામે ચોકીજી ઉપર

ધરવું, ભોગ ધરી, ઝારીજી ભરી સિહાસન પર શ્રી....ના ડાબા શ્રીહસ્ત તરફ પધરાવવા.

મંગળભોગ ધર્યા પછી શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રી ગુંસાઈજીની કાનીથી અને શ્રી બાલકૃષ્ણજીની આડીથી કૃપા કરી મંગળ ભોગ આરોગો એમ વિનંતી કરી બહાર આવી, ટેરો લેવો.

મંગળા દર્શન : ભોગ સરાવતી વખતે "કૃપાનાથ આવુ" એમ વિનંતી કરી મંદિરમાં જવું. આચમન મુખવસ્ત્ર કરી બીડાં ધરવા ભોગ સરાવી મંગળા આરતી કરવી.

શૃંગાર અને શૃંગાર ભોગ : દર્શન બંધ કરી શૃંગારની તૈયાર કરવી, ઝારીજી ફરીથી ભરી શૃંગાર ચોકી પાસે ધરવા. શૃંગાર ચોકી પર બીડાં ધરવા, અને ભોગની તબકડીમાં માખણની કટોરી, દળેલી મિસરીની કટોરી, મલાઈની કટોરી, આખી મિસરીની કટોરી, બદામની કટોરી, અનસખડીની સામગ્રી, તથા ફીકાની સામગ્રી બે ખેલની (નાની થપડી) ધરવી. થપડી પાસે લુંણની કટોરી ધરવી. તેના ઉપર સુતરાઉ અને રેશમી વસ્ત્ર ગોળ ઢાંકવા.

ત્યારપછી શ્રી ઠાકોરજીને શૃંગાર ચોકી પર પધરાવવા તેમાં પહેલા અલંકાર, તનિયો, આદિ બધા વસ્ત્ર આભરણ વડાંકરી, ફુલેલ સમર્પવું પછી ગરમ જલમાં વસ્ત્ર બોળી, ભીના વસ્ત્રથી અંગવસ્ત્ર કરવું. તે વસ્ત્ર શ્રી અંગે સુહાય તેવું રાખવું પછી સુકા કોમળ વસ્ત્રથી અંગ વસ્ત્ર કરવું પછી અત્તર સમર્પવું પછી પ્રથમ તનિયો ધરાવવો, જે દિવસે જે રીતના શૃંગાર હોય તે પ્રકારના વસ્ત્ર આભરણ ધરવાં. ચરણાંરવિંદના આભુષણથી શરૂ કરી શ્રી મસ્તક સુધી સર્વ શૃંગાર કરવા ચિંબુક અને નકવેસર છેલ્લે ધરવા. શૃંગાર ધરાઈ ગયા પછી ગાદીજી પર શ્રી..... ને પધરાવવા. માળાજી ફુલની ધરી, વેણું ધરાવી, દર્પણ બતાવવું, વેણુંજીવડા કરી ગોપી વલ્લભ ભોગ ધરવો.

ગોપી વલ્લભભોગ : ઉપર જણાવ્યા મુજબનો શૃંગાર ભોગ ગોપીવલ્લભ ભોગમાં પણ રહે, તે વખતે ઉપરના વસ્ત્ર ખોલી દેવા, સામગ્રી-અનસખડી-જીરાપુરી, ખરખરી થપડી, માખણ મિશ્રી,

મલાઈ, સંધાણાની કટોરી, લુંણની કટોરી, આદા કાતરીની કટોરી, દુધની કટોરી, દહીની કટોરી, શાકની કટોરી, રાયતાની કટોરી, વિગેરે આવે.

સખડી-ભાતનો થાળ, ઘીની કટોરી, જલની કટોરી, દાળ, કઢી મિરચનો શાક, આ બધાની કટોરી, શાક બે, રાયતું એક, સાદા લપેટની થાળી, આ બધી સામગ્રી આવે. સમય થયે ભોગ સરાવી આચમન કરાવી બીડા ધરવા.

ગ્વાલ દર્શન : માળા વડી કરવી અને તે પછી ઘૈયા આરોગાવવી તે પછી બીડાં વડા કરી. ડબરા ભોગ ધરવો. ઝારીજી ભરી, શૈયાની સેવા કરી, ડબરા ભોગ સરાવવા, આચમન કરાવવું, બીડા ધરવા, ઝારીજી શ્રી.. ની જમણી બાજુએ ધરવી અને ખેલનીની તબકડી ઢાંકીને મુંકવી (નાની ચાર મઠડી આવે) ઉત્સવમાં બીજી સામગ્રીના નાનાં ચાર નંગ આવે. તે પછી ગ્વાલના દર્શન ખૂલે.

ગ્વાલના દર્શનમાં રાજભોગની ચોકીની તૈયારી કરવી તે પછી દર્શન બંધ કરી રાજભોગ ધરવા.

રાજભોગ : રાજભોગની ચોકી સિંહાસન પાસે આવે, તેને તકતા કહે છે. તેના ઉપર પલાળેલી પાતળો બિછાવવી, ચમચા પધરાવવા, જલની કટોરી ધરવી. હજી ફરી બીજા એકઝારીજી ભરી ગાદીની બીજી બાજુએ ધરવા. એક બાજુ ગ્વાલ સમયના પણ ઝારીજી રહે.

શ્રી....ના ડાબા શ્રીહસ્ત તરફ અન સખડીની સામગ્રી ધરવી. તેમાં વારા ફરતી બુંદી મનોહરના લાડું, સેવના લાડુ એક થાળમાં ધરવા. અનસખડીમાં બનાવેલા સાદા લપેટ, તથા ટોકરી સાજી ચોકી પર ધરવી.

શ્રી...... ના જમણા શ્રીહસ્ત તરફ ગોરસનો થાળ ધરવો તેમાં માખણની કટોરી, દળેલી મિસરીની કટોરી, સંધાણાની કટોરી, કેરીના મુરબ્બાની કટોરી, દહીનો કટોરો, શ્રીખંડનો કટોરો, મેવાના પનાનો કટોરો, દુધનો કટોરો, અને દુધ ઘરની એક સામગ્રી ધરવી. દુધઘરની સામગ્રીમાં વારાફરતી બરફી,

પેડા, દુધપુરી અને બાસોંદી ની આવે બાંસોંદીમાં ચમચો ધરવો. તે થાળમાં લુંણની કટોરી. દળેલા કાળા મરીની કટોરી અને આદા કાતરીની કટોરી ધરવી (જન્માષ્ટમીથી ડોલ સુધી આદુ આવે. બીજી ઋતુમાં કાકડીની કાતરી આવે. તેમાં લુંણ કાળા મરી, પધરાવાય, કાકડી બંધ થાય ત્યારે કાચી કેરીનો છુંદો ધરવો, તેમાં લુંણ કાળા મરી પધરાવવા. એક કટોરીમાં લીલી ચટણી ધરવી તથા બીયાં કાઢીને લીબુના બે ટુક કરીને ધરવા. શીતકાળામાં મુરબ્બાને બદલે ગોળની કટોરી ધરવી. ગોળ ઉપર દળેલી ખાંડ ધરવી, શીતકાળમાં ગોળની સામગ્રી ધરવી.

દુધઘરની સામગ્રીના થાળની બાજુમાં અલગ લુચ્ચઈની સામગ્રીની તબકડી ધરવી. તેની પાછળ દહી વલોવીને બનાવેલા મઠાનો ડબરો ધરવો. જમણી બાજુ પડઘા ઉપર સિંહાસન પાસે ખીરનો ડબરો ધરવો. આ સામગ્રી સજાવાતી હોય તે દરમ્યાન શ્રી...... ની સન્મુખ ગદ્ય-મંત્ર બોલી ચરણારવિંદમાં તુલસી સમર્પવા.

સન્મુખમાં સખડીનો થાળ ધરવો. તેની જમણી બાજુ રોટલી ધરવી, સખડી અને રોટલીની વચ્ચે શીરો ધરવો, શીરાની પાછળ જળની કટોરી ધરવી. ભાતના થાળમાં જમણી બાજુ ઘીની કટોરી ધરવી. જમણી બાજુ રોટલી પાછળ, રાયતાનો ડબરો ધરવો તે સાથે કાળાં મરીના શાકનો ડબરો ધરવો તેની પાસે કઢીનો ડબરો અને મગનો ડબરો ધરવા. તેની પાસે દાળનો ડબરો ધરવો. દાળના ડબરાની પાછળ લીટી અથવા બાટી ધરવી. તેની પાસે શાકના જુદા જુદા ડબરા ધરવા. શાકના ડબરા પાસે પાપડની થાળી ધરવી. સામગ્રીમાં ચમચાં પધરાવવા.

તે પછી દરેક સામગ્રીમાં તુલસીનું એક એક પત્ર પધરાવવું પછી ધુપદીપ કરી શંખોદક કરવા, વધેલું જળ મઠામાં પધરાવી દેવું પછી શ્રીઠાકોરજીને આરોગવાની વિનંતી કરી ટેરો લેવો.

રાજભોગ દર્શન : સમય થયે "જય જય કૃપાનાથ" આવું એમ બોલી અંદર જવું આચમન મુખ વસ્ત્ર કરાવી, બીડી આરોગાવવી, તે પછી ભોગ સરાવવાં, ઝારીજી વડાં કરી ફરી નવા ભરવાં, એકઝારીજી સિંહાસન પાસે શ્રી ઠાકોરજીની ડાબી બાજુએ પધરાવવી. બીડાનો બંટો જમણી બાજુએ ધરવો, બધી જગ્યા ત્રણ વખત ધોઈ ખાસા કરવી, પછી કોરાં વસ્ત્રથી લુછી સ્વચ્છ કરવી. શ્રીમાળાજી શ્રીને ધરાવવા, ખંડપાટ ચોકી વિગેરે ધરી દર્શન ખોલવાં. વેણું - વેત્ર ધરી દર્પણ બતાવી આરતી કરવી. તે પછી દંડવત કરી હાથ ખાસા કરી ફરી દર્પણ બતાવી. વેણું-વેત્ર વડાં કરવા ટેરો લઈ માળા વડી કરી દર્શન બંધ કરવાં. તે પછી સિંહાસનથી શૈયા મંદિર સુધી પેડો બિછાવવો. શૈયા મંદિરમાં જે બાજુ શ્રી. ના ચરણ રહે તે બાજુ સાંગામાચી આવે શ્રીમસ્તક તરફ ભોગનો બંટો આવે ચોકી પર તેમાં સંધાણાની કટોરી માખણ બુરાની કટોરી અને બાલભોગની સામગ્રી આવે. શૈયાજીની બાજુમાં એક ઝારીજી પણ આવે બધી સજાવટ કરી, તપાસી તાળા મંગળ કરી દંડવત કરી બહાર આવવું. રામનવમીથી જન્માષ્ટમી સુધી બપોરે હિંડોળા ખાટમાં અનોસર થાય.

ઉત્થાપન દર્શન : સાંજે દંડવત કરી, હાથ ખાસાકરી ત્રણવાર ઘંટાનાદ તથા ત્રણ વખત શંખનાદ કરવા તે પછી માટીથી હાથ ખાસા કરી પછી "જય જય" બોલી ટેરો ખોલવો. તે પછી નજીક જઈ બરાબર દર્શન કરવા. શૃંગારગાદી તકિયા વગેરે વાકું ચુકું થયું હોય તો વ્યવસ્થિત કરવું પેડો ઉઠાવી દર્શન, ખોલવા, ઝારીજી સરાવી ખાસા કરી ફરી ભરવાં તે જ વખતે ચોગાન, ગેડીદડાં, ખંડપાટ બાજુએ ઠેકાણે પધરાવવા, ઝારીજી પધરાવી ટેરોલેવો અને તે પછી ઉત્થાપન ભોગ ધરવો.

ઉત્થાપન ભોગ : લીલા મેવાની કટોરીઓ, મલાઈની કટોરી, દળેલી મિશ્રીની કટોરી, અને સુકોમેવો ચાસણીથી પાયેલી ખારેક, દ્રાક્ષ ખોવાના નંગ ધરવા, લીલા કોપરાને છીણી, નાના ટુક કરી સાથે મિશ્રી મિલાવીને ધરવા, કોપરાના ટુક ધરવા ફીકાની થાળ ધરવી,

તેમાં ઘઉના લોટનાં વધારે મોણનાખી હળદર પધરાવવી, તેને તળી સકરપારા ધરવા, થપડી ધરવી, સુહારી ધરવી, તેની પાસે લુંણ અને કાળા દળેલા મરીની કટોરીઓ ધરવી, શીતકાળ માં શેરડીનો રસ ધરવો કાની દઇ ટેરો ખેંચી બહાર આવવું.

ઉષ્ણકાળમાં અક્ષય તૃતીયાથી રથયાત્રા સુધી સતુવા ભોગ અને પનો આવે, મગ, ચણાની ભીજવેલી દાળ આવે, રથયાત્રાથી જન્માષ્ટમી સુધી મગ ચણાની દાળને ઘીમા છોંકીને ધરવી. તેમાં મસાલો પધરાવવો. પ્રબોધિનીથી વસંત પંચમી સુધી રતાળુ બાફી છોલાકાઢી મસળી લુંણ અને કાળાં મરી ખાંડેલા. મિલાવીને ધરવા, એક દિવસ શક્કરિયાને બાફી છોલા કાઢી મસળીને તેમા એલચી, અને દળેલી મિસરી મિલાવીને ધરવા.

ભોગ દર્શન : સમય થયે "જય જય કૃપાનાથ આવુ" એમ બોલીને અંદર જઇ આચમન મુખ વસ્ત્ર કરી બીડાં ધરવા. ભોગ સરાવી માળા ધરવી. જમણી બાજુ ખાલી ત્રસ્ટી ધરી દર્શન ખોલવવાં શીતકાલમાં હંમેશા મોરછલ થાય. ઉષ્ણકાળમાં પંખો થાય, ખંડપાટ સિંહાસન તકિયા તબકડી વડાં કરી ઝારીજી નવા ભરી પધરાવવા. બીડાંનો બંટો વડો કરવો તે પછી દર્શન બંધ કરવા.

સંધ્યા દર્શન : સંધ્યા ભોગ ધરવો, સંધ્યા ભોગમાં અનસખડીનો થાળ, મઠડીનો આવે તેમાં માખણ મિશ્રી સંધાણાની કટોરી આવે, સમય થયે ભોગ સરાવી દર્શન ખોલવા. શ્રીને વેણુંવેત્ર ધરી આરતી કરવી તે પછી દર્શન બંધ કરવા.

તે પછી શ્રીના શૃંગાર વડા કરવા શ્રીમસ્તકે પાઘ, કે પગો કે કુલ્હે રહે. શ્રીકંઠમાં દુલરી રહે શિયાળામાં ઠાડું વસ્ત્ર રહે મુગટ કાછની ધરાય ત્યારે કાછની વડી થાય પણ કટિના પટકા રહે શયનમાં કટિનો પટકો અને સુથન રહે તે પછી શ્રીઠાકોરજીને સિંહાસન પર પધરાવી ચૈયા આરોગાવવી. ને ડબરા ભોગ ધરવો, ઝારીજીભરી શૈયાની સેવા કરી ભોગ સરાવી, આચમન

મુખ વસ્ત્ર કરી બીડાં ધરવા. શયનનો થાળ, સજાય એટલે બીડાં વડા કરવા.

શયન ભોગ : સિંહાસન સામે શયન ભોગની ચોકી મુકી ઝારીજી ભરવા. ચોકી પર પાતળ બિછાવી ભોગ ધરવો. મધ્યમાં ભાતનો થાળ આવે, ઘીની કટોરી જમણાં શ્રી હસ્ત તરફ ભાતમાં ધરવી. ઘીની પાસે જળની, લુંણની, સંધાણાંની કટોરીઓ એક તબકડીમાં મુંકવી, તેની પાસે શાકનો અને કઢીનો ડબરો આવે તેની બાજુમાં શીતકાળ હોય તો માન ભોગ આવે અને ઉષ્ણકાળ માં ઘોળેલો સતુવા આવે. તેની પાછળ દાળનો ડબરો આવે. દાળમાં મગની છીલકાવાળી દાળ આવે. ઉત્સવના દિવસે છડેલી દાળ આવે. કઢીને બદલે લોંગ પાનની કઢી આવે તેમાં રતાળુના ટુક પડે. લવીગની બુકનીની સુંગંધ પડે અને મિરચના શાક માફક સિધ્ધ થાય. તેની સાથે શેકેલા પાપડ આવે તે ઉભા બાજુમાં ધરાય, ડાબી બાજુના ભાગમાં અનસખડીના ભોગનો થાળ ચોકી પર ધરાય. તેમાં મોણવાળી શયનની પુરી (ઘઉના લોટની ખાસા પુરી) પાછળ અનસખડીની ટોકરી આવે તેની પાછળ છુટી દાળનો કટોરો આવે. એક દિવસ મગની અને એક દિવસ ચણાની દાળ આવે તેની પાછળ સામગ્રીના નંગની તબકડી આવે. રાજભોગમાં જે નંગ હોય તે જ શયનમાં આવે પછી ધુપદીપ થાય, કાની દઇ ટેરો લેવો. દરેક ભોગમાં ઝારીજીનું નાળચું ખુલ્લુ રાખવું, દર્શન વખતે તેના પરનેવડો ઢાંકવો, ઝારીજીનું વસ્ત્ર નીચોવેલું ભીનું રહે. શીતકાલમાં તેના પર સુકા કપડાનું ચોરસ ઢાંકણ આવે.

જે વખતે સખડીનો ભોગ ધરાય તે વખતે સખડીનો કોળ સાજવો, સખડીને રસરૂપ, કોમળકરી, ઘી પધરાવી, દાળ પધરાવી એક રસ કરી ટેરો લેવો.

સમય થયે દુસરો ભોગ ધરાય, તેમાં એક કટોરો બાસોંદીનો અનસખડીમાં આવે અને બીજો કટોરો બાસોંદીની સાથે ભાત મેળવી સખડીના થાળમાં પધરાવવો તેમાં સહેજ

ગુલાબ જળ અને બરાસ તથા ખાંડ પધરાવવી. પ્રમાણસર ગરમ રાખવું બાંસોંદીના કટોરામાં બે તરતી કટોરી ધરવી. દુસરા ભોગ ધરી બહાર આવી બીડી આરોગાવવાના પાન સિદ્ધ કરવા, ફરી ઝારી ભરવી તે પછી "જય જય કૃપાનાથ" આવું એમ, આજ્ઞા લઈ ભીતર જવું, આચમન મુખ વસ્ત્ર કરી બીડાં ધરી ભોગ સરાવી, મંદિર ખાસા કરવું. ઝારીજી પધરાવવા.

શયન દર્શન : શયન ભોગ સર્યા પછી શ્રીકંઠમાં ફુલની એક માળા આવે, બે વૈજયંતી માળા ધરાય અને તે પછી દર્શન ખોલવા, વેણુંજી ધરવા, તે પછી આરતી કરી, દંડવત કરી હાથ ખાસા કરવા. વેણુંજી વડા કરવા અને ટેરો લેવો પછી ભીતર દરરોજ રાઈલુંણ કરવા પછી શૃંગાર વડો કરવો.

પોઢતી વખતે, નીચેનો શૃંગાર રહે.

શ્રીમસ્તક પર પાઘ, પગો અથવા છોટી ફુલ્હે-ઉપર શિરપેચ રહે. પાઘની લર રહે. મુખારવિંદના બધા આભુષણ રહે. કુંડલના બદલે કર્ણફુલ રહે, તનિયો રહે, દુલરી રહે, પહોંચી અને નુપુર રહે.

પોઢતી વખતે પહેલાં મુખવસ્ત્ર અને વેણુંજી પધારે. ડાબી બાજુ શ્રીમસ્તક પાસેના ગોળ તકિયા નીચે વેણુંજી મુખવસ્ત્રની ગડીમાં પધરાવવા.

ચરણારવિંદ તરફ લંબગોળ તકિયો ધરવો પછી શ્રીઠાકોરજીને પોઢાડવા. ઋતુ અનુસાર ચાદર રજાઈ ઓઢાડવા. ઝારી બીડા, ડાબી બાજુ ધરાય. ભોગનો બંટો શ્રીમસ્તક તરફ ધરવો, ચરણારવિંદ તરફ ડાબી બાજુએ મુઢાજી આવે તેની બાજુમાં સાંગામાંચી આવે. ત્યાર પછી તાળા મંગલ કરી દંડવત કરી બહાર આવવું.

* * *

॥ શ્રી દ્વારકેશોજયતિ ॥

(ગુજરાતી) શ્રાવણ વદ ૮, જન્માષ્ટમી

(નિયમના શંગાર)

શ્રી...ને જગાવવાથી ઝાંઝ-પખાવજ વાગે.

સાજ : જરદોજી આવે, એક નવો સાજ આવે તેના પર જરદોજી સાજ બંધાય.

મંગળ ભોગ : ઘેબરનો આવે. કેસરી સેલા મુખારવિંદના દર્શન થાય તેવી રીતે ઓઢે. કંઠમાં હાર ધરે, મંગલા આરતી બાદ કોરી હળદરનો ચોક પુરી તે પર પંચામૃતની ચોકી પધરાવવી

પંચામૃત સમયનો શૃંગાર : લાલ રેશમી ધોતી, ઉપરણાં સોનાનાં કડાં, કંદોરા, દુલરી, અને નૂપર ધરે, અલંકાર રહે. શ્રી મહાપ્રભુજીને દંડવત કરી શ્રીને બે વખત તિલક કરી, અક્ષત લગાવી, બે બીડાં ધરી, સંકલ્પ કરવો પછી બધા સાજમાં તુલસી સમર્પી, બીડાં સિંઘાસન પર પધરાવવા અને પછી પંચામૃત સ્નાન કરાવવું. દુધ, દહી, ઘી, ખાંડ અને મધ એ ક્રમથી સ્નાન કરાવી પછી દુધથી સ્નાન કરાવવું. ત્યાર બાદ પાંચ શંખ શીતલ જલથી સ્નાન કરાવી શૃંગાર વડો કરી અભ્યંગ કરાવી ગરમ જલથી સ્નાન કરાવી અંગ વસ્ત્ર કરી શૃંગાર કરવો.

શૃંગાર વસ્ત્ર : લાલ સુતરાઉ તનિયા અને પટકા, લાલ અતલસનું સુથન કેસરી દોરિયાનો રૂપેરી કિનારીનો ચાકદાર વાગો ધરે, ઠાડાં વસ્ત્ર બે રંગના, નીચેના લીલાં રેશમી, ઉપરના લાલ સુતરાઉ.

આભુષણ : ત્રણ જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) લીલાં (૩) સફેદ લીલી ઠેકડાની પહોંચી, સફેદ કડાં, જડાઉ હસ્ત સાંકળાં, સફેદ લીલી અને લાલ વીટીઓ, સફેદ નખ ભુષણ, ૧૧ આયુધના ફુલ. જેહર નુપૂર પગપાન લાલ, તોડા અને પાયલ સફેદ

અણવટ વીછીયાં લાલ, કટિમાં ક્ષુદ્રઘંટિકા ધરે, સફેદ કંઠાભરણ મોતીની દુલરી, કૌસ્તુભમણિ, સફેદ કુંડળ બન્ને હમેલ અને કંઠમાળા મોતીની ચરણ ચોકીની નીચેની કોર સુધી શૃંગાર, બિજોરાની અને જુઇની વૈજયંતી માળા, ચંદન હાર, નવી બે ગુંજામાળા સફેદ હાંસ, લીલા ત્રવલ, ટકમાં ચોકઠાં, સગી (ચોટી) સફેદ.

શ્રી મસ્તકે શૃંગાર : તિલક લાલ, અલકાવલી, બેસર લાલ, ચિબુક સફેદ, વેણુંવેત્ર, સફેદ નવી મોટા સાજની કુલ્હે. કુલ્હે પર સફેદ જડાઉ પાનતોરા, ગોટી પેચ, બે મોટી લર, ત્રવલ લટકન ૧૩ ચંદ્રિકાનો જોડ કપોલ પર કમલ પત્ર થાય.

શૃંગાર થતાં હોય તે સમય દરમ્યાન શ્રી...ના સિંધાસન નીચે તથા શ્રી મહાપ્રભુજી બિરાજે ત્યાં સુધી ભીની હળદીનો ચોક પુરાય, કુંમકુંમના થાપા દેવાય, અને બંદન બાર બંધાય.

શૃંગાર દર્શન : ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતાં તિલક થાય બીડાં ધરે શ્રી ઠાકોરજીને ભેટ કરવી. શ્રીફળ અને રૂપિયા ગાદીની જમણી બાજુ ધરવા અને તે પછી મુઠીયા વાળી ચુનની આરતી કરી ન્યોછાવર કરવી. દર્શન બંધ થયા પછી ભીતર શ્રીને પીતામ્બર અને માળા ધરાવી. ચંદન, ચોવા ગુલાલ અને અબીરથી સુક્ષ્મ ખેલ થાય અને ત્યારબાદ જન્મ પત્રિકા વંચાય અને તે પછી ગોપી વલ્લભભોગ આવે.

રાજાભોગ : પુરો ભોગ, રાયતુ ન આવે લુચઈને બદલે પચરંગી સામગ્રી બમણી આવે.

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગ આરતી મોતીની આવે અને રાજભોગ દર્શન બંધ થયા પછી શ્રીનંદરાયજી, શ્રી યશોદાજી અને ગોપી ગ્વાલને બીડાં અપાય.

સંધ્યા ભોગ દર્શન : સાંજે સંધ્યા ભોગમાં છુટી બુંદી આવે સંધ્યા આરતી મોતીની આવે. બંન્ને સમય બંટામાં જલેબી આવે.

શયન ભોગ : છડિયાળ દાળ, કઢીને બદલે શાક, પાપડ ન આવે. શયનમાં ખંડપાટ ચોપડ તકિયા રહે. વૈષ્ણવોને ત્યાં શયન પછી શ્રી...શૃંગાર સહિત પોઢી જાય. જન્મના દર્શન ન હોય. શયન આરતી મોતીની આવે. આરતી થયા પછી ટેરો લઈને શ્રી વેણુંજીના અનોસર થાય. પછી જાગરણના દર્શન ખૂલે. થોડા સમય પછી ચોકમાં પધરાવેલા ગોલ (જે ભંડારમાંથી દહી પધરાવવા માટે આવે છે તે પાત્ર) ની પૂજા થાય તે પછી તેમાં દહી પધરાવવામાં આવે.

જન્મનો સમય આવે ત્યારે જાગરણના દર્શન થાય, શૈયા મંદિરમાંથી શ્રીવેણુંજીને શ્રી...ની પાસે પધરાવી પંચામૃતની તૈયારી કરવી ટેરામાંથી બહાર આવી જવું બધા શાંતિ રાખે અને તે પછી શ્રી ભાગવતજીમાંથી દશમ સ્કંધના ત્રીજા અધ્યાયના ૮ાા શ્લોક જન્મ સમયના ત્રણ વાર બોલી "વ્રજ ભયો મહરકે પૂત" આ પદ બોલતાં ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતા જન્મના દર્શન ખોલવા.

શ્રી મહાપ્રભુજીને દંડવત પ્રણામ કરી તુલસીદળ ચંદનમાં લગાવી શ્રી...ના ચરણમાં સમર્પવું. બીજુ એક દળ ચંદનથી લગાવીને શ્રી શાલીગ્રામજીને ધરવું અને તે પછી સંકલ્પ કરવો. પંચામૃત સ્નાન કરાવવું પંચામૃત કરાવી ચંદનથી સ્નાન કરાવી શ્રી શાલીગ્રામજીને સિંધાસન પર પધરાવવા. દર્શન બંધ કરી પીતાંબર અને જુઇની માળા ધરાવી પૂર્વવત્ જણાવ્યા પ્રમાણે સુક્ષ્મ ખેલ કરવો. શીતલ ભોગ ધરવો. શીતલ ભોગ ધરી ઝારી ભરવી તે પછી આચમન કરાવી મહાભોગ ધરવો.

મહાભોગ : મહાભોગમાં સખડી, બાલભોગ દુધઘર અને ખાસા ભંડારની બધીજ સામગ્રી આવે. ફળફુલ આવે જલની મટકી આવે તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય. મહાભોગનો સમય છ ઘડી રહે. મહાભોગ ધરીને છઠ્ઠી પુજન કરવું.

શ્રાવણ વદ - ૯ નંદ મહોત્સવ

(નિયમના શૃંગાર)

(શ્રી વ્રભુષણજીનો ઉત્સવ....સંવત ૧૬૯૯)

શૃંગાર વસ્ત્ર : જન્માષ્ટમીના દિવસનો શૃંગાર વડો થતો નથી એટલે જન્માષ્ટમીના દિવસનો જ આવે. મહાભોગની આરતી થયા પછી પલનામાં બિરાજે પલનાની ડાબી બાજુ મિઠાઈની થાળ આવે શ્રી ઠાકોરજીને પલનામાં ભેટ થાય.

નંદ મહોત્સવનો ક્રમ : ભીતર શ્રી યશોદાજી વેશ ધારણ કરે અને શ્રી ગાદીજીની પાસે શ્રીનંદરાયજી અને ગોપી ગ્વાલ વેષ ધારણ કરે મહાભોગનો સમય થયે ભોગ સરે આચમન કરાવી બીડાં ધરવા અને બીડી આરોગાવવી. માલા ધરાવી ભીતર દર્શન થાય, આરતી મોતીની આવે. ન્યોછાવર કરવી તે પછી મધ્યના દ્વારમાં શ્રી વહુજી બેટીજી સુકી હળદીનો ચોક પુરી ચણાની દાળની ખીચડી અને હળદીની ગાંઠ તેની પર મુકે. પછી તેની પર આસન પાથરી પલના પધરાવવમાં આવે. શ્રીને પલનામાં પધરાવી માળા ધરાવવી. પાસે ખિલૌનાની તબકડીઓ આવે. બીડાંનો ડબરો આવે ચંદનની બરણી, ઝારી, કુંજા આ બધું જ સાહિત્ય તે સાથે આવે. પલના ભોગ ડાબી બાજુ ચોકી પર ઢાંકીને ધરવા. પ્રથમ તિકેટ શ્રીને પીતામ્બર ધરાવી ખેલાવે અને ભેટ ધરે અને તે પછી ઘરના સર્વે આ ક્રમ પ્રમાણે કરે અને ત્યારબાદ તિકેટ મંગલમ્ મંગલમ્ તથા પ્રેખપ્રયંક શયનમ્ આ પદ ગાઈને શ્રીને ઝુલાવે અને તે પછી શ્રી મહાપ્રભુજીને દંડવત કરી શ્રી જશોદાજીને પધરાવવા જાય. શ્રી યશોદાજીના ચરણ સ્પર્શ કરી ચાર વખત દંડવત કરી તેમનો શ્રી હસ્ત પકડીને પધરાવે. પાછળ શ્રી વહુજી બેટીજી બડી વધાઈ "પ્રથમહી ભાંદો માસ અષ્ટમી" ગાંતા આવે. શ્રી યશોદાજી શ્રીહસ્ત ખાસા કરી શ્રીને પીતાંમ્બર ધરાવી પલના ઝુલાવે.

તે પછી પલનાનાં દર્શન ખોલાવી. "એહો આજ નંદરાય કે આનંદ ભયો" આ પદ ગાતા શ્રીનંદરાયજીને પધરાવવા તિકેટ પધારે. શ્રીનંદરાયજી અને ગોપીગ્વાલને દંડવત કરી શ્રીનંદરાયજીને શ્રી હસ્ત પકડી પધરાવે. ગોપી અને ગ્વાલ સાથે જ પધારે.

શ્રી નંદરાયજીને મધ્ય દ્વારની પાસે ચોકમાં પટા પર પધરાવવા. બિરાજી રહે તે પછી નંદમહોત્સવ શરૂ થાય. જ્યાં સુધી નંદ મહોત્સવ દર્શન રહે ત્યાં સુધી શ્રી...બીડી આરોગે આરતી સમયે "રાનીજુ તિહારો ઘર સુબસ બસો" આ પદ ગવાય અને તે પછી ન્યોછાવર થાય. તે પછી શ્રીનંદરાયજીને તથા તિકેટને બીજા મુખ્યાજી માળા બીડાં આપે, પાછલા પગે ચાલતાં ઢાઢીનું પદ ગાતા શ્રીનંદરાયજીને પધરાવવા શ્રી...ના દર્શન થતા રહે ત્યાં સુધી પાછલા પગે પધારે, અને ગાદીજીની તિબારીમાં પધારે, ત્યાં દરજી શ્રી નંદરાયજીનો વેષ વડો કરે.

પલનાનાં દર્શન બંધ થયા પછી શ્રી...ને સિંઘાસન પર પધરાવી. મંગલ ભોગ ધરવો. આજે મંગળાથી શયન પર્યંત ચાલુ સેવા રહે.

મંગલભોગ : સેવના લાડુ

ગોપી વલ્લભ ભોગ : પાટીયાની સામગ્રી

રાજભોગ : ઉત્સવ પ્રમાણે

સંધ્યા : સંધ્યા આરતી પછી શૃંગાર વડો થાય અંગ વસ્ત્ર કરી અત્તર સમર્પી વનમાળા સુધી શૃંગાર રહે.

શયન દર્શન : શયનમાં શ્રી...કેસરી મોટો ઉપરણો ધરે

અનોસરમાં ડબલ બંટા આવે તેમાં બાલભોગ દુધઘર ખાસા ભંડારની સામગ્રી આવે તથા બાલભોગનો ફીકો પણ આવે.

શ્રાવણ વદ - ૧૦
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : બધા વસ્ત્ર જન્માષ્ટમી પ્રમાણે

આભુષણ : બે જોડીના (૧) સફેદ (૨) લાલ શ્રી કંઠનો શૃંગાર થોડો હલકો થાય.

શ્રી મસ્તકે : સફેદ મધ્યમ કુલ્હે ૧૧ ચંદ્રિકાના જોડ
ગ્વાલમાં ચોકી ભોગ ઢાંકીને આવે. ચાર પલના ગવાય ત્યાં સુધી ઝુનઝુના ફિરકની આદીથી ખેલે. ચોકી ભોગ, રાજભોગ સમયેરહે.

શયન દર્શન : શયનમાં વનમાળા સુધી શૃંગાર રહે.

શ્રાવણ વદ - ૧૧
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ શૃંગાર : મંગલા આરતી પછી ઉત્સવનો સાજ વડો થાય અને તે પછી સફેદી ચઢે

વસ્ત્ર : ચુંદડીનો બડો પીછોડા, સફેદ તનિયા અને સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : લીલા ચાર કર્ણફુલ અને વનમાલા સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા

શ્રાવણ વદ - ૧૨ બાલ લીલાનો શૃંગાર
(નિયમના શૃંગાર)

નીચે બતાવ્યા પ્રમાણે કોઈપણ એક, શૃંગાર કરવો

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી સુથન પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર કટિ પેચ સુધી શૃંગાર

આભુષણ : સફેદ

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મુગટની ટોપી

બીજો શૃંગાર

વસ્ત્ર : ગુલાબી ઝગુલી, ગુલાબી સુથન, મુંગિયા રંગનો તનિયા, કેસરી ઠાડાં વસ્ત્ર, ચાર કર્ણફુલ ફોંદના સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : મેઘશ્યામ જરોદજી તાજની ટોપી.

આ ઉપરાંત બીજા રંગના પણ વસ્ત્ર ધરી શકે.

શ્રાવણ વદ - ૧૩ છઠ્ઠીનો ઉત્સવ
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : પીળી, ઝગુલી, લાલ સુથન, શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : લાલ, કટિમાં ક્ષુદ્રઘંટિકા વનમાળા સુધી શુંગાર

શ્રીમસ્તકે : લાલ નાની કુલ્હે, ગ્વાલમાં પલને ઝુલે, અને પલના ભોગ ચોકી પર ઢાંકીને ધરવો. ચાર કીર્તન થાય. મોતીની આરતી થાય અને ન્યોછાવર આવે.

શ્રાવણ વદ - ૧૪
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજશ્રીના ઉત્સવની વધાઇ બેસે. આજથી ચાર દિવસ સુધી ગીત ગવાય અને નગારા બેસે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલનોર બડો પીછોડા, કોયલી ઠાંડા વસ્ત્ર

આભુષણ : સફેદ આભરણ. વનમાલા સુધી શૃંગાર, સફેદ કુંડલ, ચોટી આવે.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર દુમાલો, કામનો કતરા, ચંદ્રિકા

શ્રાવણ વદ - ૦)) અમાસ
(બાલ લીલાનો શૃંગાર)

શૃંગાર : નીચે બતાવ્યા પ્રમાણે કોઇપણ એક શૃંગાર આવે.

વસ્ત્ર : કિનારીની ધારીની લાલ સુથન, પટકા, પીળો તનિયા લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : કંઠાભરણ સફેદ, કંઠમાળા મોતીની, હમેલ કઠલા નાના મોટાં વાઘનખ, હસંલી સોનાની ત્રવલ નવરત્નની, કંઠી સફેદ વનમાળા સુધીનો શુંગાર, કડાં, સોનાનાં સાંકળાની જોડી પહોંચી બાજુ નવરત્નનાં મુદ્રિકા તથા શ્રી હસ્તના સાંકળા, કુંડલ, બેસર, ચોટી સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : જડાઉ મુગટની ટોપી, તેની ઉપર સોસની રેશમના ફોંદા ત્રણ મોતીની લર બે.

બીજો શૃંગાર

વસ્ત્ર : કેસરી જરોદજી ઝગુલી, કેસરી જરોદજી સુથન, લાલ તનિયા, પિરોજી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : દુલરી તથા કંઠમાળા મોતીની, હંસલી સોનાની, કંઠી ત્રવલ વિગેરે બધા આભરણ નીલમણિના.

શ્રીમસ્તકે : લીલા તાસની ટોપી, કર્ણફુલ લોલક બંદીના.

ભાદરવા સુદ - ૧
(નિયમના શૃંગાર)

ગીત નગારા વાગે, રાધાષ્ટમી સુધી ચોક મંડાય, બંદનબાર બંધાય, નવી ધજા આવે.

સાજ : કેસરી કિનારીની ધારીનો, સફેદી વડી થાય. જરદોજી ગાદી તકિયા આવે.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : કેસરી ધોતી ઉપરણા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ, સફેદ હાંસ, લીલી ત્રવલ, સફેદ કડાં, ચરણારવિંદ સુધીનો શુંગાર

શ્રીમસ્તકે : નાની કેસરી. કુલ્હે કામનો જોડ

ગોપીવલ્લભભોગ : દાળ તુવેરની, પકોડીની કઢી

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ સેવની ખીર, છડિયાલ દાળ, કઢીના બદલે તિનકુંડા, તિલવડી, પાપડ અને બન્ને પ્રકારના ભુજેના વડાની છાશ લુચ્ચઈમાં બુંદીના લાડુ, જીરાપુરી, બિલસારૂ, શિખરન વડી.

ભાદરવા સુદ - ૨

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજનો ઉત્સવ

પ્રાકટ્ય સંવત ૧૮૯૭. ૧૨૦ વચનામૃત કર્તા

સાજ : જરદોજી

મંગલભોગ : તવાપુરી

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : ગુલેનાર બડો પીછોડા, અને ગુલેનાર અંતરવાસનો પટકો લીલા ઠાંડા વસ્ત્ર કોયલી તનિયા

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) સફેદ. લીલી પહોંચી, સફેદ કડાં, લાલ સાંકળાં, સફેદ અને લાલ વીંટી, સફેદ નખભુષણ સફેદ જેહર, લાલ નુપુર, સફેદ લાલ અણવટ વીછીયા, લાલ પગ પાન, સફેદ પાયલ, ક્ષુદ્ર ઘંટિકા, આયુધના ફુલ, ટકમાં ચોકઠું ચરણ ચોકીની ઉપલી કોર સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર મધ્યમ કુલ્હે, પાનતોરા, ત્રવલ પેચ, નવ ચંદ્રિકાનો જોડ, સફેદ કુંડલ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ ચાર પ્રકારની ખીર આવે પાટિયાની ચોખાની સજાબની અને મણકાની ખીર.

સામગ્રી : જન્માષ્ટમી પ્રમાણે પાંચ ભાત, છડિયાળ દાળ, તીન કુંડા, કઢી, ભૂજેના પાપડ, મીરચફલ, તિલવડી, જલેબી, બુંદી, ફેની સફેદ અને કેસરી બિલસારૂ શિખરન વડી, જીરાપુરી પંજરી ફીકા, ખાંજા સુંઠની બુકની વડાની છાશ, બીજ કાચા અથાણાં, છોકયો મીઠો દહી, મનોહર તવાપુરી ખાસા ભંડારની બરફી, રસખોરા પાયેલા મેવા ફળફુલ

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગ આરતી મોતીની, ન્યોછાવર થાય રાજભોગ દર્શન પછી શ્રીપાદુકાજીને કેસર સ્નાન થાય, ન્યોછાવર થાય

સંધ્યા ભોગ : તવાપુરીનો

શયન : ગુલેનાર ઉપરણો તેના પર વનમાલા સુધી શૃંગાર, કેસરી મોટો ઉપરણો ઓઢે, ગુલબાંસની ફુલ મંડળી આવે શયન આરતી મોટી, અનોસરમાં બન્ને બંટા તવાપુરીના આવે.

ભાદરવા સુદ - ૩

(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : ગુલેનાર, મોટો પીછોડા, તનિયા અને ઠાડાં વસ્ત્ર લીલાં

આભુષણ : પચ્ચીના, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર નાની કુલ્હે કામનો જોડ

ભાદરવા સુદ - ૪
(નિયમના શૃંગાર)

ચિ. શ્રીરત્નેશકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૪૫
શ્રી પ્રબોધકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચુંદડીના કિનારી વાળા સુથન પટકા, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર

આભુષણ : સફેદ લીલા, સોનાના કડાં લોલક બિંદીના કર્ણફુલ, સુથનના ફોંદના સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડીની કુંજાની ટોપી

ભાદરવા સુદ - ૫
(નિયમના શૃંગાર)

(ગુપ્ત ઉત્સવ - શ્રી ચંદ્રાવલીજીનો ઉત્સવ)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : કેસરી બડો પીછોડા, કોયલી રંગના ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : લાલ, લીલા હાંસ ત્રવલ, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : કેસરી ફુલ્હે કામનો જોડ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, મનોહર બુંદી, જલેબી, શિખંડવડી, બિલસારૂ, જીરાપુરી, વડાની છાશ.

ભાદરવા સુદ - ૬
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બે ટુકનો પીળો પીછોડા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : લીલા લોલક બિંદી, પીછોડાના છેડા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : પીળો પગો, એક ચંદ્રિકા, બે કતરા.

ભાદરવા સુદ - ૭
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ બડો પીછોડા, પીળા ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : પીરોજાના લાલ ઝુમખાવાળા કર્ણફુલ, કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

ભાદરવા સુદ - ૮ રાધાષ્ટમી

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : જન્માષ્ટમીનો

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : જન્માષ્ટીના

આભુષણ : બે જોડીના (૧) લાલ (૨) સફેદ લીલી પહોંચી, આયુધના ફુલ, ચરણ ચોકીની મધ્ય સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મધ્યમ સાજની કુલ્હે, ૧૩ ચંદ્રિકાનો જોડ, કપોલ પર કમલ પત્ર થાય. જન્માષ્ટમીના તિલકનું પીતામ્બર ઓઢે. વૈજ્યંતી હાર ધરે.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, ફેણી મનોહર, પંજરી, શિખરનવડી, બિલસારૂ, ખાજાં, જીરાપુરી, સુંઠ છોકયો અને મીઠો દહી બીજ કાચાં સંધાણા, વડાની છાશ, ચારે પ્રકારની ખીર પાંચ પ્રકારના ભાત, તિલવડી, ઢેબરી ભૂજેના પાપડ બે રાયતાં, રાજભોગ સર્યા પછી પાંચ વધુ બીડા આવે.

રાજભોગ દર્શન : દર્શન બંધ થયા પછી ભીતર તિલક થાય, ભેટ શ્રીફળ ધરાય, આરતી ચુનની આવે ન્યોછાવર થાય, ઉત્થાપન ભીતર થાય, ભોગ સંધ્યામાં ઢાઢી નાચે.

શયન : શયનમાં છડિયાળ દાળ, મીઠો શાક આવે શયનમાં વનમાલા સુધી શૃંગાર રહે, અનોસરમાં રાતે બાલભોગ દુધઘર અને ભંડારની એક એક સામગ્રી અને ફીકાંની સામગ્રી આવે.

ભાદરવા સુદ - ૯

(નિયમોના શૃંગાર)

શ્રી ગિરધરજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૮૫૪

શૃંગાર

વસ્ત્ર : આગળના દિવસ પ્રમાણે (રાધાષ્ટમી પ્રમાણે) શ્રી કંઠનો શૃંગાર થોડો હલકો થાય, ટકમાં ચોકઠું આવે, સાંજે કટિપેચથી નીચે શૃંગાર રહે

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, ખોવાનાં ગુંજા, કેસરી દુધ

રાજભોગ દર્શન : આરતી મોતીની, ન્યોછાવર થાય.

ભાદરવા સુદ - ૧૦

શૃંગાર

વસ્ત્ર : શ્યામ મલ્લકાછ, શ્યામ મલ્લનો પટકા, ગુલાબી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ ટિપારો, રૂપેરી કામનો કતરા, ચંદ્રિકા

નોંધ : શ્રાવણ સુદ ૧૦ જો લીલા રંગના ધરે તો આજે શ્યામ રંગનાં ધરે અને જો તે દિવસે શ્યામ રંગના ધરે તો આજે લીલાં રંગના ધરે.

ભાદરવા સુદ - ૧૧ દાન એકાદશી
(નિયમના શૃંગાર)

(૧) શ્રી વ્રજાલંકારજીનો ઉત્સવ તૃતીય પુત્ર શ્રી બાલકૃષ્ણજીના પાંચમાં પુત્ર - સંવત ૧૬૪૧

(૨) શ્રી પુરૂષોત્તમજી લેખવાળાનો ઉત્સવ સંવત ૧૭૧૪

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ અતલસનું સુથન, નીચેની કાછની કોયલી રંગની, ઉપરની લાલ રંગની, બે ટુકનો લાલ પીતામ્બર, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ, એક નાની હમેલ, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મુગટ, સફેદ કુંડલ.

ગોપીવલ્લભભોગ : ગોપીવલ્લભ ભોગમાં પેડા અને મીઠું દહી આરોગે. દાનના મીઠાં દહીની મટકી આવે. દાનનું મીઠું દહી ભાદરવા વદ અમાસ સુધી નિત્ય ગોપીવલ્લભ ભોગમાં આવે.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઇને બદલે અનસખડીની સામગ્રી.

રાજભોગ દર્શન : મોતીની આરતી થાય ન્યોછાવર થાય.

સંધ્યા દર્શન : સંધ્યા આરતીના દર્શન બારાદ્વારીમાં થાય, સંધ્યા સમયે ઠાડાં વેણું વેત્ર ધરે.

જો દાન એકાદશી અને વામન દ્વાદશી એક જ દિવસે આવે તો શૃંગારનો ક્રમ નીચે પ્રમાણેરહે.

વસ્ત્ર : કેસરી સુથન, નીચેની કાછની લાલ, ઉપરની કેસરી, બે ટુકનો પીતામ્બર કેસરી, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ, હાંસ, અને ત્રવલ લીલાં, એક નાની હમેલ, મણિ ત્રસેટિયા જનોઇ, બે સોનાની તથા મોતીની, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ મુગટ, મત્સ્યાકૃતી કુંડલ લાલ.

ભાદરવા સુદ - ૧૨ વામન દ્વાદશી
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : કેસરી ધોતી-ઉપરણાં લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ બંને જનોઇ વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ કિરીટ.

રાજભોગ : કટોરાના સાજ લુચ્ચઇને બદલે બિલસારૂ, શિખરનવડી જીરાપુરી, વડાની છાશ,

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગ સર્યા પછી શાલિગ્રામજીને પંચામૃત થાય ત્યાર પછી શ્રી ઠાકોરજીને પીતાંમ્બર ઓઢાડી ચમેલીના ફુલની માળા ધરાવી ખેલ થાય

ઉત્સવ ભોગ : દહીભાત, સકરપારા, બુંદી, કચોરી, પેડા, છીંકયો, મીઠો દહીં, વડાની છાશ બીજ, સંધાણા. અને ફળફુલ એકાદશી પ્રમાણે ફલાહાર, એમાં સેવ અને ઘેંસ, તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય.

ભાદરવા સુદ - ૧૩
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી ધોતી ઉપરણાં, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ

નોંધ : દાન એકાદશી અને વામન દ્વદશી એક જ દિવસે હોય તો દ્વાદશીનો શૃંગાર તેરસે કરવો અને તેરસનો શૃંગાર બારસે કરવો.

ભાદરવા સુદ - ૧૪

શૃંગાર

વસ્ત્ર : લાલ ચુંદડીના સુથન પટકાં, ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ

આભુષણ : લીલાં

શ્રીમસ્તકે : લાલ ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા

ભાદરવા સુદ - ૧૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પચરંગી લહેરીયાનું સુથન બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર પંચરંગી લહેરીયાના સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ.

ભાદરવા વદ- ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીરોજાઇ રંગનો બડો પીછોડા, ઠાડાં વસ્ત્ર શ્યામ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : પીરોજાઇ રંગનો ફેંટા, ગુલાબી મખમલની કલગી.

ભાદરવા વદ- ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની, સુથન અને પીતાંમ્બર શ્યામ ચુંદડીના સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : મેઘશ્યામ ડાંકનો મુગટ.

ભાદરવા વદ- ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બદામી રંગનો બે ટુકનો પીછોડા, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : બદામી રંગની ગોળ, પાઘ, પીળા રંગની મોર શિખા

ભાદરવા વદ- ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા રંગનાં સુથન પટકા, શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લીલી ચકરીદાર પાઘ, લાલ કામનો કતરા.

ભાદરવા વદ- ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર પીળા, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર

આભુષણ : નીલમણિના.

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી ડાંકનો મુગટ.

ભાદરવા વદ- ૬
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી બાલકૃષ્ણજીના ઉત્સવની વધાઈ
ચોકપુરાય, બંદનબાર બંધાય.

સાજ : કેસરી

શૃંગાર વસ્ત્ર : કેસરી બડો પીછોડા, કોયલી રંગના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ - લાલ, આભરણ, હાંસ - ત્રવલ સફેદ, મકરાકૃતિ
કુંડલ ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : કેસરી ફુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : કટોરાના સાજ.

રાજભોગ દર્શન : મોતીની આરતી અને ન્યોછાવર થાય.

ભાદરવા વદ- ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કાછા અને મલ્લનો પટકો પીળો, ગુલાબી કટિનો પટકો શ્યામ ચુંદડીના ઠાડાં વસ્ત્ર, ખભાનો પટકો મેઘશ્યામ.

આભુષણ : પિરોજાના

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી કામનો ગુલાબી ટિપારો, સોનેરી કામના કતરા, મોરશિખા.

ભાદરવા વદ- ૮

શ્રીગોપીનાથજીના પુત્ર શ્રીપુરૂષોત્તમજીનો

ઉત્સવ સંવત ૧૫૮૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર લાલ ચુંદડીનું, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ

ભાદરવા વદ- ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ ચુંદડીનો બડો પીછોડા, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

ભાદરવા વદ- ૧૦

(નિયમના શૃંગાર)

ગીત નગારા બેસે

સાજ : જરદોજી, ગાદી તકિયા આવે. સફેદી વડી થાય.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી બડો પીછોડા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા, હાંસ - ત્રવલ સફેદ, ચરણાંરવિંદ સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે કામનો જોડ.

ભાદરવા વદ- ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન બન્ને કાછની અને પીતાંબર પીળાં, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ.

નોધ : શ્યામ અને લીલા રંગના વસ્ત્રો ન આવે બીજા બધા રંગ આવે.

ભાદરવા વદ- ૧૨

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગોપીનાથજીનો ઉત્સવ, સવંત ૧૫૬૭

શ્રી મહાપ્રભુજીના પ્રથમ લાલજી

સાજ : લાલ કિનારીનો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બંને કાછની અને પીતાંબર લાલ, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મુગટ.

ગોપીવલ્લભ : પાટિયાની સામગ્રી .

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ - છડિયાળ દાળ, તિનકુંડા, તિલવડી, પાપડ, સાદા લપેટ, મિરચ ફળ, પાટિયાની ખીર, બુંદી, જલેબી. શિખરન વડી, બિલસારૂં, જીરાપુરી, બડાની છાશ, સેવ ફીકાની, આરતી મોતીની ન્યોછાવર થાય, ચોક પુરાય, બંદન વાર બંધાય.

ભાદરવા વદ- ૧૩

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી બડે બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ શ્રી ગુંસાઈજીના ત્રીજા લાલજી સંવત ૧૬૦૬

શ્રી... ના જાગતાજ ઝાંઝ પખાવજ વાગે

સાજ : જરદોજી ભારે

મંગળ ભોગ : જલેબી, મંગળા આરતી મોતીની

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, કેસરી સુથન, કેસરી ચાકદાર વાઘો લાલ પટાકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર, લાલ, અને સફેદ, લીલી પહોંચી, સફેદ હાંસ, લીલી ત્રવલ, આયુધના ફુલ, ટકમા ચોકઠું, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : મોટા સાજની કેસરી કુલ્હે, ૧૧ ચંદ્રિકાનો જોડ, કમળ પત્ર થાય.

ગોપીવલ્લભ : સિંઘાસનથી શ્રી મહાપ્રભુજી બિરાજે ત્યાં સુધી ચોક પુરાય. ગોપીવલ્લભ ભોગ ધરીને ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતા ગીત ધોળ કીર્તન ગવાતાં, શ્રી બાલકૃષ્ણજીના પાદુકાજીને પધરાવી, તિલક અક્ષત કરી બીડાં ધરવા પછી બીડાં ઉઠાવી, દુધથી સ્નાન કરાવવું પછી જલથી સ્નાન કરાવી અંગ વસ્ત્ર કરી, પટા ઉપર પધરાવવા પછી શ્રી મહાપ્રભુજી, શ્રી ગુંસાઈજી તથા શ્રી બાલકૃષ્ણજીના પાદુકાજીને ક્રમથી અભ્યંગ સ્નાન કરાવવું, અંગ વસ્ત્ર કરાવી અત્તર સમર્પી ઉત્સવના તથા નિત્યના આભરણ ધરાવવા, પછી ગોપીવલ્લભ ભોગ ધરવો. ડબરા ભોગ સર્યા પછી ચોતરી ઉપર હળદીનો ચોક પુરી શ્રી બાલકૃષ્ણજીને પધરાવવા માળા ધરાવી ખેલ કરવા પછી રાજભોગ ધરવો.

રાજભોગ : જન્માષ્ટમી પ્રમાણે. પૂરો ભોગ આવે. સમય ૨ા ઘડી વધુ ભોગ સર્યા પછી નિજ મંદિર, શૈયા મંદિર, આરતી ઘર, જલઘરા, ડોલતિબારી જગમોહન તે તે દ્વાર પર થાપા દેવાય

રાજભોગ દર્શન : વેણું વેત્ર ધરાવી, આરસી બતાવી, ઝાલર ઘંટા વાંગતાં તિલક થાય. મોતીની આરતી થાય, ન્યોછાવર થાય, પછી વેણું વેત્ર વડા કરી ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતા શ્રી મહાપ્રભુજી, શ્રી ગુંસાઈજી તથા શ્રી બાલકૃષ્ણજીને તિલક કરી અક્ષત લગાવી બીડાં ધરી, ભેટ ધરીને, ચુનની આરતી કરવી, ન્યોછાવર કરવી, જન્મ પત્રિકા વંચાય અનોસરમાં પલના આવે. જલેબીનો બંટો આવે.

સંધ્યા ભોગ : બુંદીનો, સંધ્યા આરતી મોતીની.

શયન : વનમાળા સુધી શૃંગાર, છોટી કુલ્હે ધરે શયન ભોગમાં છડિયાળ દાળ, રતાળાનું શાક, શયન આરતી મોતીની આવે.

ભાદરવા વદ - ૧૪

(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર :

શ્રીમસ્તકે : મધ્યમ સાજની કુલ્હે, પટકા ન આવે. ખુલ્લે બંધી વાગો ધરે, બાકી બધો શૃંગાર તેરસ પ્રમાણે અનોસરમાં પલના આવે.

રાજભોગ : સામગ્રી આવે.

ભાદરવા વદ - 0)) અમાસ

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : આજે સફેદી - ચઢે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચુંદડીનો બડો પીછોડા, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા, લીલાં ચાર કર્ણફુલ, વનામાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

આસો સુદ - ૧ પ્રથમ નવરાત્રિ

(નિયમના શૃંગાર)

ચિ. પ્રણવકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૧૯
શ્રી અક્ષયકુમારજીના લાલજી

સાજ : લાલ છાપાનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : પીળી ધોતી, લાલ છાપાના ખૂલ્લે બંધના વાઘા, લીલાં છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ - લીલા, લીલી જોડી, કડાં અને પહોંચી સફેદ, મકરાકૃતિ કુંડલ, લાલ હાંસ ત્રવલ, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છાપાની નાની ફુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઈને બદલે ઝીણી સેવના લાડું, આજથી નવ દિવસ રાયતું ન આવે.

આસો સુદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ છાપાનું સુથન, નીચેની કાછની લાલ છાપાની, ઉપરની કાછની લીલા છાપાની, લાલ છાપાનું પીતામ્બર, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ લુચઈને બદલે મોહન-થાળ

નોંધ : આભરણ અને વસ્ત્રના રંગ બદલી શકાય.

આસો સુદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા છાપાનો ખુલ્લે બંધનો વાઘો, લીલું સુથન, મેઘ શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લીલા છાપાનો ફેંટા, કામની ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઈને બદલે પપચી.

આસો સુદ - ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી છાપાનું સુથન, કેસરી છાપાનો ઘેરદાર વાઘો, ગુલાબી છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છાપાની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ લુચઈને બદલે શીકોરી.

આસો સુદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : શ્યામ છાપાનું સુથન, શ્યામ છાપાની બન્ને કાછની, શ્યામ છાપાનું પીતામ્બર, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર

આભુષણ : સફેદ

શ્રીમસ્તકે : રૂપેરી ડાંકનો મુગટ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ લુચઈને બદલે મનોહર

નોંધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય

આસો સુદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ છાપાનું સુથન, સફેદ છાપાનો ખુલ્લે બંધનો વાઘો, લીલા છાપાના ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : સફેદ છાપાનો દુમાલો, કામનો કતરા ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઇને બદલે પૂવા, વડીની કઢી

આસો સુદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી છાપાનું સુથન, ગુલાબી છાપાનો ચાકદાર વાઘો, કેસરી છાપાનો અંતર વાસનો પટકા, છાપાનાં ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ - લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છાપાની છજેદાર પાઘ, જડાઉ સેહરા

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ લુચઇને બદલે ઘેરવડી, ખંડરાની કઢી.

આસો સુદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળાં રંગના છાપાનું સુથન, પીળાં રંગની બન્ને કાછની અને પીતામ્બર, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : નીલ મણિના.

શ્રીમસ્તકે : પીળો ડાંકનો મુગટ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ આવે, મીઠી કચોરી, ચીલ્લાની કઢી, છાશ પકોડીની

નોંધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

આસો સુદ - ૯

ચિ. શ્રી રવિકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૫
શ્રી રાજેન્દ્ર કુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી છાપાનો મલ્લકાછ, કેસરી છાપાનો મલ્લનો પટકા ગુલાબી છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : લાલ ટિપારો, જડાઉ કતરા, મોર શિખા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, ખોવાના ગુંજા.

નોંધ : નવરાત્રિમાં કોઇ દિવસ ઘટે તો તે દિવસની સામગ્રી બીજા દિવસે સાથે ધરાય, જો કોઇ દિવસ વધે તો તે દિવસે ઘાંસના લાડું આવે. જવેરા વવાય. જે દિવસથી સરસ્વતીની સ્થાપના થાય તે દિવસથી ભોગ - સંધ્યામાં ગાદીજી પાસે શસ્ત્ર ધરાય અને કરખા ગવાય.

આસો સુદ - ૧૦ દશેરા
(નિયમના શૃંગાર)

(શ્રી વ્રજભુષણજીએ આજે શ્રીનાથજીને ઘસ્યાઢથી નાથદ્વારા પાછા પધરાવ્યા)

સાજ : સફેદ કારચોબીનો, ગાદી તકિયા, જરદોજી, સફેદી વડી થાય.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, લાલ અતલસનું સુથન, સફેદ કારચોબીનો બંધે બંધનો ચાકદાર વાઘો, લાલ પટકા, લીલાં રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : બેજોડીના શૃંગાર (૧) લાલ (૨) લીલાં, સફેદ કડાં અને પહોંચી સફેદ કુંડલ, લાલ હાંસ, લીલી ત્રવલ બંને હમેલ ચરણ ચોકીની ઉપલી કોર સુધી શૃંગાર, બે વૈજ્યંતી હાર, ટકમાં ચોકઠું ચારેય શ્રીહસ્તમાં ઇચ્છાનુંસાર શસ્ત્ર ધરાય જડાઉ સોનાની મુઠવાળી કટાર કટિમાં બંધાય.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મધ્યમ કદની કુલ્હે, કુલ્હે પર મધ્યમ કદના તુરા, પાનને બદલે સફેદ કલગી. સાત ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, પુરો ભોગ, ગ્વાલ પછી ઝાલર ઘંટા વાગતા શ્રીનાથજી પધારે કેસરી મોઠરાદાર ઉપરણો ઓઢે, વૈજ્યંતી હાર માલા પહેરે, શસ્ત્ર ધરે.

રાજભોગમાં શ્રીનાથજીની આગળ સખડી, અનસખડી બધું જ જુદું જુદું આવે, રાજભોગ સરે ત્યારે શ્રીનાથજીના આચમન પછી બીડી આરોગે, ત્યાર પછી ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતા તિલક થાય. ચુનની આરતી થાય ન્યોછાવર થાય

પછી પધારે. ત્યાર પછી નિત્યક્રમ થાય (આ ક્રમ ફક્ત કાંકરોલીમાં જ હોય છે)

ઉત્થાપન : સાંજે ઉત્થાપન ભોગ સર્યા પછી ખંડપાટ ઉઠાવી લેવાય. ભોગ સંધ્યામાં ઝાલર ઘંટા વાગતાં તિલક થાય જવારાની કલગી પણ ધરાય. આરતી થાય પછી જવારાનું પૂજન થાય ત્યારબાદ ઉત્સવ ભોગ આવે. માટ અને કચોરીનો.

શયન : શ્રીકંઠમાં સફેદ આભરણ રહે. શ્રીકંઠનો બાકીનો બધો શૃંગાર વડો થાય. શ્રીમસ્તકનો બધો શૃંગાર કુંડલ અને જવારા રહે. એક શ્રીહસ્તમાં (જમણી બાજુ નીચેના શ્રીહસ્તમાં) ઢાલ તલવાર રહે.

નોંધ : જો દશેરા નોમના દિવસે હોય તો દશમના દિવસે નીચેનો શૃંગાર આવે

વસ્ત્ર : સફેદ કારચોબીનો ઘેરદાર વાઘો, લાલ અતલસનું સુથન, લીલાં રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ, લીલા, શૃંગાર હલકો.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છાપાની છજેદાર પાઘ સાદી ચંદ્રિકા

આસો સુદ - ૧૧

શૃંગાર

વસ્ત્ર : લાલ અતલસનું સુથન, સફેદ કારચોબીની બન્ને કાછની, લાલ રેશમી પીતામ્બર, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ, લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ.

નોંધ : આજે નિત્યની સામગ્રીમાં માટના ટુક આવે.

આસો સુદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ કારચોબીનું સુથન, લાલ કારચોબીનો ઘેરદાર વાઘો, પીળાં રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : લાલ કારચોબીની છજેદાર પાઘ, રૂપેરી લુમ તોરા.

આસો સુદ - ૧૩

(નિયમના શૃંગાર)

છપ્પનભોગ ઉત્સવ સંવત ૧૯૪૨

શૃંગાર : લાલ જરીનું સુથન, લાલ જરીનો ચાકદાર વાઘો, સફેદ જરીનો કટિનો પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ - લીલા.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીની કુલ્હે, કામનો જોડ, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

આસો સુદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી રેશમી સુથન - પટકા. પીળાં રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા ગોળ.

આસો સુદ - ૧૫ શરદ પૂર્ણિમા
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : સફેદ જરીનો

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ અતલસનું સુથન, સોનેરી કિનારીની શ્યામ ચોળી, નીચેની કાછની સફેદ જરીની, ઉપરની કાછની લાલ જરીની, લાલ રેશમી કિનારીવાળુ પીતાંબર, ઠાડાં વસ્ત્ર સફેદ.

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર, સફેદ અને પચ્ચીની પહોંચી, કડાં, સાકળાં, મુદ્રિકા નખભુષણ બધા સફેદ, બન્ને હમેલ, હાર, પદક સફેદ, મયુરાકૃતિ કુંડલ સફેદ, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : પચ્ચીનો મુગટ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે ચંદ્રકળા.

શયન : બધો શૃંગાર રહે, ચોકમાં ચાંદનીમાં બિરાજે, જરીની પિછવાઈ આવે, બધા વસ્ત્ર સફેદ આવે, ચાર કેળ બંધાય, ખંડપાટનો સાજ બિછાવાય, આરતી ન્યોછાવર થાય, પોઢતી વખતે સફેદ છજેદાર પાઘ આવે, રાત્રે અનોસરમાં ચંદ્રકળા, કચોરી, ખીર, છોંકયો દહીં, બીજ, સંઘાણા, ફળફુલ, પેડા, બાસોંદીનો ભોગ આવે.

આસો વદ - ૧ બીજી શરદ
(નિયમના શૃંગાર)

મંગળા દર્શન : ચોકમાં થાય

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સફેદ જરીની બંને કાછની, પીતામ્બર સુથન અને ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ મયુરાકૃતિ કુંડલ, વનમાલા સુધી શુંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ સોનેરી કિરણનો મુગટ

શયન : સફેદ જરીના સુથન પટકા,સફેદ ચોળીને શ્રી કંઠનો શૃંગાર, સુથનના પટકા સુધી.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીનો ચીરા, શયનમાં ચોકમાં બિરાજે, શયન પછી પોઢતાં શ્રીમસ્તકે સફેદ છજેદાર પાઘ આવે. શૈયા મંદિરમાં પોઢે, શરદ પુનમની જેમ રાત્રે અનોસરમાં ભોગ આવે.

આસો વદ - ૨
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગિરધરલાલજીના ઉત્સવની વધાઈ
ગીત ગવાય નગારા બેસે

મંગળા દર્શન : ચોકમાં થાય.

શૃંગાર : અન્નકુટનો શૃંગાર થાય.

વસ્ત્ર : તનિયા લાલ, સફેદ જરીનું સુથન, સફેદ જરીનો ચાકદાર વાઘો, પટકા લાલ, કેસરી રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં, લાલ હાંસ ત્રવલ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીની નાની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

આસો વદ -૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : પીળી જરીનું સુથન અને ચાકદાર વાઘો, લાલ જરીનો કટિનો પટકા, શ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : પીળી જરીનો દુમાલો, કામનો કતરા, ચંદ્રિકા.

આસો વદ - ૪

શૃંગાર

વસ્ત્ર : મેઘ શ્યામ જરીનું સુથન અને ઘેરદાર વાઘો, ગુલાબી રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ

શ્રીમસ્તકે : મેઘ શ્યામ જરીનો ચીરા, પીળી કામની મોર શિખા.

આસો વદ - ૫
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગિરધરજી મહારાજનો ઉત્સવ પ્રા. સં. ૧૭૪૫

સાજ : કેસરી જરીનો

શૃંગાર

વસ્ત્ર : પીળા તનિયા, લાલ જરીનું સુથન અને ચાકદાર વાઘો, પીળો જરીનો કટિનો પટકા, મેઘશ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં અને સફેદ, કડાં, પહોંચી અને કુંડલ સફેદ, હાંસ ત્રવલ લાલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ ટિપારો, કામની ચંદ્રિકા, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ

શયન : સાંજે શયનમાં જરદોજી, સાંગા માચી પર બિરાજે શ્રી કંઠમાં સુથનના ફુમતાં સુધી શૃંગાર, કર્ણફુલ, શ્રીમસ્તકે ટિપારો રહે, ટકમાં ચોકઠું આવે, જરદોજી બગલ તકિયા આવે, દીપમાલા પ્રગટે, પોઢતી વખતે કેસરી કુલ્હે ઘરે.

આસો વદ - ૬
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : ગુલેબાસી જરીનો સુથન અને ઘેરદાર વાઘો, પીળા રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના

શ્રીમસ્તકે : ગુલેબાસી જરીનો ચીરા, રૂપેરી ડાંકની મોરશિખા, મોતીની લુમ, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

આસો વદ - ૭ પહેલો નવ મહલા
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજી મહારાજ ગાદી બિરાજ્યા ઉત્સવ સવંત ૧૯૩૬ તથા શ્રી બાલકૃષ્ણજીના દ્વિતીય પુત્ર શ્રી પુરુષોત્તમજીનો ઉત્સવ સવંત ૧૯૬૬

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, લાલ જરીનું સુથન તથા ચાકદાર વાઘો પીળાં સુતરાઉ કટિનો પટકા, અંતરવાસનો પટકા લાલ જરીનો, લીલા રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ લીલા, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીનો ચીરા, સફેદ જડાઉ સેહરા

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઈને બદલે મદન દીપક

સંધ્યા : સાંજે સંધ્યા ભોગમાં નવ મહલાનો ભોગ આવે, ફેણી, બાબર, ઘેબર, મેવાટી, ફીકાની ચાર સામગ્રી, કચોરી, આખા ચણાં, ચણાની દાળ, અને સેવ, છોકયો દહી, બીજ, કાચા સંધાણાં પેડા

શયન : શયનમાં નવમહોલામાં હટડીમાં બિરાજે.

આસો વદ - ૮ બીજો નવમહલા
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન બંને કાછની અને પીતામ્બર સોસની જરીના, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મુગટ

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગ દર્શનમાં સિંઘાસન પર ચાંદીનો બંગલો આવે.

સંધ્યા : સાંજે સંધ્યાભોગમાં નવ મહલાનો ભોગ

સામગ્રી : મગની દાળની મીઠી કચોરી, ખોવાના ગુંજા, બે ફીકાની સામગ્રી, કચોરી અને સેવ, છોકયો દહી, બીજ, કાચા સંધાણા, દુધઘરના પેડા.

શયન : શયનમાં નવ મહલામાં બિરાજે.

આસો વદ - ૯ ત્રીજો નવમહલા
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર : આસો વદ ૨ પ્રમાણે અન્નકુટનો શૃંગાર થાય. ઉત્થાપન સમયે નવ મહલામાં બિરાજે. સંધ્યા ભોગમાં નવ મહોલાનો ભોગ આવે, દુધપૌવા, કાચાં સંધાણા, દુધઘરના પેડા, ચણાંની દાળની તવાપુરી, ફીકા બે, એક કચોરી અને બીજી કોઈપણ ઈચ્છા પ્રમાણે, છોકયો દહી.

શયનમાં નવ મહલામાં સાંગામાંચી પર બિરાજે વનમાળા સુધી શૃંગાર રહે.

આસો વદ - ૧૦
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : પીળી જરીનો ચાકદાર વાઘો, લાલ જરીના પટકા, શ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : પીરોજાના, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : પીળી જરીનો દુમાલો, કામનો કતરા ચંદ્રિકા.

શયન દર્શન : હાથી દાંતના બંગલામાં બિરાજે, શયન ભોગમાં બરફી આરોગે.

આસો વદ - ૧૧ દિવાળીની વધાઈ
(નિયમના શૃંગાર)

નગારા બેસે

સાજ : શ્યામ જરીનો.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : તનિયા પીળાં, શ્યામ જરીનું સુથન અને ચાકદાર વાઘો, પીળાં જરીના પટકા, પીળા રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ, લીલા ચાર કર્ણફુલ, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ જરીનો છજેદાર ચીરા, કામની ચંદ્રિકા.

શયન દર્શન : શયનમાં હાથી દાંતની સાંગામાચી પર બિરાજે. શયન ભોગમાં પેડા આરોગે.

આસો વદ - ૧૨
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : પીળી જરીનો

શૃંગાર

વસ્ત્ર : શ્યામ તનિયા, પીળી જરીના સુથન, અને ચાકદાર વાઘા, શ્યામ જરીના પટકા, શ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ, લાલચાર કર્ણફુલ, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : પીળી જરીનો છજેદાર ચીરા, કામની ચંદ્રિકા.

શયન દર્શન : કાચના બંગલામાં બિરાજે, શયન ભોગમાં કેસરી પેડા આવે.

આસો વદ - ૧૩ ધન તેરસ
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : લીલી જરીનો, લીલા જરદોજી ગાદી તકિયા આવે.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : તનિયાલાલ, લીલી જરીનું સુથન, અને ચાકદાર વાઘો, પટકા લાલ જરીના, ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ રેશમી.

આભુષણ : સફેદ, સફેદ ચાર કર્ણફુલ, વનમાળા સુધી શુંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લીલી જરીનો ચીરા, કામની ચંદ્રિકા

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, પકોડીની છાશ, લુચ્ચઈને બદલે શીરો, સંજાબની ખીર, રાયતું ન આવે ધન સવારે રાજભોગ ધરીને ધોવાય. રાજભોગથી શયન સુધી કાચના બંગલામાં બિરાજે, શયન ભોગમાં બરફી આવે.

આસો વદ - ૧૪ રૂપ-ચતુર્દશી

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : લાલ જરીનો
મંગળા થયા પછી શૃંગાર વડો કરી સ્નાન ચોકી પર પધરાવી ફુલેલ સમર્પવું પછી ઝાલર ઘંટા વાગતાં તિલક કરી ચુનના દિવા વારીને પછી અભ્યંગ થાય.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લીલાં તનિયા, લાલ જરીનું સુથન, અને ચાકદાર વાઘો, લીલી જરીના પટકા, લીલા રેશમી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ અને લીલાં, સફેદ કુંડલ, હાંસ ત્રવલ ખુલતા રંગનાં ધરાય, સફેદ કડાં, પહોંચી સફેદ અને લીલી, જેહર પાયલ, અણવટ, વીછીયા ધરાય, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીનો ચીરા, સફેદ ચાર કલગી, લુમતોરા, કતરા, ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે ગુદડીયા પુવા, ઘી અને ખાંડની કટોરી સંજાબની ખીર, રાયતું ન આવે.
રાજભોગમાં સોનાનાં બંગલામાં બિરાજે.

શયન દર્શન : ગંગા જમની અષ્ટ કોણ બંગલામાં બિરાજે.

આસો વદ -0)) દિવાળી

(નિયમનાં શૃંગાર)

સાજ : સફેદ જરીનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, લાલ અતલસનું સુથન, સફેદ ચાકદાર વાઘો, અમરસી રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : જન્માષ્ટમી પ્રમાણે ત્રણ જોડીનો.

શ્રીમસ્તકે : મોટી સફેદ જરીની ફુલ્હે, પાનતોરા, ૧૧ ચંદ્રિકાનો જોડ ટકમાં ચોકઠું.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે દીવડા, વડાની છાશ, રાયતું ન આવે, રાજભોગ આરતી મોતીની, સાંજે ઉત્થાપન ભોગ અને સંધ્યા આરતીમાં ગંગા જમની બંગલામાં બિરાજે.
શયન વખતે કાન જગાવવા કાન તિબારીમાં પધારે. કાન જગાવતી વખતે શાલ આડી રાખી દુધની મટકી આરોગે. પછી બીડી આરોગે પછી ગાય ખેલાવી કાન જગાવાય તે પછી હટડીમાં પધારે તિબારીમાં હટડી સજાય તિબારીમાં સાંગામાચી પર બિરાજે હટડીની આરતી થાય, ન્યોછાવર રાઈલોન થાય. શૈયા મંદિરમાં સફેદી બિછાવી ચારે બાજુ ગાદી - તકિયા બિછાવાય, વચ્ચે ચોપડ બિછાવાય, ચારેય ખૂણામાં બીડાનું કુંડું મુઢાજી, મીઠાઈની થાળી અને તેજાનાની થાળીમાં સોપારીના કટકા, અત્તર, ચોવા, ચંદન, ગુલાબ દાની, ફુલેલ વિગેરે આવે. હટડીના ભોગમાં મહાભોગ પ્રમાણે મીઠાઈ આવે દુધઘર અને ભંડારની સામગ્રી આવે હટડીની ભેટ ચોપટમાં પધરાવાય. ત્યારબાદ શૃંગાર વડો થાય અને શૈયા મંદિરમાં પોઢે.

કારતક સુદ - ૧ અન્નકુટ.

(નિયમના શૃંગાર)

સર્વ સામગ્રી સિદ્ધ થઈ ગયા પછી શ્રી..... ને જગાવવા.

મંગળભોગ : સેવૈયા (સેવ) ના લાડુ.

શૃંગાર : વસ્ત્ર દિવાળીના દિવસે ધરેલાં જ રહે.

વસ્ત્ર : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) લીલાં લીલી પહોંચી.

આભુષણ : સફેદ કડાં અને નખ ભુષણ મુદ્રિકા બે લાલ અને સફેદ, સાંકળા સફેદ, ક્ષુદ્ર ઘંટિકા ચરણારવિંદના આભુષણ લાલ. લીલા, ચરણારવિંદ, સુધીનો શૃંગાર. હાર, પદક, કંઠી વિ. બધા લાલ. સફેદ અને લીલાં. ચારેય શ્રી હસ્ત. ખૂલ્લા રહી દર્શન થાય તેવી રીતે કંઠી વિગેરે ધરે.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીની મધ્યમ કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ, સફેદ ત્રવલ, મોતીની લર, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

સાજ : જરદોજી

રાજભોગ : રાજભોગ સર્યા પછી ખંડપાટ બિછાવ્યા વિના આરતી ન્યોછાવર થાય.

ગોવર્ધન પુજા : ગોબરના ગોર્વધન - ઉત્તર દક્ષિણ લંબાઈ, દક્ષિણ તરફ. પૂચ્છ, મધ્યમાં શ્રી ગિરિરાજજીને પધરાવવાનો ખાડો રાખવો તે ઉપર કેળ કનેર વૃક્ષો આદિ રોપવાં ઘીના ચાર દિવા કરવા તે પછી શ્રીને સુખપાલમાં પધરાવવા. સિંહસન પર ગાદી તકિયા પર શ્રીને પધરાવી, ફુલમાળા વૈજ્યંતી હાર ધરવા, શ્રી.... ને વસ્ત્રની આડ કરી દુધ અને દહીની હાંડી આરોગાવવી પછી બીડી આરોગાવવી.

પ્રણામ કરી શ્રી ગિરિરાજજીને પધરાવવા, તિલક કરવું. પછી શંખથી માનસી ગંગાના જલથી, દુધ દહીથી, અને જલથી, સ્નાન કરાવવું. શંખથી હળદર કુમકુમ ચંદન છીરકી થાપા દેવા. પછી ઉપરણા ઓરાઢી, માળા ધરી, તુલસી સમર્પી, તિલક કરવુ પછી કુનવારાનો ભોગ ધરી તુલસી શંખોદક, ધૂપદીપ કરી સમય થયે આચમન કરાવી. મુખવસ્ત્ર કરી બીડાં ધરી આરતી કરવી, દંડવત કરવા. પરિક્રમા કરી દડંવત કરવા શ્રી ગિરિરાજજીને બે વખત કેસરથી સ્નાન કરાવી અંગ વસ્ત્ર કરી પાતાંમ્બરમાં લપેટી ગાદી પર પધરાવવા પછી ગાય ખેલાવવી.

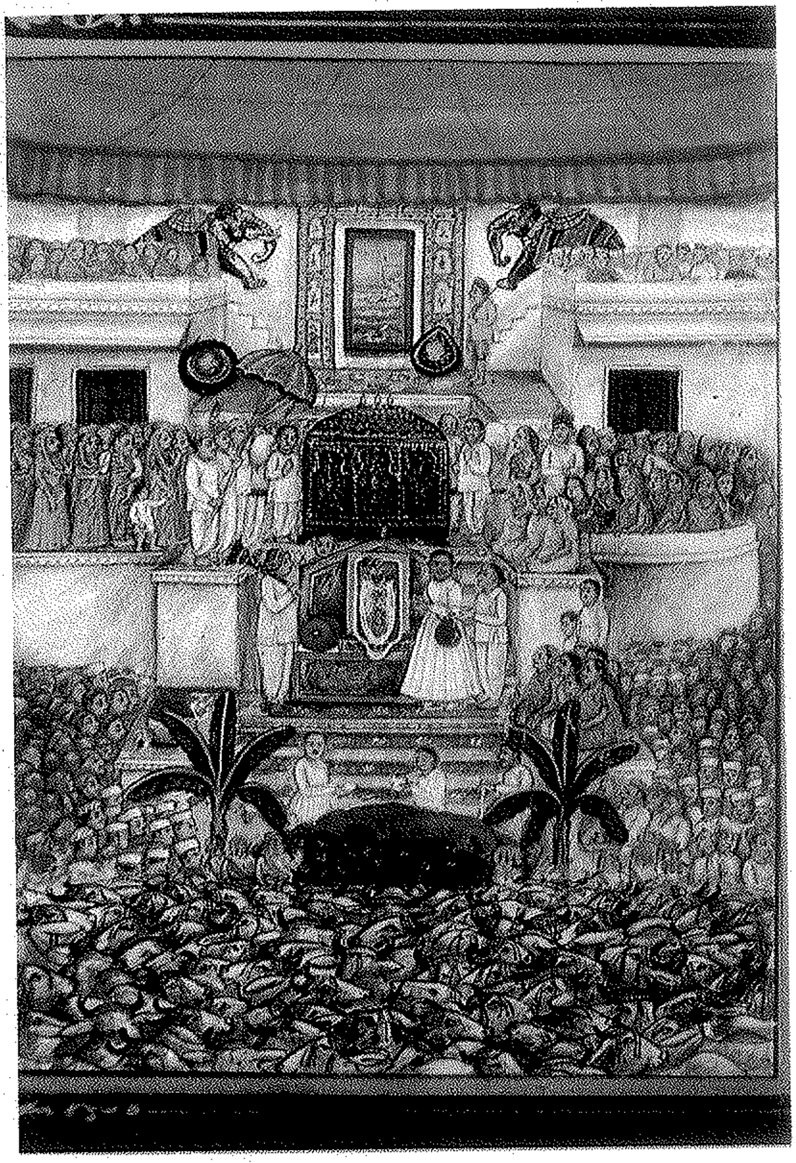

પછી શ્રી.... ને સુખપાલમાં મંદિરમાં પધરાવવા સિંહાસન પર પધરાવી માળા ધરવી, વેણું વેત્ર ધરાવી તિલક અક્ષત કરી બીડા ધરી આરતી ન્યોછાવર કરી, વેણું વેત્ર વડા કરવા.

અન્નકુટના ભોગ : પહેલા શીતલ ભોગ ધરવો.

અન્નનકુટનો ચોક પુરી બીડામાં પાટિયાની સેવ પધરાવવી. તે પછી ભાત પધરાવવો, પછી ઝારી ભરી શીતલ ભોગ સરાવવો. કટોરીમાં આચમન, બીડા નહી. પછી ખંડ માંડી દુધ અને માખણ મિસરી, કેસરી બાસુંદી, ધરવા. પછી દુધઘર અને અનસખડીની સામગ્રીઓ ધરવી. સખડીની મધ્યમાં શિખર પધરાવવું, શ્રી ..... ની સામે પદ્મનું ગુંજા આવે. શ્રી......ના ડાબા શ્રીહસ્ત તરફ ગદાનું ગુંજા, શંખનું ગુંજા શ્રી....ના જમણા શ્રીહસ્ત તરફ, ચક્રનું ગુંજા પાછળ આવે તે ઉપર તુલસી માળા ધરાવવી. ઘીની નાની ચપટિયા ધરવી. પછી આજુબાજુ સર્વ સામગ્રી સખડીની ધરવી. બધી સામગ્રીમાં તુલસી સમર્પવા. શંખોદક ધૂપદીપ થાય તે પછી મંદિરની પરિક્રમા કરવા જવું. મંદિરની પરિક્રમા કરીને આવે ત્યાં સુધી ભોગ રહે તે પછી ભોગ સરાવી આચમન મુખવસ્ત્ર કરી બીડાં ધરવા. ઝારી ભરવી તેજાનો મિલાવીને ધરવો થોડીવાર પછી ફરી બે વખત ઝારી ભરી આરતી ન્યોછાવર કરવા.

પછી શ્રી.... ને નિજમંદિરમાં પધરાવી શીતલ ભોગ ધરી ઝારી ભરવા. ચાલુ સેવા રહે. શીતલભોગ સર્યા પછી ઉત્થાપનભોગ, સંધ્યા ભોગ ભેગા આવે. મોતીની આરતી સંધ્યામાં થાય. તે પછી શૃંગાર સર્વ વડો થાય. લાલ કુલ્હે શ્રીમસ્તકે ધરી જરીની ઓઢણી ઓઢે શૈયામાં રજાઇ ઓઢીને પોઢે.

અન્નકુટની સામગ્રી

(૧) સખડી :- ભાત, મગ, ચણા, અડદ, તુવેરી છડિયાળ દાળ, તિનકુડા ચણાવડી કઢી, પકોડીની, ખંડરાની, મીઠી

ચટાઈની સેવા, ઢેબરી, તિલવડી, કચરિયા, ભૂજેના, દહીવડા, કોરા વડાં. બધા પ્રકારનો ભાત, ખીર પાટિયાની અને મણકાની ચોખાની થુલી, પાપડ, પાતરાં સર્વ પ્રકારના શાકભાજી, રાયતાં.

(૨) અનસખડી :- ગુંજા, મઠડી, સેવૈયા, ફેણી બાબર સકરપારા, જલેબી કપુરનારી, ખરમંડા, છુટી બુંદી, ઈદરસા, મેવાટી, મનોહર, લાલપુવા ગુદડિયાપુવા, શિખરનવડી, સુહારી ચકુલી સેવ.

(૩) દુધઘર :- મિશ્રી માખણ મલાઈ, શિખંડ, બરફી પેડા, બાસોંદી, સુકોમેવો, બધા સંધાણા, દહી, છાછ, બીજ, લુણ કાળા મરીનો ભુકો, લીબું, આદા-કાચરી, ઉકાળેલુ દુધ, લીલો મેવો.

કારતક સુદ - ૨ ભાઈબીજ

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : બંગલાની પિછવાઈ - આજથી સફેદી ચઢે.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ અતલસનો સુથન, લાલ અતલસનો કિનારી વિનાનો લીલી મગજીનો ચાકદાર વાઘો, સફેદ પટકો કટિનો, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ, કટિપેચ સુધીના શૃંગાર પાખડીના ચાર કર્ણકુલ, સફેદ જરીનો ચીરા, સાદી ચંદ્રિકા.

ગોપીવલ્લભ ભોગ: મગની દાળની ખીચડી, દહીભાત, વડાની છાશ, સેવૈયા, પાપડ, સાદા લપેટ, કચરીયા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, પાટિયા, છડિયાળ દાળ, તિનકુડા, તિલવડી, ઢેબરી, ભુજેના, સંજાબની ખીર, લુચ્ચઈને બદલે ઉફરેટા, રાજભોગનો થાળ સાજી શ્રી.... ને તિલક થાય, ચુનની આરતી થાય, ન્યોછાવર થાય તે પછી બાકીનો ભોગ સજાય તુલસી, શંખોદક અને ધૂપદીપ થાય.

કારતક સુદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ જરીની સુથન, સફેદ જરીનો ઘેરદાર વાઘો, ગુલાબી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : નિલમણિનાં.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીનો ચીરા, કામનો કતરા.

કારતક સુદ - ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સોનેરી જરીનું સુથન, સોનેરી જરીનો ચાકદાર વાઘો, મેઘશ્યામ પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી જરીનો ચીરા, રૂપેરી લુમતોરા.

કારતુક સુદ - ૫
(નિયમના શૃંગાર)

ચિં. શ્રીવ્રજભુષણલાલજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૩૭
શ્રી શરદકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર : અન્નકૂટનો

વસ્ત્ર : લાલ અતલસનું સુથન, ફરુખશાહી જરીનો ચાકદાર વાઘો, લાલ કટિનો પટકા, અમરસી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં, લાલ હાંસ ત્રવલ, વનમાળા સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીસ્મતકે : શ્વેત જરીની નાની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

કારતક સુદ - ૬
(નિયમના શૃંગાર)

(શ્રી મદન મોહનજી (કામવન) કાંકરોલી પધાર્યા સંવત ૨૦૩૯)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સોનેરી જરીનું સુથન, સોનેરી જરીનો ચાકદાર વાઘો, સોનેરી જરીનો અંતરવાસનો પટકો, લીલો કટિનો પટકો, લીલાં રેશમી ઠાડા વસ્ત્ર, લાલ તનિયા.

આભુષણ : સફેદ અને લીલાં, સફેદ હાંસ અને લીલી ત્રવલ, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી જરીનો ચીરા, સફેદ જડાઉ સેહરા, સફેદ કુંડલ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

કારતક સુદ - ૭

શૃંગાર

વસ્ત્ર : લાલ જરીનું સુથન, લાલ જરીનો ચાકદાર વાઘો, લીલો કટિનો પટકા, મેઘ શ્યામ રેશમી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીનો દુમાલો, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

કારતક સુદ - ૮ ગોપાષ્ટમી
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : ગાયોના ચિત્રની પિછવાઇ, ગાદીનો પટો ગાયનો, તકિયાની ઓઢણી ગાયોના ચિત્રોની.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ અતલસનું સુથન, કાછની ઉપરની લાલ રેશમી અને નીચેની લીલી રેશમી, લાલ પીતાંબર, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ તનિયા.

આભુષણ : સફેદ - લીલા હાંસ ત્રવલ, સફેદ કુંડળ હમેલ એક, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટ, લાલ ગોકર્ણ

શૃંગાર ભોગ : ચોખાની ખીર, ડબરા ભોગ સાથે તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય. ગ્વાલદર્શનમાં ગાયો પૂર્વાભિમુખ રહે. શૃંગાર આરતી ખંડની થાય.

ગોપીવલ્લભ ભોગ: દહીભાત, સેવૈયા વડાની છાશ

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, બડાની છાશ, સેવૈયા લુચ્ચઈને બદલે સામગ્રી

રાજભોગ દર્શન : ખંડપાટ પર વાઘ બકરીનો ખેલ મંડાય, આરતી ન્યોછાવર થાય.

સંધ્યા આરતી : ઠાડાં વેણું - વેત્ર ધરે.

શયન : લાલ સુથન પટકા, લાલ પાઘ, નિજતિબારીમાં ચાંદીના બંગલામાં બિરાજે.

કારતક સુદ - ૯ અક્ષયનવમી
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રીબાલકૃષ્ણજીના દ્વિતીય પુત્ર શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૬૩૨ છપ્પન ભોગ ઉત્સવ સંવત ૨૦૪૯ ચિ. શ્રીઅક્ષયકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૧૯૯૬ શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના લાલજી

સાજ : કેસરી તાસનો.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : અમરસી મોતીની કોરના, ચાકદાર વાઘો, અને સુથન, લીલો પટકા, ઠાડાં વસ્ત્ર મેઘશ્યામ.

આભૂષણ : લાલ, સફેદ અને લીલાં, જોડીલાલ. પહોંચી સફેદ અને લીલી, બે હાંસ, ત્રવલ લીલી, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મોતીની ટકમાં કુલ્હે, મોતીની ચંદ્રિકાનો જોડ, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

રાજભોગ : કટારોના સાજ

શ્રાજભોગ દર્શન : મોતીની આરતી આવે, ન્યોછાવર થાય .

કારતક સુદ - ૧૦
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી બાલકૃષ્ણજી (સુરત) સંધ્યાં સમયે કાંકરોલી પધાર્યા સવંત ૨૦૪૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ જરીનું સુથન, સફેદ જરીનો ચાકદાર વાઘો, લાલ કટિનો પટકો, મેઘશ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ તનિયા.

આભુષણ : સફેદ લાલ અને લીલા, હાંસ સફેદ, ત્રવલ લીલી, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીનો ચીરા, શ્વેત કુલ્હેની ગોટી (કુલ્હેની પાઘ) શિરપેચનાં બદલે બંદ, સફેદ કલગીપર જડાઉનો જોડ.

શયનભોગ : ભોગનો ક્રમ દોહરા મંડાણની જેમ.

કારતક સુદ - ૧૧ પ્રબોધિની.
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : શ્યામ પિછવાઈ, ચાંદ તારા વાળી, સફેદી વડી થાય જરદોજી ગાદી તકિયા, બંદનબાર બંધાય,

મંગળભોગ : કુરના ગુંજા.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય, આજથી વસંત પંચમી સુધી આંબળા ન આવે.

વસ્ત્ર : લાલ અતલસના સુથન - મોજા લાલ, અતલસનો કિનારીવાળો ચાકદાર વાઘો, સફેદ કટિના પટકા, અમરસી ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ તનિયા.

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) સફેદ (૨) લીલાં, સફેદ કડાં, લાલ હાંસ, લીલી ત્રવલ, હમેલ બે, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર, બે વૈજયંતીહાર, ટકમા ચોકઠું, સફેદ કુંડલ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મધ્યમ કુલ્હે, નવ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

મંડપ : સવારે દેવ ઉઠે તો શૃંગારમાં અને સાંજે દેવ ઉઠે તો ઉત્થાપનમાં સોળ સાંઠાનો મંડપ, ૪ છાબડી, વિ. તેમાં શેરડીના ટુક, ચણીબોર, સકરકંદ, વેગણ, ૪ અંગીઠી અને ૮ દીવા, કરવા વચમાં ચોકી પર શ્રી શાલિગ્રામજી બિરાજે. પંચામૃત થાય પછી શ્રી. ને નવો ગદલ ધરવો, માળા ધરવી, તે પછી ખેલ થાય. દેવને પણ ખેલ થાય, ઉત્સવભોગ ધરવો.

સવારે ઉત્સવ ભોગ આવે તો ગોપી વલ્લભમાં આવે, ને સાંજે ઉત્સવભોગ આવે તો ઉત્થાપન ભોગમાં આવે.

ઉત્સવભોગ : મઠડી, છુટી બુંદી, કચોરી, ભરતાના ગુંજીયાં, શીતલભોગ, શેરડીનો રસ, છોકેલું અને મીઠું દહી, બીજ, કાચાં સંધાણા, શેરડીના ટુક, વેંગન તથા સકરકંદની ટોકરી, ગુડની કટોરી, એકાદશીમાં ફલાહારમાં શીરાને બદલે ફલાહારની સેવ પાયેલી, કઢીને બદલે ઘેંસ, ચણીબોર આ બધો ભોગ દેવને પણ આવે. તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય તે પછી ભોગ સરાવી આચમન મુખવસ્ત્ર કરી બીડાં ધરી દર્શન ખુલાવવા તે પછી કુંડીની આરતી આવે ન્યોછાવર થાય, તે પછી પાંચ પરિક્રમા કરવી.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, છડિયાળ દાળ, તિનકુડા, વડી, તિલવડી ઢેબરી, પાપડ, પાટિયા, જલેબી, બુંદી જીરાપુરી, શિખરન વડી, સંજાબની ખીર બડાકી છાશ, સેવૈયા.

રાજભોગ દર્શન : શ્રીના સિંહાસનની આજુબાજુ શેરડી, મંડપમાંથી છોડીને બાંધવી, આરતી ન્યોછાવર થાય.

શયન દર્શન : શયનમાં ખંડપાટ રહે. શયન આરતી પછી શ્રી વેણુંજી શૈયાજીમાં પધરાવવા - બંટા ધરવા, પેડો બિછાવવો. પછી જાગરણના દર્શન ખૂલે.

પહેલા દર્શન : ચમર કરવી તે પછી સેવકોને ચમરની સેવા આપવી. ચાર ચાર દીવિ, બન્ને બાજુએ મુકવી.

ભોગ : મઠડી, બુંદી, ચણાની દાળ, ફડફડિયા, બીજ, કાચાં સંધાણા. છોકયું - મીઠું દહી, ફળ ફુલ તુલસી શંખોદક-ધૂપદીપ થાય.

બીજા દર્શન : માળા ધરાય, શંખ ચીતરેલી આરતી થાય, ઝારી ભરાય. ભોગ - પૂર્વવત્ ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે.

ત્રીજા દર્શન : માળા ધરાય, ચક્રની ચીતરલી આરતી આવે, ઝારી ભરાય ભોગ - પૂર્વવત્ ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે, તે પછી તુળસીજીની સગાઇ કરવી, તુલસીજીને મિશ્રી, ગદ્દીનો ભોગ આવે, તુલસી શંખોદક ધુપદીપ કરી તે પછી આચમન કરાવી ચાર બાતીની આરતી કરવી. તે પછી પરિક્રમા કરવી.

ચોથા દર્શન : શ્રી... ના ભોગ સરાવી માળા ધરવી. દર્શન ખોલવા. ગદા ચિતરેલી આરતી આવે, દર્શન બંધ થાય પછી વેણુંજી પધરાવી, મંગળભોગ ધરવો. ૮ દીવી મંગળા આરતી પછી ઉઠાવી લેવી, ત્યાં સુધી તે રહે.

મંગળા દર્શન : મંગળા આરતી પદ્મની ચિતરેલી થાય.

કારતક સુદ - ૧૨
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગુંસાઇજીના જ્યેષ્ઠલાલજી શ્રી ગિરધરજીનો ઉત્સવ સવંત ૧૫૯૭ તથા
શ્રી ગુંસાઇજીના પંચમલાલજીશ્રી રઘુનાથજીનો ઉત્સવ સવંત ૧૬૧૧.

સાજ : પ્રબોધિનીના.

શૃંગાર :

મંગળભોગ : મઠડી, મંગળાઆરતી બાદ માળા ધરી દર્પણ બતાવી શૃંગાર ભોગ આવે.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ - વિશેષમાં ભરતાની પકોડી છોકર્યો મીઠો દહી બીજ, કાચાં સંધાણાં.

સંધ્યા : સંધ્યા આરતી પછી બધો શૃંગાર વડો થાય તે પછી અંગ વસ્ત્ર થાય. શૃંગાર અનોસરનો રહે શ્રી મસ્તકે નાની કુલ્હે, આત્મ સુખ ઓઢી બીરાજે, મુખારવિંદના દર્શન થાય.

શયન ભોગ : છડિયાળ દાળ, કઢીને બદલે મીઠો શાક, પાપડ નહી. શયન એક ઘડી દિવસ રહેતાં થાય, આજથી મહાસુદ-૪ સુધી શયનના દર્શન ન થાય વચ્ચે વચ્ચે ઉત્સવ, જન્મ દિવસના દિવસે શયનના દર્શન થાય.

કારતક સુદ - ૧૩

(નિયમના શૃંગાર)

ચિ. શ્રી વિઠલનાથજી (શ્રીસિધ્ધાન્ત કુમારજી)નો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૫૦ શ્રી વાગીશકુમારજીના દ્વિતીય લાલજી

સાજ : સફેદી ચઢે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ અતલસી સુથન, જડાઉમોજાં, લાલ અતલસનો ચાકદાર વાઘો, સફેદ કટિનો પટકા, લાલ જરીનો અંતર વાસનો પટકા, અતલસનો ગદલ, રૂનો વાઘો ડોલ સુધી આવે, રેશમી લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : એક જોડીનો શુંગાર સફેદ, લીલાં આભરણ ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : નિત્યની સફેદ કુલ્હે, સફેદ જડાઉ સેહરો.

કારતક સુદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલો, રેશમી ઘેરદાર વાઘો, લીલુ રેશમી સુથન અને મોજા, શ્યામ, ઠાડાં વસ્ત્ર, ગદલ ખુલતાં રંગના કોઇપણ આવે.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : લીલી છજેદાર પાઘ, ગુલાબી કામનો કતરો.

કારતક સુદ - ૧૫

આ શૃંગાર જે દિવસે ચોકી હોય તે દિવસે થાય

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ કિનખાબનું સુથન, લાલ કિનખાબનો ચાકદાર વાઘો, જડાઉ મોજા, પીળો કટિનો પટકો, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, કિનખાબનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ-લીલા, આયુધના ફુલ ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કિરીટ.

ચોકીનો ભોગ : પ્રથમ દુહરો કુંડવારો. પ્રથમ ચોકીનો ભોગ ખીરવડા, ભરતા નાં ગુજા

નોંધ : કાર્તિક સુદ પૂર્ણિમાં કાર્તિક વદ ૧ અથવા બીજ (૨) જે દિવસે વાર અને ચંદ્ર સારો હોય તે દિવસે પ્રથમ ચોકી કુનવારો થાય અભ્યંગ થાય અને ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે શૃંગાર થાય જો પડવા અથવા બીજે આ શૃંગાર થાય તો તે દિવસનો શૃંગાર આજે પૂર્ણિમાએ આવે.

કારતક વદ - ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : નારંગી રેશમી સુથન - મોજા, ઘેરદાર વાઘો, બાદલી ઠાડા વસ્ત્ર, પોપટી રંગનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : નારંગી રંગની ચકરીદાર પાઘ, મોર શિખા.

કારતક વદ - ૨ હરીઘટા

સાજ : લીલો સાટીનનો, તકિયા ગાદી લીલાં.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - મોજા, ઘેરદાર વાઘો રેશમી લીલાં, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ગદલ.

આભુષણ : લીલાં

શ્રીમસ્તકે : લીલી છજેદાર પાઘ, લીલો મખમલનો કતરો, સુથનના ફોંદના સુધી શૃંગાર આવે.

કારતક વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોજા, ચાકદાર વાઘો બધા જ નારંગી રંગના, લીલા રંગનો પટકો, રેશમી બાદલી ઠાડાં વસ્ત્ર, પોપટી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમતસ્કે : નારંગી છજેદાર પાઘ, લીલો કતરો.

કારતક વદ - ૪

ચિ શ્રી દ્વારકેશલાલજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૪
શ્રી વ્રજેશકુમારજીના દ્વિતીયલાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોંજા, ચાકદાર વાઘો બધાજ શ્યામ રંગના, પીળો પટકો, બદામી ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાનાં.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, મેઘશ્યામ મોર શિખા.

કારતક વદ - ૫
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગિરધરલાલજીના ઉત્સવની વધાઈ સંવત ૧૬૬૨ નગારા બેસે, ગીતગવાય.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ મોજા, પીળુ સુથન, પીળો સાદો શ્યામ મગજીનો ચાકદાર વાઘો, લાલ પટકા મેઘશ્યામ રેશમી ઠાડાંવસ્ત્ર, લીલો ગદલ.

આભુષણ : લીલાં, છેડા સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ દુમાલો, એક ચંદ્રિકા - ડાબી બાજુ એક કતરો.

કારતક વદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોંજા અને ચાકદાર વાઘો લાલ, બેરંગી લહેરીયાના પટકા, રેશમી લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, ગદલ ખૂલતા રંગની કોઈપણ આવે.

આભુષણ : નીલ મણિના.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, સોનેરી લુમતોરા.

કારતક વદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી સુથન - મોજા, કેસરી, કિનારી વાળો ઘેરદાર વાઘો, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, ગદલ ખૂલતાં રંગના.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

શયનમાં : શ્રીમસ્તકે સાદી ચંદ્રિકા રહે, અન્ય શૃંગાર નિત્યનો.

કારતક - વદ ૮
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી ગુંસાઈજીના દ્વિતીયકુમાર શ્રી ગોવિંદરાયજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૫૯૯ તથા શ્રી ગિરિધરલાલજીનો ઉત્સવ (સંવત ૧૬૬૨) ચિ. શ્રી રાજેન્દ્રકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૦૧ શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી ના લાલજી બંદનબાર બંધાય અને ચોકપુરાય.

સાજ : લાલ પિછવાઈ કિનારીના ફુલની

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ કિનખાબની સુથન, જડાઉ મોજા, પીળો તનિયા, લાલ કિનખાબનો ચાકદાર વાઘો, પીળો પટકા, રેશમી લીલા ઠાડાં વસ્ત્ર, ગદલ ખુલતા રંગના.

આભુષણ : સફેદ - લીલાં, લાલહાંસ -ત્રવલ

શ્રીમસ્તકે : જડાઉ કુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

કારતક વદ - ૯
(નિયમના શૃંગાર)

છપ્પનભોગનો ઉત્સવ સંવત ૧૯૯૪
ચિ. શ્રી વ્રજભુષણલાલજી (શ્રીવેદાન્ત કુમારજી) નો જન્મદિવસ સંવત ૨૦૪૫
શ્રી વાગીશકુમારજી ના જયેષ્ઠલાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન મોંજા, ચાકદાર વાઘો, અંતર વાસનો પટકો, બધાજ લાલ જરીના, મેઘશયામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ જરીના ગદલ, શ્વેત કટિનો પટકો.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીનો ટિપારો, તે પર કામનો જોડ લાલ જરીના ગોકર્ણ આવે.

કારતક વદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન - મોંજા અને ચાકદાર વાઘો પિરોજાઇ, રેશમી ગુલાબી ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકકે : પિરોજાઇ ચકરીદાર પાઘ, શ્વેત કતરો.

કારતક વદ - ૧૧
(નિયમના શૃંગાર)

તિ. શ્રી ગોકુલનાથજીના ઉત્સવની વધાઈ
નગારા બેસે, ગીતગવાય

શૃંગાર : સફેદી વડી થાય

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, સુથન, મોજા ચાકદાર વાઘો બધા અમરસી મેઘશ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી બસમાનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ, લાલહાંસ-ત્રવલ, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : અમરસી નાની કુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : ચોકીનો ભોગ - ઘેબર, ભરતાંની પકોડી.

કારતક - વદ ૧૨ દ્વાદસીનો વિશેષ શૃંગાર

સાજ : સફેદ જરીનો.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - મોંજા, ઘેરદાર વાઘો, ઠાડાં વસ્ત્ર, ગદલ આ બધાજ સફેદ જરીના.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીની છજેદાર પાઘ, કામની શ્વેત ગોળ ચંદ્રિકા.

કારતક વદ - ૧૩
(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી ગુંસાઈજીના સપ્તમ લાલજી શ્રીઘનશ્યામજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૬૨૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ કિનખાબના સુથન - મોજાં, પીળો તનિયા, લાલ કિનખાબનો ચાકદાર વાઘો, પીળો પટકા, રેશમી પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ આભરણ, લીલાં હાંસ - ત્રવલ ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : લાલ જડાઉનો ટિપારો, તે પર ત્રણ સાદી ચંદ્રિકા

કારતક વદ - ૧૪
(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૮૨૧
બંદનબાર બંધાય, ચોક પુરાય

સાજ : શ્યામ કિનારીના ફૂલની પિછવાઈ.

મંગળભોગ : મનોહરના લાડુ, મંગળા આરતી મોતીની.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા. કેસરી કિનારીનો ચાકદાર વાઘો. કેસરી સુથન, મોજા જડાઉ, રૂનો લાલ નવો વાગો આવે, રેશમી મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ જરીના ગદલ.

આભુષણ : બે જોડી (૧) લાલ (૨) સફેદ. સફેદ કડાં, લીલી પહોંચી, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધીનો શૃંગાર, ત્રણ વૈજ્યંતી હાર, બે હમેલ, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ કુલ્હે, ૧૧ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

રાજભોગ : ચોકીના ભોગ, ખોવાના ગુંજા, ખાજાં, પુરો ડબરાનો ભોગ. ગુંજા, સેવ, મઠડી, સકરપારા, મેવાટી ઈન્દરસા, જલેબી.

રાજભોગ દર્શન : મોતીની આરતી આવે, ન્યોછાવર થાય.

સંઘ્યા : મનોહર આવે. સંઘ્યા આરતી મોતીની થાય.

શયન : વનમાળા સુધી શૃંગાર, કેસરી નાની કુલ્હે, શયન આરતી મોતીની.

કારતક વદ - ૦))
(નિયમનો શૃંગાર)

ઉત્સવનો બીજો દિવસ

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આગળના દિવસનાંજ.

આભુષણ : એક જોડના શૃંગાર, જોડી લાલ. સફેદ લીલા આભરણ.

શ્રીમસ્તકે : નાની કેસરી કુલ્હે, કામનો જોડ.

માગશર સુદ - ૧

તિ. શ્રીવ્રજભુષણજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૭૬૫

શૃંગાર : સફેદી ચઢે

વસ્ત્ર : સુથન, મોંજા, ઘેરદાર વાઘો, બધાજ પીળાં, શ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : પીળી ચકરીદાર પાઘ, દુધીયા રંગની કામની મોર શિખા.

માગસર - સુદ - ૨

(નિયમોના શૃંગાર)

સાજ : સફેદ કિનખાબનો

શૃંગાર : પીળો તનિયા, લાલ કિનખાબનું સુથન, લાલ કિનખાબનો ચાકદાર વાઘો, પીળો પટકા, શ્યામ ટકમાં મોંજા, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ કિનખાબનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ, લાલ હાંસ - ત્રવલ. શૃંગાર પર સફેદ જરીની ફતવી, તે પર હાંસ ત્રવલ અને કંઠમાળા.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ ટકમાંની નાની કુલ્હે, કામનો જોડ

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

માગસર - સુદ -૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન, મોજા ચાકદાર વાઘો, બધાજ પિરોજાઇ, શ્યામ ચુંદડીનો પટકા, ગુલેનાર ઠાડાં વસ્ત્ર, શ્યામ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : પિરોજાઇ છજેદાર પાઘ, શ્યામ કતરો.

માગસર - સુદ - ૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીમથુરેશજી કાંકરોલી પધાર્યા તે ઉત્સવ સં ૧૯૬૫

શૃંગાર

વસ્ત્ર : લાલ સાટીનનું સુથન, જડાઉ મોજા, લાલ સાટીનનો ચાકદાર વાઘો, પીળો પટકોકટિનો, લાલ જરીનો અંતરવાસનો પટકો, રેશમી લીલાં ઠાડા વસ્ત્ર, પીળો બસમાનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ અને લીલા.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીની પાઘ, સફેદ જડાઉ સહેરો,

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, મીઠો મઠા, લુચ્ચઇમાં અમૃત શિરોમણિ, કોઠાની ચટણી.

રાજભોગ દર્શન : આરતી મોતીની, ન્યોછાવર થાય,

શયન : પતળી દાળ અને બાટી.

માગસર સુદ - ૫ લાલઘટા

સાંજ : લાલ

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન મોજા, ઘેરદાર વાઘો, ઠાડાંવસ્ત્ર ગદલ, બધા જ લાલ સાટીનના.

આભુષણ : લાલ, કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, લાલ મખમલનો કતરા.

માગસર સુદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન-મોજા, ઘેરદાર વાઘો બધા જ વાદળી રંગના, પીળાં રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, મેઘશ્યામ ગદલ.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર છજેદાર પાઘ, ગુલેનાર કામનો કતરો.

માગસર સુદ - ૭

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી ગુંસાઈજીના ચર્તુથ લાલજી શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૬૦૮ તથા શ્રી ગુંસાઈજીના ઉત્સવની વધાઈ બેસે.

ગીત, નગારા બેસે.

સાજ : પિછવાઈ પીળી, શ્યામ હાંસિયો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળી સાટીનના લાલ મગજીવાળા વગર કિનારીના સુથન, મોજાં અને ચાકદાર વાઘો, તનિયા, પટકા અને ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ, કિનખાબનો ગદલ.

આભુષણ : બે જોડી (૧) લાલ (૨) લીલાં. સફેદ કડાં-પહોંચી, બે વૈજયંતી હાર, ટકમાં ચોકઠું, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મધ્યમ કુલ્હે, ૧૧ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

રાજભોગ : ચોકીના ભોગ, મીઠી કચોરી, મગની દાળની કચોરી.

માગસર સુદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોજા ચાકદાર વાઘો, બધાજ ગુલાબી, શ્યામ પટકા, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : નીલ મણિના

શ્રીમસ્તકે : લાલ જડાઉ ફેટા, મેઘશ્યામ કામની કલગી.

માગસર સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોજાં અને ઘેરદારવાઘો મેઘશ્યામ, મોતી ભરેલો કેસરી ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ અતલસનો ગદલ.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ ગોળ પાઘ, મોતીના લુમતોરા.

માગસર સુદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળાં મોજાં, અને સુથન, ચાકદાર વાઘો શ્યામ, પીળી ફતવી, કેસરી ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : પીળી છજેદાર પાઘ, લાલ મખમલની ગોળ ચંદ્રિકા.

માગસર સુદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન-મોજા ચાકદાર વાઘો અને અંતર વાસનો પટકા કેસરી, કટિનો પટકા અને ઠાડાં વસ્ત્ર મેઘશ્યામ, પિરોજાઈગદલ.

આભુષણ : લીલાં

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો ખુંપ

માગસર સુદ - ૧૨

વિશેષ શૃંગાર

સાજ : શ્યામ સોનેરી કિનારીનો સાજ.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોજા અને ઘેરદાર વાઘો સાદા શ્યામ, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, શ્યામ ગદલ, સફેદ જરીનો ફરગુલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ છજેદાર પાઘ, શ્વેત જરીની ગોટી, સાદી ચંદ્રિકા.

માગસર સુદ - ૧૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : લાલ જરદોજી સુથન - મોજા, ખાખી ઘેરદાર વાઘો, લાલ ફતવી, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, પોપટી ગદલ.

આભુષણ : મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : લાલ ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, બદામી તથા ગુલાબી કામનો કતરા.

માગસર સુદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન - મોજા અને ચાકદાર વાઘો લીલાં ધુપછાંવ, પીળો કટિનો પટકા, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, શ્યામ મિસરજનનો ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જડાઉ ટિપારો, લાલ જડાઉ કતરા, મોર શિખા.

માગસર સુદ - ૧૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન-મોજા અને ચાકદાર વાઘો બધાજ મલિયાગીરી રંગના પીળો કટિનો પટકા, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉનો દુમાલો, કામનો કતરો-ચંદ્રિકા.

માગસર વદ- ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન-મોજા ઘેરદાર વાઘો બધાજ ગુલેબાંસી, સાદા સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેબાંસી છજેદાર પાઘ, મોતીની ગોટી, સાદી ચંદ્રિકા.

માગસર વદ- ૨

(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : જરદોજી, ગાદી તકિયા જરદોજી, સફેદી વડી થાય.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : પીળા સુથન મોજા અને પીળી કિનારીનો ચાકદાર વાઘો, તનિયા, પટકા અને ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ-લીલા, લાલ હાંસ, લીલી ત્રવલ, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે, કામનો જોડ.

નોંધ : આજથી શ્રીગુંસાઇજીના ઉત્સવ સુધી લીલા અને શ્યામ રંગના વસ્ત્ર ના આવે.

માગસર વદ- ૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : ગુલેબાંસી સોનેરી સુથન, જડાઉ મોજા, ગુલેબાંસી સોનેરી ચાકદાર વાઘો, પીળો કટિનો પટકો, ગુલુબાંસી ખભાનો પટકો, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર પીળો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ કિરીટ.

નોંધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

માગસર વદ- ૪

(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : જડાઉ મોજા, અંતરવાસનો પટકા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો કેસરી મોતીના, ભરેલાં, લાલ જરીના પટકા, લાલ જરીના ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી લીસમાનો ગદલ.

આભુષણ : લીલાં, હાંસ ત્રવલ સફેદ, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી પાઘ, સફેદ જડાઉ સેહરો

માગસર વદ - ૫

(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન મોજા, ચાકદાર વાઘો બધાજ પીળાં બુટ્ટીદાર, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ પટકો, ગદલ ખૂલતાં રંગના.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : પીળો પગો, કામનો કતરો ચંદ્રિકા.

માગસર વદ - ૬
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન મોજા, ચાકદાર વાઘો, બધાજ ચુંદડીના, જાંમળી ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : નીલ મણિના

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડીનો દુમાલો, કામનો કતરો-ચંદ્રિકા.

માગસર વદ - ૭ છપ્પન ભોગ ઉત્સવ
(નિયમનો શૃંગાર)
સંવત ૧૮૯૫

સાજ : લાલ જરીનો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ જડાઉ મોજા, સુથન, અને ચાકદાર વાઘો, લાલ જરીના, પીળો તનિયા, પટકો, અને ગદલ સફેદ જરીના, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ લીલા, હાંસત્રવલ લાલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર, ટકમા ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : ટિપારો અને ચંદ્રિકા - સફેદ જડાઉ, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

માગસર વદ - ૮
(નિયમનો શૃંગાર)

ચિ. શ્રી પંકજકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૪
અક્ષયકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - મોજાં, વિના કિનારીનો ઘેરદાર વાઘો, બધાજ લાલ, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાના લાલ કર્ણફુલ, કટિપેચ સુધીના શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, સફેદ જડાઉ શિરપેચ, સફેદ મોર શિખા, સાદી ચંદ્રિકા.

માગસર વદ - ૯
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રીગુંસાઈજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૫૭૨
બંદનબાર બંધાય ચોક પુરાય.

સાજ : કારચોબીની ત્રણ પિછવાઈ, સિહાસન નીચે કોરી હળદરનો ચોક પુરાય.

મંગળભોગ : જલેબી.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : તનિયાલાલ, કેસરી રૂનો નવો વાઘો, પીળી સાટીનના મોજાં સુથન સાટીનનો, લાલ મગજીવાળો વિના કિનારીનો પીળો ચાકદાર વાઘો, લાલ પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલેબાંસી ગદલ.

શૃંગાર : ત્રણ જોડીનો (૧) લાલ (૨) લીલાં (૩) સફેદ, મોજાં પર સફેદ પાયલ, લીલી પહોંચી, સફેદ કડાં, લાલ સાંકળાં, સફેદ, લાલ, લીલી મુદ્રિકા, સફેદ નખ ભૂષણ, કંદોરો સફેદ, લાલ સફેદ કંઠાભરણ, લીલી દુલરી, સફેદ કુંડલ, બે હમેલ, સફેદ હાંસ, લીલી ત્રવલ, ચરણ ચોકીની નીચેની કોર સુધીનો શૃંગાર, ટકમાં ચોકઠું, વૈજ્યંતી હાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મોટી કુલ્હે, ૧૧ ચંદ્રિકાનો જોડ, પાનતુરા ગોટી, પેચ, બે મોટી લર, લટકન, કમલ પત્ર થાય.

ગોપીવલ્લભભોગ : શ્રીને ગોપીવલ્લભભોગ ધર્યા પછી ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતાં ગીત, ધોળ, મંગળ, કીર્તન થતાં, શ્રીગુંસાઈજીના પાદુકાજીને થાળમાં પધરાવી, તિલક અક્ષત કરી દુધથી સ્નાન કરાવી જલથી સ્નાન કરાવવું પછી ક્રમથી બધાને અભ્યંગ થાય શૃંગાર કરી, ગોપી વલ્લભ ભોગ ધરવો.

રાજભોગ : ચોકી ભોગ - સામગ્રી કપુરનારી

સખડી :- પાંચ ભાત - ખાટો ભાત, શિખરન ભાત, દહી ભાત, વડી ભાત, મીઠો ભાત, છડિયાળ દાળ, પતરવેલિયાની કઢી, તિલવડી, ઢેબરી, પાપડ, ભુજેના, ડબરાના સાજ પ્રમાણે.

અનસખડી :- જલેબી, ખાજાં, ખીર ચાર, સેવની ચોખાની, મણકાની, અને સંજાબની, વડાની છાશ, સંધાણા, જીરાપુરી, છોકેલું દહી, પંજરી, શિખંડવડી, બિલસારૂ, બુંદી, મનોહર, ફેની સફેદ અને કેસરી, રાયતાં બે.

દુધઘર : - સફેદ અને કેસરી પેડા, ગુંજા, બાસુદી, મીઠું દહી, માખણ, મિશ્રી, સુકો મેવો, લીલો મેવો.

રાજભોગ દર્શન : થાપા દેવાય, ખંડપાટ બિછાવી, વેણું વેત્ર ધરી, આરસી બતાવી, તે પછી ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતાં શ્રીને તિલક કરવું, બીડાં ધરવા, પછી મોતીની આરતી કરવી. ન્યોછાવર કરવી, તે પછી વેણું વેત્ર વડાં કરવા. તે પછી શ્રી મહાપ્રભુજી શ્રી ગુંસાઈજી અને શ્રી બાલકૃષ્ણજીને ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતાં તિલક કરી અક્ષત લગાવી બીડાં ધરી, ભેટ કરવી તે પછી ચુનની આરતી કરવી, ન્યોછાવર કરવી, તે પછી જન્મ પત્રિકા વંચાય.

અનોસરમાં પલના રહે અનોસરના બંટામાં જલેબી.

સંધ્યા : ભોગ સંધ્યા ભેગા થાય, સંધ્યાં ભોગ બુંદીનો, સંધ્યા આરતી મોતીની.

શયન : આજે દર્શન કરાવવાં શૃંગાર ચરણારવિંદ સુધી.

દર્શન : શ્રીમસ્તકે કેસરી છોટી કુલ્હે.

માગસર વદ - ૧૦ ઉત્સવનો બીજો દિવસ

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આગળના દિવસનાંજ

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) સફેદ, લીલી પહોંચી, સફેદ કડાં, લાલ હસ્ત સાંકળાં, બે હમેલ, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર, ટકમાં ચોકઠું, બે વૈજ્યંતિ હાર આયુધના ફુલ ધરે.

શ્રીમસ્તકે : મધ્યમ કેસરી કુલ્હે, નવ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : ચંદ્રા રોટી, ડુબકીની કઢી
અનોસરમાં પલના રહે.

શયન : વનમાલા સુધી શૃંગાર, છોટી કુલ્હે

માગરસ વદ - ૧૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના ઉત્સવની વધાઈ
નગારા બેસે ગીત ગવાય

સાજ : સફેદી વડી થાય.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : તનિયા, અને પટકા, લાલ, પીળી સાટીનના કિનારીવાળા સુથન-મોજા, ચાકદાર વાઘો, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર મેઘશ્યામ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ, લીલા હાંસત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે, કામનો જોડ.

ગોપીવલ્લભભોગ : ચોકીભોગ, ચંદ્રકળા અડદની દાળની કચોરી.

રાજભોગ : કટોરાના સાજ.

માગસર વદ - ૧૨ દ્વાદશીનો વિશેષ શૃંગાર

સાજ : પીળી જરીનો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન-મોજા, ઘેરદાર વાઘો, ઠાડાં વસ્ત્ર અને ગદલ બધાજ પીળી જરીના.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પીળી જરીનો ચીરા, સોનેરી કામની ચંદ્રિકા.

માગસર વદ - ૧૩

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : લાલ વિના કિનારીના, સુથન મોજા, ઘેરદાર વાઘો, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાના, લાલ કર્ણફુલ, કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, સફેદ શિરપેચ, સાદી ચંદ્રિકા.

માગસર વદ - ૧૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ સવંત ૧૮૧૧
બંદનબાર બંધાય, ચોક પુરાય

સાજ : જરદોજી.

મંગળભોગ : જલેબી, મંગળા આરતી મોતીની

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : સુથન, મોજાં, અને કિનારીનો ચાકદાર વાઘો, પીળા સાટીનના, તનિયા, કટિનો પટકા અને ઠાડાં વસ્ત્ર. લાલ, ગુલાબી ગદલ, અંતર વાસનો પટકો પીળી જરીનો.

આભુષણ : બેજોડી (૧) લાલ (૨) સફેદ બે હમેલ, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર, ત્રણ વૈજ્યંતી હાર, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી પાઘ, લાલ અને સફેદ જડતરનો સેહરો.

રાજભોગ : ચોકીનો ભોગ, મનોહર, ખોવાના ગુંજા ખાજાં, પૂવા, ડબરાનો ભોગ, ગુંજા, સેવ, મઠડી, સકરપારા, મેવાટી, ઈન્દરસા, જલેબી.

રાજભોગ દર્શન : મોતીની આરતી આવે, ન્યોછાવર થાય, અનોસરમાં પલના આવે

શયન : વનમાળા સુધી શૃંગાર, કેસરી પાઘ, શયન આરતી મોતીની

માગસર વદ - ૦)) ઉત્સવનો બીજો દિવસ

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર

વસ્ત્ર : આગળના દિવસ પ્રમાણેના

આભુષણ : સફેદ લાલ - એક જોડી, લાલ લીલા હાંસ - ત્રવલ, બે હમેલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર, બે વૈજ્યંતિહાર, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે, નવ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : રાજભોગનાં અનોસરમાં પલના આવે.

શયન : છેડા સુધીનો શૃંગાર.

પોષ સુદ - ૧ શ્યામ ઘટા

સાજ : શ્યામ

શૃંગાર

વસ્ત્ર : તનિયો, સુથન, મોજા, ઘેરદાર વાઘો, પટકા, ગદલ અને ઠાડાં વસ્ત્ર બધા જ શ્યામ.

આભુષણ : નીલ મણિના

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ છજેદાર પાઘ, શ્યામ મખમલનો કતરો.

પોષ સુદ - ૨ ચંદ્રમાનો શૃંગાર

સાજ : શ્યામ સાજ ચંદ્રમાનો.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : ઘેરદાર વાઘા, સુથન, અને મોજા સફેદ જરીના, શ્યામ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, શ્યામ ગદલ.

આભુષણ : પચ્ચીના (સફેદ).

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીનો ચીરા, સોનેરી કામનો ચંદ્રમા.

પોષ સુદ - ૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : શ્યામ મોતીના મોજા, સુથન અને ઘેરદાર વાઘો પીળો, શ્યામ મોતીની ફતવી, ગુલાબી ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ મોતીની પાઘ, મોતીની મોર શિખા.

પોષ સુદ - ૪ સફેદ ઘટા

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન, મોજા, ચાકદાર વાઘો, અને ગદલ સફેદ રેશમી પટકા, અને ઠાડા વસ્ત્ર સુતરાઉ સફેદ.

આભુષણ : સફેદ

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટ. શ્યામ વસ્ત્રનો નિલામ્બર ધરે.

પોષ સુદ - ૫

ચિ. શ્રી સંજયકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૮
શ્રી કૃષ્ણકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - મોજા, અને ચાકદાર વાઘો, ગુલાબી શ્યામ દુરંગી, દુરંગી લહેરીયાના પટકા, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી મખમલનો મેઘશ્યામ હાંસિયાનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ અને પીરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી - શ્યામ બે રંગી ટિપારો, તે પર પીળો મેઘશ્યામ બે રંગી મખમલનાં કતરા, મોર શિખા.

પોષ સુદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોજાં, અને ઘેરદાર વાઘો સિંધુરી રંગના, ઠાડાં વસ્ત્ર શ્યામ, જાંબલી રંગનો ગદલ.

આભુષણ : નિલમણિના.

શ્રીમસ્તકે : સિંધુરી પાઘ, સફેદ મખમલની ચંદ્રિકા.

પોષ સુદ - ૭

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - મોજાં, અને ઘેરદાર વાઘો, પોપટી રંગના કેસરી કટિનો પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : પોપટી છજેદાર પાઘ, અને મોતીની શ્યામ ગોટી, કામની ગોળ ચંદ્રિકા, બે તુર્રા.

પોષ સુદ - ૮

શૃંગાર

વસ્ત્ર : ગુલેબાંસી, સુથન - મોજા, અને ચાકદાર વાઘો, મોતી ભરેલ, લીલો પટકા, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેબાંસી મોતીની કુલ્હે.

પોષ સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન-મોજા, અને ચાકદાર વાઘો, પિરોજાઇ શ્વેત કટિનો પટકા, પિરોજાઇ અંતરવાસનો પટકો, શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ ગદલ.

આભુષણ : મુંગાના (પરવાળાના)

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો ખુંપ.

પોષ સુદ - ૧૦
(નિયમનો શૃંગાર)

તિ. શ્રી વ્રજેશકુમારજીનો જન્મ દિવસ પ્રા સવંત ૧૯૯૬
બંદનબાર બંધાય, ચોક પુરાય, ગીત ગવાય.

શૃંગાર

વસ્ત્ર : જડાઉ મોજા, ગુલેબાંસી સુથન, ઘેરદાર વાઘો, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, કેસરી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ અને લીલા, ચાર સફેદ કર્ણફુલ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટની ટોપી, સોનેરી લુમ તુર્રા, અને જડાઉ બે કતરા

રાજભોગ : કટોરાના સાજ

રાજભોગ દર્શન : સોનાનો બંગલો, મોતીની આરતી, ન્યોછાવર થાય.

પોષ સુદ - ૧૧ પીળી - ઘટા

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ઘેરદાર વાઘા, સુથન મોજા, ઠાડાં વસ્ત્ર, ગદલ બધાજ પીળાં રેશમી.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પીળી છજેદાર પાઘ, પીળો મખમલનો કતરા.

પોષ સુદ - ૧૨

સાજ : શ્યામ ચંદ્રમાનો સાજ.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : શ્યામ સાદા, ઘેરદાર વાઘા, ને સુથન સફેદ, જરીના મોજા, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ જરીનો ગદલ

આભુષણ : સફેદ પચ્ચીના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જરીનો ચીરા, સાદી ચંદ્રિકા.

પોષ સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન - મોજા, ચાકદાર વાઘો લીલા જરીના, લાલ કટિનો પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : લીલી જરીનો ચીરા, ગુલાબી કતરા.

પોષ સુદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી સાટીનના સુથન, મોજા, અને ઘેરદાર વાઘો, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, મેઘશ્યામ ગદલ.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છજેદાર પાઘ, કામની ચંદ્રિકા.

પોષ સુદ - ૧૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પિરોજાઇ સુથન, જડાઉ મોજા, પિરોજાઇ ચાકદાર વાઘો, લાલ કટિનો પટકા, કેસરી ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ કિનખાબનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટની ટોપી.

ભોગીનો ઉત્સવ
મકર સંક્રાતિના આગલા દિવસે

નોંધ : જે દિવસે મકરસંક્રાતિ હોય તેના આગલા દિવસે, ભોગી ઉત્સવ કરવો.

સાજ : લાલ સાટીનનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ સાટીનના સુથન, મોજા અને કિનારીદાર લાલ ચાકદાર વાઘો, પીળો કટિનો પટકા, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, મેઘ શ્યામ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લાલ કુલ્હે, કામનો જોડ.

ગોપીવલ્લભ : ચીલા, ઘી, ખાંડ, ગોળ, મુરબ્બો, પકોડીની છાશ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે અનસખડીની સામગ્રી, પકોડીની છાશ.

મકર સંક્રાતિ (ઉત્તરાયણ)
નિજ મંદિરના દ્વારે ગેંદ લટકે, ખેલમાં આવે

સાજ : છીટનો
શૃંગાર :
વસ્ત્ર : ગુલાબી છીટના, સુથન-મોજા, ઘેરદાર વાઘો, સફેદ છીટના ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળી છીટનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ, લીલા કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છીટનો ટોપો

ગોપીવલ્લભ ભોગ: મગની દાળની ખીચડી, દહીભાત, સેવૈયા, બડાની છાશ.
:

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે ગુદડિયા પૂવા.

તિલવા ભોગ : તિલવા ખાંડના, અને ગોળના, કચોરી. જે ભોગમાં આવે તે ભોગમાં આ ક્રમ પ્રમાણે આવે. છીંકયો દહી, બીજ, સંધાણા, ફળફૂલ, તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય.

પોષ વદ - ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ મોજા, લીલું સુથન, લીલો ચાકદાર વાઘો, લાલ જરદોજી ફતવી, કેસરી ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ મીનાનાં

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, બદામી પર (પંખ)

પોષ વદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન-ચાકદાર વાઘો બધા જ શ્વેત, કટિનો પટકા, અને ઠાડાં વસ્ત્ર લીલાં, શ્યામ ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ છજેદાર પાઘ, કેસરી શ્યામ મખમલના કતરા.

પોષ વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા - સુથન, ચાકદાર વાઘો, સોસની રંગના, પીળો કટિનો પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોસની ફેટાં, કામનો કતરો.

પોષ વદ - ૪ ગુપ્ત ઉત્સવ

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી સ્વામિનીજીનો ઉત્સવ, ગુંજા વનમાંથી આજે પધાર્યા

સાજ : રેશમી લહેરીયાનો.

મંગળભોગ : સખડીનો, રોટી, શીરો, ખરમંડા.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : જડાઉ મોજા, પીળો તનિયા, લાલ કિનખાબનું સુથન-ચાકદાર વાઘો, પીળો કટિનો પટકા, લાલ જરીનો અંતરવાસનો પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ લીલાં, ચરણારવિંદ સુધીના શૃંગાર, લાલ હાંસ-ત્રવલ.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જરીની પાઘ, સફેદ જડાઉ સહેરા.

ગોપીવલ્લભ ભોગ: ચોકીનો ભોગ, ખરમંડાની ચોકી, લોંગ પાનની કઢી, મગની દાળના ગુંજા ફીકામાં.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, ખરમંડા.

પોષ વદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન, ચાકદાર વાઘો, બધા જ ગુલાબી, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલેબાંસી ગદલ.

આભુષણ : નીલમણિના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છજેદાર પાઘ, મેઘશ્યામ મખમલની મોરશિખા.

પોષ વદ - ૬

ચિ. પરિતોષ કુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૧

શ્રી અક્ષયકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન, ચાકદાર વાઘો, બધા જ પીળાં, લાલ કટિનો, પટકો, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લાલ જડાઉ ટિપારા, કામના કતરા, ચંદ્રિકા.

પોષ વદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, મોજા અને ઘેરદાર વાઘો બધા જ શ્યામ, પિરોજાઇ ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ ચીરા, - કામની ચંદ્રિકા.

પોષ વદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો બધા જ લીલાં, મેઘશ્યામ કટિનો પટકા, અને ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ, કિનાખાબનો ગદલ.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ફેંટા, કામની કલગી.

પોષ વદ - ૯ કેસરી ઘટા

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી વિઠલનાથજીનો જન્મ દિવસ પ્રા સં ૧૯૭૦
શ્રી દ્વારકાનાથજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૬૮૨

સાજ : કેસરી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન કિનારીનો ઘેરદાર વાઘો, અંતરવાસનો પટકા ઠાડાં વસ્ત્ર અને ગદલ બધાજ કેસરી.

આભુષણ : પચ્ચીના.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુંજાની ટોપી.

પોષ વદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન- ચાકદાર વાઘો બધા જ ખસખસી રંગના, પીળો કટિનો પટકા, ગુલેનાર ઠાડાં વસ્ત્ર, શ્યામ ગદલ.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ દુમાલો, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

પોષ વદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચાકદાર વાઘો, સુથન તથા મોજા કટિનો પટકો બધા ગુલાબી, મેઘશ્યામ દુરંગી લહેરીયાના, પિરોજાઇ રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, મેઘશ્યામ હાંસિયાનો કેસરી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી તથા મેઘશ્યામ દુરંગી ટિપારો, સફેદ જડાઉ કતરા, મોરશિખા.

પોષ વદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ઘેરદાર વાઘો શ્યામ, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, સફેદ જરીનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ છજેદાર પાઘ, શ્વેત જરીના પાઘની ગોટી, રૂપેરી કામની ગોળ ચંદ્રિકા.

પોષ વદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો લીલાં, પીળો કટિનો પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, શ્યામ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લાલ પગો, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

પોષ વદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : જડાઉ મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો લીલી સાટીનના, સોસની કટિનો પટકા, કેસરી અંતરવાસનો પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, પીળો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો ખુંપ.

પોષ વદ - ૦)) - અમાસ

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન, ઘેરદાર વાઘા, ગુલેબાંસી, ઠાડાં વસ્ત્ર લીલાં, ગદલ ગુલાબી.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેબાંસી ચકરીદાર પાઘ, કામનો કતરો.

મહાસુદ - ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર, વાઘો ચંપઇ રંગના, મેઘશ્યામ કટિનો પટકો, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલેનાર ગદલ.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : ચંપઇ છજેદાર પાઘ, મેઘશ્યામ કામની મોરશિખા.

મહા - સુદ-૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો સોસની, ગુલેનાર કટિનો, પટકા, ગુલેબાંસી અંતરવાસનો પટકા, ગુલેનાર ઠાડાંવસ્ત્ર, સફેદ ગદલ.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોનાંનો ખુંપ.

મહા - સુદ-૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન, ઘેરદાર વાઘો બધા પોપટી, પીળાં ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલેનાર ગદલ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : પોપટી પાઘ, કામની ચંદ્રિકા.

મહા - સુદ - ૪

(નિયમનો શૃંગાર)

ચિ. શ્રીકૃષ્ણકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૧૯૯૪
શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના લાલજી

સાજ : વસંતના બુટ્ટાવાળો લીલો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : જડાઉમોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો લાલ જરીના, સફેદ જરીનો પટકા, મેઘ શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ જરીનો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ-લીલા, ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ ટિપારો, એક ચંદ્રિકા, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

મહા - સુદ -૫ (વસંત પંચમી)

(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : આજથી દરરોજ સફેદ નવો સાજ - ધોયેલ આવે.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, શ્યામ મોજા, સફેદ સાટીનની સુથન, અને લાલ મગજીનો ચાકદાર વાઘો, લાલ પટકા અને ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ, કેસરી ગદલ.

આભુષણ : સોનાનાં, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ છોટી કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ (બુંદી, જલેબી, શિખરનવડી ન આવે) રાજભોગ ધરી વસંતનો કળશ સિદ્ધ કરવો. ચાંદીના ઘડા પર લાલ વસ્ત્ર બાંધવું. ખજુરીની ડાળીમાં બોર ખોસવા, ફુલ ખોસવાં, સરસવ, આબાંનો મોર, મોગરાની ડાળી આ બધું ઘડામાં રોપવું. તેની પાસે ગુલાલ, અબીર, ચંદન, ચોવા પધરાવી અધિવાસન કરવું, સંકલ્પ કરી ઘડા પર ચંદન લગાવી ભોગ ધરવો તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ કરવાં, આચમન મુખવસ્ત્ર કરાવી ચાર બાતીની આરતી કરવી. તે પછી રાજભોગ સરાવી માળા ધરાવી દર્શન ખોલવાં શ્રી...ને ચંદન, ચોવા, ગુલાલ અને અબીર આ ક્રમથી ખેલાવવાં પછી પિછવાઈને ખેલ કરાવવો તે પછી ગુલાલ, અબીર, ઉડાવી ટેરો લેવો. પછી ઉત્સવ ભોગ ધરવો.

ઉત્સવ ભોગ : મઠડી, સેવના લાડુ, કુરના ગુંજા, ફીકામાં કચોરી છોંકયો - મીઠો દહીં, બીજ, કાચાં સંધાણાં, વડીની છાશ, તુલશી શંખોદક ધુપદીપ થાય, સમય થયે ભોગ સરાવી નિત્યક્રમ કરવો.

અનોસરમાં ખેલનો સાજ શૈયા પાસે પધરાવવો. ખેલના દિવસોમાં ખેલના ભોગની તબકડી, ખેલ સમયે સિંહાસન પાસે અને અનોસરમાં શૈયા પાસે ઢાંકીને ધરવી. મહા સુદ-૧૫ સુધી ખેલ હલકો, વસ્ત્રો રેશમી આવે.

મહા સુદ - ૬

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળા મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો શ્યામમગજીના પીળા, ગુલાબી કટિનો પટકા, શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ગદલ.

આભુષણ : લીલા મીનાંના.

શ્રીમસ્તકે : પીળી છજેદાર પાઘ, લીલી કામની મોરશિખા.

મહા સુદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા -સુથન અને ચાકદાર વાઘો, બધા જ મુંગીયા રંગનાં (ઘેરોલીલો) સફેદ કટિનો પટકા, ચંપઇ ઠાડાં વસ્ત્ર, મેઘશ્યામ ગદલ.

આભુષણ : સફેદ મીનાંના.

શ્રીમસ્તકે : લાલ ફેંટા, કામની કલગી.

મહા સુદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો બધા જ લાલ, પીળો કટિનો પટકા, લાલ ખભાનો પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : પિરોજાઇ મીનાંના

શ્રીમસ્તકે : સોનાનો કિરીટ

મહા - સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચાકદાર વાઘા, સુથન તથા મોજા કેસરી, લીલો કટિનો પટકો, લીલા રેશમી ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ, કેસરી અંતરવાસનો પટકો.

આભુષણ : લાલ મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : કામનો કતરો, ચંદ્રિકા, કેસરી છજેદાર પાઘ, સોનાનો સેહરો.

મહા સુદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો બધા જ ગુલાબી. લીલો કટિનો પટકા, પતંગી ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ ગદલ.

આભુષણ : લીલા મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પીળો ટિપારો, કામનો કતરો - મોરશિખા.

મહા - સુદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો પિરોજાઇ રંગના, લાલ કટિનો પટકા, પિરોજાઇ અંતરવાસનો પટકા, કેસરી ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ગદલ.

આભુષણ : સફેદ મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોનાનો ખુંપ.

મહા સુદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા, સુથન, ઘેરદાર વાઘો બધા જ કેસરી, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ, મેઘશ્યામ પટકા.

આભુષણ : પિરોજાઇ મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી ચકરીદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

મહા સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા - સુથન અને ચાકદાર વાઘો બધા જ લીલા, લાલ કટિનો પટકા, ખસખસી ઠાડાં વસ્ત્ર, કેસરી ગદલ.

આભુષણ : મુંગાના.

શ્રીમસ્તકે : લીલો દુમાલો, કામનો કતરા, ચંદ્રિકા.

મહા સુદ - ૧૪

તિ. ગો. શ્રી વ્રજભુષણજી ના ઉત્સવની વધાઈ
ગીત ગવાય નગારા બેસે

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા - સુથન અને ચાકદાર વાઘો, બધા જ સોસની, લાલ કટિનો પટકા, અમરસી ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ગદલ.

આભુષણ : સફેદ મીનાંનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોસની છજેદાર પાઘ, રૂપેરી લુમતોરા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

મહા - સુદ-૧૫

હોળી દંડારોપણ ઉત્સવ
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : શ્યામ મોજા, સફેદ સુથન-સફેદ કિનારીનો ચાકદાર વાઘો, ચોવાની ચોળી, લાલ કટિનો પટકા, ઠાડાં વસ્ત્ર લાલ, કેસરી ગદલ.

આભુષણ : સોનાનાં - વનમાળા સુધી શૃંગાર, પાંખડીનાં ચાર કર્ણફુલ, ઢોલના, સોનાની બે હમેલ.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ ખિડકીની સફેદ છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા, સવારે હોરી દંડારોપણ થાય તો - રાજભોગ દર્શનમાં કપોલ મંડાય, ફેંટ ભરાય, પિચકારી, અને ફુલના વેણું વેત્ર ધરાય. સાંજે હોરી દંડારોપણ થાય તો - આ ક્રમ મહા - વદ ૧ ના રાજભોગમાં થાય.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઈનો બદલે મનોહર.

રાજભોગદર્શન : આજથી ખેલમાં કપોલ રંગાય.

મહા વદ - ૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આજથી સુતરાઉ વસ્ત્ર આવે. સફેદ લાલ મગજીનાં સુથન - ઘેરદાર વાઘો, લાલ મોજા, શ્વેત કટિનો પટકા, ગુલાલની ચોળી, શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં - કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ છજેદાર લાલ ખીડકીની પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

મહા વદ - ૨

(નિયમનો શૃંગાર)

તિ. ગો. શ્રી વ્રજભુષણલાલજી મહારાજશ્રીનો ઉત્સવ પ્રા. સં ૧૯૬૮

બંદનબાર બંધાય, ચોક પુરાય

સાજ : સાજ કેસરી રૂપેરી કિનારીનો.

મંગળભોગ : તવા પુરીનો.

વસ્ત્ર : કેસરી મોજા, કેસરી વસંતી છીટની સુથન, શ્વેત વસંતી છીટનો ચાકદાર વાઘો, પતંગી કટિનો પટકા ગુલેબાંસી, ઠાડાંવસ્ત્ર, લાલ કિનખાબની ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે, ૭ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, નિજ તિબારીમાં બગીચો બંધાય. ચાંદીના બંગલામાં બિરાજે. શયનમાં રાળ ઉડે.

રાજભોગ દર્શન : આજે દાઢી રંગાય, મોતીની આરતી આવે અને ન્યોછાવર થાય, અનોસરમાં પલના આવે. રાજભોગ આરતી પછી શ્રી પાદુકાજીના કેસર સ્નાન થાય.

મહા વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા મોજા, સુથન અને ચાકદારવાઘો, ખસખસી સફેદ કટિનો પટકા, લીલાં ઠાડાં વસ્ત્ર, ગુલાબી ફરગુલ.

આભુષણ : લાલ મીનાંના.

શ્રીમસ્તકે : ખસખસી છજેદાર પાઘ, કામનો કતરા.

મહા વદ - ૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીગિરધરલાલજી ગાદી બિરાજ્યાનો ઉત્સવ

સંવત ૧૯૦૮

સાજ : કેસરી, ગાદી - તકિયા, કેસરી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી સુથન, પીળાં મોજા, કેસરી ચાકદાર વાઘો, પતંગી કટિનો પટકા, ઠાડા વસ્ત્ર પતંગી, કેસરી અંતરવાસનો પટકા, કિનખાબનો ફરગુલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

આભુષણ : લીલા મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છજેદાર પાઘ, સોનાનો સેહરા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, પકોડીની છાશ, લુચઈને બદલે મેવાટી મનોહર, મેવાભાત, સેવના લાડુ, આજે ખેલમાં દાઢી રંગાય.

શયનમાં : ફુલના શૃંગાર, ફુલનો સેહેરો, શ્રીકંઠમાં ફુલની માળાઓ ધરે.

મહા વદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલાં મોજા, સફેદ સુથન અને ચાકદાર વાઘો, પતંગી રંગનો કટિનો પટકા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : શ્વેત છજેદાર પાઘ, રૂપેરી કામની મોર શિખા.

મહા વદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલાં મોજા, સુથન, અને ચાકદાર વાઘો પોપટી, લાલ કટિનો પટકા, શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પોપટી છજેદાર પાઘ, કામની મોર શિખા.

મહા વદ-૭ શ્રીનાથજીનો પાટોત્સવ

(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : કેસરી કિનારીનો, ગાદી તકિયા કેસરી.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : રેશમી, અમરસી, વિના કિનારીના, સુથન, મોજા, અને ચાકદાર વાઘો, લાલ તનિયા અને પટકા, સફેદ ઠાડાં વસ્ત્ર, લાલ કિનખાબનો ફરગુલ.

આભુષણ : જડાવના, સોનાની હંસલી, બે હમેલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છોટી કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : શ્રીનાથજીના ભાવનાજી પધારે, ડબરાનો સાજ આવે પાંચ રંગના ગુલાલથી ખેલે. સફેદ, અને કેસરી ચંદન તથા ચોવાથી ખેલે. ભોગ સર્યા પછી ભીતર તિલક થાય, ચુનની આરતી થાય, તે પછી શ્રીનાથજીના ભાવનાજી પધારે. ત્યારપછી દર્શન ખુલે, ભારે ખેલ થાય. આજે દાઢી રંગાય.

શયન : ફુલના ગજરા, છડી, કપોલ રંગાય, રાળ ઉડે.

મહા વદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર પીળા વસંતી, ઠાડા વસ્ત્ર સફેદ, મેઘશ્યામ ફરગુલ.

આભુષણ : લાલ મીનાંના.

શ્રીમસ્તકે : મુગટ મીનાંનો.

નોંધ :- ઠંડી ઓછી થાય તો મુગુટ ધરે અને મોજા વડા થાય. જો મુગટ ન ધરે તો નીચેનો શૃંગાર કરવો.

વસ્ત્ર : સુથન ચાકદાર વાઘો અને મોજા, ખસખસી, બદામી રંગનો કટિનો પટકા, શ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર, લીલો ફરગુલ.

આભુષણ : લાલ મીનાંના.

શ્રીમસ્તકે : ખસખસી છજેદાર પાઘ, મેઘશ્યામ મખમલનો કતરો.

મહા વદ - ૯

શ્રીગોપાલલાલજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૩૫

શ્રીશરદકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોજા સુથન, અને ચાકદાર વાઘો બદામી, પોપટી કટિનો પટકો, મેઘ શ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર, લીલો ફરગુલ.

આભુષણ : સફેદ મીનાનાં

શ્રીમસ્તકે : બદામી છજેદાર પાઘ, કેસરી મખમલનો કતરો.

નોંધ - જો મહાવદ અષ્ટમીએ ઠંડી ઓછી થઈ હોય અને મુગટ ધર્યો હોય તો તે દિવસથી મોજા વડા થાય. પરંતુ જો ઠંડી ચાલુ રહી હોય અને જો મુગટ મહાવદ - ૧૧ કે ફાગણ સુદ ૨ કે પછી ફાગણ સુદ ૮ ઉપર જ્યારે ઠંડી ઓછી થઈ હોય અને મુગટ ધરે તો તે દિવસથી જ મોજા વડા થાય. અને ફરગુલ પણ વડો થાય.

મહા વદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ મોજા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો લીલો, કેસરી કટિનો પટકા, પતંગી ઠાડા વસ્ત્ર, મેઘશ્યામ ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં

શ્રીમસ્તકે : લીલી છજેદાર પાઘ, કામનો કતરો.

મહા વદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર, બદામી રંગના અને સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર, કેસરી ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોનાનો મુગટ.

મહા - વદ - ૧૨

સાજ : સફેદ.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદાર વાઘો પીળો, લીલો કટિનો પટકા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર, ગુલાબી ફરગુલ.

આભુષણ : સોનાનાં

શ્રીમસ્તકે : પીળી છજેદાર પાઘ, કામનો કતરો.

મહા - વદ - ૧૩ શિવરાત્રી

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચોવાનો ઘેરદાર વાઘો, સુથન, કટિનો પટકા કેસરી, શ્વેત ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી વસંતી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

મહા વદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, અને ચાકદાર વાઘા પીળા, ગુલાબી કટિનો પટકા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પીળી છજેદાર પાઘ, રેશમી મોર શિખા .

મહા - વદ - ૦))

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો પતંગી, શ્વેત ઠાડા વસ્ત્ર, પીળો વસંતી કટિનો પટકા.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પતંગી ટિપારો, કામના કતરા, ચંદ્રિકા.

ફાગણ સુદ - ૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો સફેદ, પતંગી કટિનો પટકા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં, ચાર સફેદ મીનાનાં કર્ણફુલ, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ, છજ્જેદાર પાઘ, સાદી મોર ચંદ્રિકા.

ફાગણ સુદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન - કાછની અને પીતાંમ્બર ખસખસી રંગના, સફેદ ચીકણાં ઠાડાંવસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી મીનાનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ફાગણ સુદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, અને ચાકદાર વાઘો, ગુલાબી, કેસરી કટિનો પટકા, લીલાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી ચકરીદાર પાઘ, લીલો મખમલનો કતરો.

ફાગણ સુદ - ૪
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, ચાકદાર વાઘો, અંતરવાસનો પટકો પીળો વસંતી; પતંગી કટિનો પટકા, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ મીનાનાં, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : પીળી વસંતી છજેદાર પાઘ, લીલમીનાનો સહેરો.

ફાગણ સુદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર પોપટી, સફેદ ચીકણાં ઠાડા વસ્ત્ર .

આભુષણ : સફેદ મીનાંના.

શ્રીમસ્તકે : પિરોજાઇ મીનાનો મુગટ.

નોંધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ફાગણ સુદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચાકદાર વાઘો, સુથન અને કટિનો પટકો કેસરી, પતંગી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી ફેટા, સાદી ચંદ્રિકા.

ફાગણ સુદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદાર વાઘો, પતંગી; કટિનો પટકા કેસરી, અબીરની ચોળી, બદામી ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : પતંગી રંગની ચકરીદાર પાઘ, સાદી મોર ચંદ્રિકા.

ફાગણ સુદ - ૮ હોળાષ્ટક
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, કાછની અને પીતાંમ્બર ખસખસી રંગના, સફેદ ચીકણાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોનાનો મુગટ.

રાજભોગમાં : તિબારીમાં કુંજ બંધાય, ફુલ મંડળીમાં બિરાજે.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

ખેલના ભોગ : ઝીણાં સેવના નૂંગ - કચોરી.

શયન : રાળ - ગુલાલ ઉડે

નોંધ - મુગટ જ ધરે વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ફાગણ સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો ગુલાબી, લીલો, કટિનો પટકા, શ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર .

આભુષણ : લીલા મીનાનાં

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છજેદાર પાઘ, પીળો મખમલનો કતરો.

ફાગણ સુદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુવા પંખી, ચાકદાર વાઘા, તેવીજ સુથન, કેસરી કટિનો પટકા, શ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મુંગાના આભરણ.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છજેદાર પાઘ, કેસરી મખમલનો કતરો.

ફાગણ સુદ - ૧૧ કુંજ એકાદશી
ડોલોત્સવ ના નગારખાના બેસે
(નિયમનો શૃંગાર)

મંગળભોગ : ખાંજા

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન ચોવાનું, નાની કાછની ચોવાની, મોટી કાછની કેસરી, ચોવાની ચોળી, કેસરી પીતામ્બર, સફેદ ચીકણાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં બે હમેલ - ઢોલના, સોનાની હંસલી ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સોનાનો મુગટ, રાજભોગમાં અને ભોગમાં ફુલનો મુગટ ધરે.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

રાજભોગ દર્શન : નિજ મંદિર અને તિબારીમાં થઇ સોળ કેળની કુંજ બંધાય, તિબારીમાં રંગનો ફુવારો ઉડે. ખેલના ભોગમાં ખાજાં આવે. પાંચે રંગના ગુલાલથી ખેલે કેસુડાનો રંગ ઉડે.

સંધ્યા : સંધ્યા આરતી પછી કુંજ ખૂલે.

શયન : ઠંડી હોયતો ચોવાનો ઘેરદાર વાઘો, નહીંતો સુથન-પટકા ફુલના ગજરા, દાઢી રંગાય. રાળગુલાલ ઉડે. કીર્તનીયા નાચે.

નોંધ :- આજથી ડોલ સુધી પાંચે રંગના ગુલાલથી ખેલે અને શયનમાં રોજ રાળ, ગુલાલ હોળી સુધી ઉડે.

ફાગણ સુદ - ૧૨

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ઘેરદાર વાઘો અને સુથન ચોવાના, સફેદ પટકા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં, ચાર કર્ણફુલ.

શ્રીમસ્તકે : ચોવાની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા .

શયન : શયનમાં ફુલના ગજરા - દાઢી રંગાય, રાળ, ગુલાલ ઉડે કીર્તનીયા નાચે .

ફાગણ સુદ - ૧૩
બગીચા

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : જન્માષ્ટમીનું સુથન અને ચાકદાર વાઘો, કટિનો પતંગી પટકો, અંતર વાસનો કેસરી પટકો, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા મીનાનાં બે હમેલ, ઢોલનાં, હંસલી, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છજેદાર પાઘ, લાલ મીનાનો સહેરા.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

રાજભોગ દર્શન : ચોકમાં ૮૪ કેળનો બગીચો બંધાય, રંગના ફુવારા ઉડે, રાજભોગ આરોગી બગીચામાં પધારે.

બગીચાભોગ : ફેણી, માંખણવડા, બુદીના લાડુ, જીરાપૂરી, શ્રીખંડ-વડી બિલસારૂં, ખીર, કેસરી દુધ, મીઠું છોકયું દહી સંધાણું કચોરી ફડફડીયા, તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય, ભોગ સરે બીડી આરોગે, પછી ભારે ખેલ થાય, અનોસર બગીચામાં થાય સંધ્યા આરતી પછી નિજ મંદિરમાં પધારે.

શયનમાં : ફુલના શૃંગાર અને ફુલનો સહેરો, દાઢી રંગાય અને રાળ ગુલાલ ઉડે, કીર્તનીયા નાચે.

ફાગણ સુદ - ૧૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો, સફેદ, લાલકટિનો પટકા, શ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં ચાર કર્ણફુલ, વનમાલા સુધી શૃંગાર

શ્રીમસ્તકે : સફેદ છજેદાર પાઘ, સાદી મોર ચંદ્રિકા.

શયનમાં : દાઢી રંગાય, રાળ ઉડે, ગુલાલ ઉડે. કિર્તનીયા નાચે.

નોંધ :- જો હોળી ચૌદસની હોય તો આ શૃંગાર ફાગણ સુદ - ૧૦ ના દિવસે થાય.

ફાગણ સુદ - ૧૫

હોળી - ઉત્સવ

(નિયમનો શૃંગાર)

મંગળભોગ : સકરપારા.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : સફેદ સુથન, દોરિયાનો સફેદ ચાકદાર વાઘો, કેસરની ચોળી, કેસરી કટિનો પટકા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સોનાનાં; બે હમેલ, ઢોલના, પાંખડીના ચાર કર્ણફુલ ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

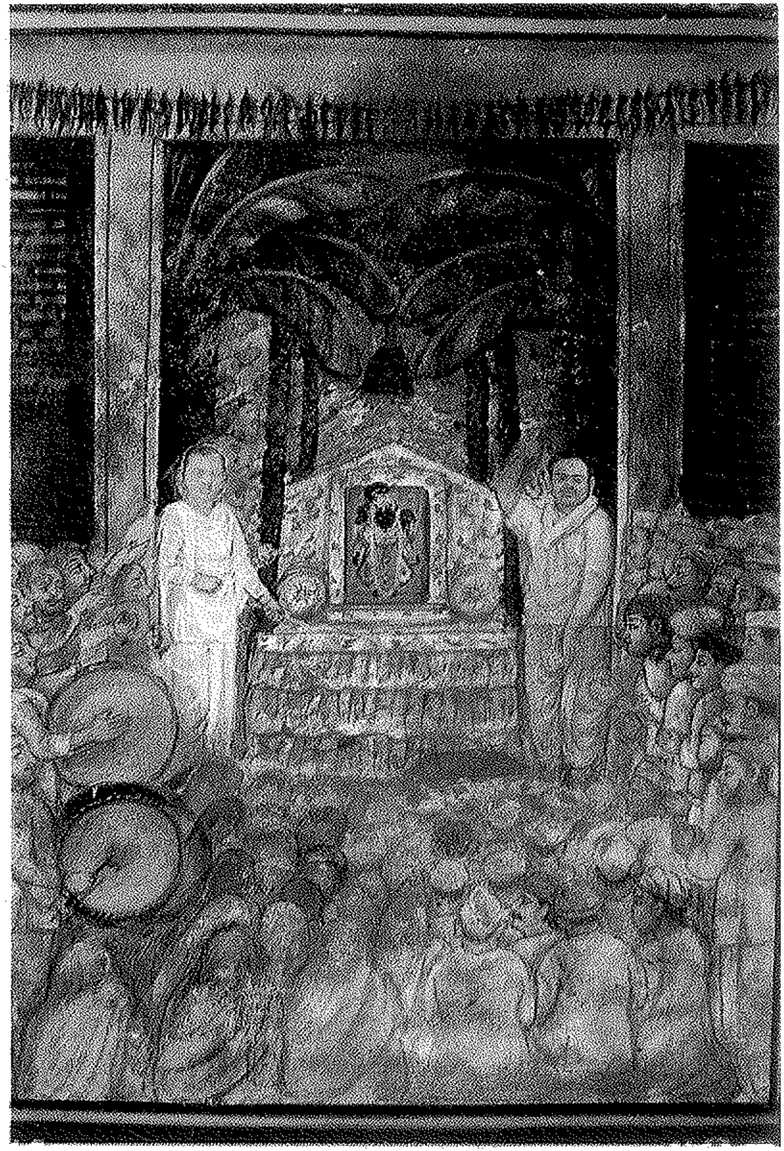

શ્રીમસ્તકે : સફેદ કેસરી ખીડકીની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, લુચ્ચઇને બદલે ગુદડીયા પુવા. બુંદી, જલેબી, દુધઘરની સામગ્રી એક, રાયતાં નહી.

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગમાં ખેલ ભારે.

: અનોસરમાં મનોહરના લાડુ, દુધઘરની એક સામગ્રી ફીકાની કોઇપણ એક સામગ્રી આવે.
સાંજે હોળી પ્રગટયા પછી શયન ભોગ સરે.

શયન દર્શન : શયનમાં દાઢી રંગાય, રાળ ગુલાલ ઉડે કિર્તનીયા નાચે.

નોંધ (૧) હોળી અને ડોલ જો એક જ દિવસે હોય તો હોળીનો શૃંગાર ચૌદસે થાય.
(૨) હોળી અને ડોલ વચ્ચે જો પડતર દિવસ આવે તો તે દિવસનો શૃંગાર નીચે પ્રમાણે કરવો.

વસ્ત્ર : સફેદ કેસરના છાપાનાં સુથન, ઘેરદાર વાઘો, ઠાડાં વસ્ત્ર ખુલતાં રંગના.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : કેસરના છાપાના, સફેદ ગોળપાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : રાજભોગ દર્શનમાં પાંચે રંગથી ખેલે.

શયનમાં : દાઢી રંગે, રાળ ગુલાલ ઉડે - કિર્તનીયા નાચે.

ફાગણ વદ - ૧ ડોલોત્સવ
(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી બાલકૃષ્ણજીના ચર્તુથ પુત્ર શ્રી પીતામ્બરજી નો ઉત્સવ સવંત ૧૬૩૯

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : સફેદ સાટીનનો, લાલ ગોટનો સુથન, અને ચાકદાર વાઘો, તનિયા, પટકા તથા ઠાડા વસ્ત્ર લાલ.

આભુષણ : જડાઉ, બે હમેલ, ઢોલનાં સોનાની હંસલી.

શ્રીમસ્તકે : નિત્યની સફેદ કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, લુચ્ચઇને બદલે જીરાપુરી, બિલસારૂં, કાંજીની ચપટિયા.

રાજભોગ દર્શન : ખંડપાટ ન બિછે વેણું - વેત્ર ધરાવી આરસી બતાવી આરતી થાય.

રાજભોગ આવ્યા પછી ડોલનું **અધિવાસન** થાય રાજભોગ આરતી બાદ માળા વડી કરવી શ્રી મહાપ્રભુજીને દંડવત કરી ઝાલર ઘંટા વગાડતાં વેણું વેત્ર મુખવસ્ત્ર પધરાવી પછી શ્રી ને ડોલમાં પધરાવવા, પછી ગુંજામાળા અને પુષ્પમાળા ધરાવી દર્શન ખોલવા.

૧લો ખેલ : ચંદન સફેદ અને કેસરી પાંચ રંગના ગુલાલ થી ખેલે સુક્ષ્મ ખેલ, પિછવાઇને પણ સુક્ષ્મ ખેલ થાય, ગુલાલ અબીર ઉડાવવા.

ભોગ મઠડી, ગુંજા, સેવ, બુંદીનો લાડું, મેવાટી, સકરપારા સફેદ - કેસરી ફેણી, અને બાબર છુટી બુંદી, ફીકાની એક સામગ્રી, મીઠો છોકયું દહી, બીજ, સંધાણાં, કાંજી, છાસ, પેડાં, બરફી, સફેદ દુધ, ફળફુલ, તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ, સમય ૧ ઘડી આચમન - મુખવસ્ત્ર કરી બીડાં ગુંજામાળા પુષ્પમાળા નવી ધરાવવી ખેલનો ભોગ ઢાંકીને ધરવો.

૨જો ખેલ : પહેલાં ખેલની જેમ કરી ઝુલાવી, આરતી કરવી. ઝારી ભરી ભોગ ધરવો, સામગ્રી ૧લા ખેલ પ્રમાણે સર્વ પ્રકાર તે પ્રમાણે કરવો.

૩જો ખેલ : ખેલ પૂર્વવત્ કરી ઝુલાવી, આરતી કરવી, ઝારી ભરી ભોગ ધરવો, છુટી બુંદી સકરપારા, પેડા, બરફી, સફેદ દુધ, ભંડારની સમાગ્રી, ફળફુલ બાલભોગની સામગ્રી, બીજ સંધાણાં કાંજીવડા, છાસીવડા, બે પ્રકારની ફીકા, છોંકયો - મીઠો દહી, ભંડારના ભૂજેના, માખણ - મિસરી શિખંડવડી, બિલસારૂં સર્વ પ્રકાર પૂર્વવત્.

૪થો ખેલ : નવી ગુંજા, માળા, ચૈત્રી ગુલાબની પુષ્પમાળા ધરે, દર્શનમાં બીડી આરોગે. ડોલમાં મેવા - મિસરીની ખીચડી ઢાંકીને ધરવી, ખેલનો ભોગ ઢાંકીને ધરવો. દાઢી ન રંગાય. પિછવાઇ પર ભારે ખેલ, ખુબ રંગ ઉડે.

બધાને ફગવા વંટાય, આરતી ન્યોછાવર થાય તે પછી પાંચ પ્રદિક્ષિણા કરી સાષ્ટાંગ દડંવત કરવા. દર્શન બાદ રાઇ લોન કરવા. તે પછી ઉત્થાપન સંધ્યા ભોગ ભેગો ધરી સંધ્યા આરતી કરવી. તે પછી શ્રી...ને શૃંગાર ચોકી પર પધરાવવા શૃંગાર વડો કરી ભીનાં, કોરા, અંગ વસ્ત્રથી શ્રી....અંગ પોંછવું અત્તર સમર્પવું. લાલ તનિયા, લાલ આત્મસુખ અને લાલ કુલ્હે ધરે પરંતુ જો હોળી હવે પ્રકટવાની હોય તો - તે જ વાગા સુકવીને ધરે, છેડા સુધી શૃંગાર એક હમેલ રહે શયન ભોગ ધરવો હોરી તે દિવસે પ્રગટે તો શયનમાં ઠાડાં વેણું વેત્ર ધરે, ગુલાલ અબીર ઉડે, ન્યોછાવર થાય, કિર્તનીયા નાચે, શયન અનોસરમાં નિજમંદિરમાં ખેલેલો સાજ રહે બીજે દિવસે વડો થાય, હોળી આગળના દિવસે પ્રગટી હોય તો - રાજભોગ આવ્યા પછી નિજમંદિર સ્વચ્છ થાય. રંગ નીકળી જાય, અને દ્વિતીયા પાટનો સાજ બંધાય. સાંજે મંદિર સ્વચ્છ થઇ જાય, હોળી પ્રગટે તેના બીજા દિવસથી ગોળની સામગ્રી, ઠોર મઠડીમાં તલ, આદુ - આદુ પાચરી બંધ થાય, ગોળના બદલે ગુલાબ કાતરી અડદની દાળના બદલે તેવટી દાળ (ત્રણ દાળ ભેગી - મગ, અડદ તુવેર) આવે.

ફાગણ વદ - ૨ દ્વિતીયા - પાટોત્સવ

(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : લાલ જરીનો, ગાદી તકિયા જરદોજી, સફેદી નહી

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય, આજે અભ્યંગમાં આબળાં ચંદનની સાથે જરૂર આવે.

વસ્ત્ર : સુથન - ચાકદાર વાઘો, અને અંતરવાસનો પટકો લાલ જરીનો, સફેદ જરીનો કટિનો પટકો, મેઘશ્યામ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ - લીલાં, લાલ હાંસ ત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : જડાઉ કિરીટ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, તેવટી દાળ, કાંજીની ચપટિયા આવે.

રાજભોગ દર્શન : ચૈત્રી ગુલાબની ફુલ મંડળી
બપોરે અનોસરમાં ઝીણી સેવના લાડુ ફીકાની સામગ્રી
આજથી ફુલ મંડળી શરૂ થાય.

ફાગણ વદ - ૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો લીલી જરીનો, પીળી જરીનો કટિનો પટકા, ઠાડાં વસ્ત્ર સોસની રંગના.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : લીલી જરીનો દુમાલો, કામનો કતરો - ચંદ્રિકા.

ફાગણ વદ - ૪

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદાર વાઘો ગુલેબાંસી જરીના, પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેબાંસી, જરીનો ચીરા, પિરોજાઇ મખમલની કામની મોર શિખા.

ફાગણ વદ - ૫

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની, અને પીતાંમ્બર મેઘશ્યામ જરીના, સફેદ ચીકણાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુક્ષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી ડાંકનો મુગટ.

ફાગણ વદ ૬

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન અને. ચાકદાર વાગો શ્યામ જરીનો, ગુલાબી જરીનો કટિનો પટકા, પિરોજાઇ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : જડાઉ ટિપારો, તે ઉપર કામનો કતરો - ચંદ્રિકા.

ફાગણ વદ ૭

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન, ચાકદાર વાઘો, અને અંતરવાસનો પટકો સોનેરી જરીનો, સફેદ જરીનો કટિનો પટકા સફેદ જરીનો, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી જરીનો ચીરા, લાલ જડાઉ સેહરા.

ફાગણ વદ ૮

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતામ્બર ગુલેબાંસી જરીના, સફેદ ચીકણાં ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : મેઘશ્યામ ડાંકનો મુગટ.

ફાગણ વદ - ૯ (ગુપ્ત ઉત્સવ)
(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : કેસરી - સફેદી ચઢે

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : (ઠંડી હોય તો લાલ જરીના - ગરમી હોય તો લાલ છાપાના) સુથન અને ચાકદાર વાઘો લાલ, તનિયા અને પટકા પીળા, જરીના વસ્ત્ર હોય તો ઠાડું વસ્ત્ર મેઘશ્યામ છાપાના વસ્ત્ર હોય તો ઠાડું વસ્ત્ર લીલાં છાપાનું.

આભુષણ : સફેદ લીલા, લાલ હાંસ - ત્રવલ.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે પણ ગરમી હોય તો લાલ છાપાની કુલ્હે, કામનો જોડ.

ફાગણ વદ - ૧૦
(નિયમનો શૃંગાર)

છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ સવંત ૧૯૫૧

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - બન્ને કાછની અને પીતામ્બર ગુલેબાંસી, સફેદ ભાતવાર ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ - લીલાં

શ્રીમસ્તકે : પચ્ચીનો મુગટ, લાલ જરીના ગોકર્ણ ધરે.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

ફાગણ વદ - ૧૧

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો કેસરી છાપાનાં, લીલા છાપાનો કટિનો પટકો, લાલ છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છાપાનો ટિપારો, કામના કતરા -ચંદ્રિકા.

ફાગણ વદ - ૧૨

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદાર વાઘો મેઘશ્યામ છાપાનો, લાલ છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : મેઘશ્યામ છાપાની છજેદાર પાઘ, કામની ચંદ્રિકા.

ફાગણ વદ - ૧૩

શૃંગાર

વસ્ત્ર : સુથન - ચાકદાર વાઘો અને અંતરવાસનો પટકો પીળા છાપાના, પિરોજાઇ છાપાનો કટિનો પટકા, લીલા છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : પીળી છાપાની છજેદાર પાઘ, લાલ જડાઉ સેહરા.

ફાગણ વદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો પોપટી છાપાના, મેઘશ્યામ છાપાનો પટકા, શ્યામ છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : પોપટી છાપાનો ફેટા, ગુલાબી કામની કલગી.

ફાગણ વદ ૦))

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો બદામી છાપાના પચરંગી લહેરીયાનો કટિનો પટકો, પીળા છાપાના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છાપાંનો ટિપારો, કામના કતરા મોર શિખા.

ચૈત્ર સુદ - ૧ સંવતસરોત્સવ

(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : લાલ છાપાનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો લાલ છાપાનો, પીળો તનિયા, પીળો છાપાનો પટકો, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર (આજથી ઠાડા વસ્ત્ર સુતરાઉ જ આવે).

આભુષણ : લીલા, - લાલ હાંસ - ત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છાપાની કુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈના બદલે ઝીણી સેવના લાડુ, રાયતું ન આવે.

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગ આરતી પછી પંચાગ વંચાય, ફુલમંડળી આવે.

ચૈત્ર સુદ - ૨

સાજ : લીલો છાપાનો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા છાપાનું સુથન, ઉપરની કાછની લાલ છાપાની, નીચેની કાછની લીલા છાપાની, લાલ છાપાનું પીતાંમ્બર, સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ચૈત્ર સુદ - ૩ પ્રથમ ગનગૌર

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : ચુંદડીનો

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદાર વાઘો ચુંદડીનો, સોસની કટિનો પટકા, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષંણ : સફેદ, ચાર કર્ણ ફુલ, છેડા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડી ની છજેદાર પાઘ, મોતીનાં લુમ-તોરા.

રાજભોગ દર્શન : ચૈત્રી ગુલાબની ફુલ મંડળી.

ચૈત્ર સુદ-૪ દ્વિતીય-ગનગૌર

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : લીલો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, ચાકદાર વાઘો અને અંતરવાસનો પટકા લીલા, શ્યામ કટિનો પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લીલી બાતીની પાઘ, સોનેરી લુમતુર્રા.

રાજભોગ દર્શન : ચૈત્રી ગુલાબની ફુલ મંડળી.

ચૈત્રી સુદ - ૫ ગનગૌર

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : ગુલાબી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બંને કાછની અને પીતાંમ્બર ગુલાબી, ગુલાબી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી મીનાનો મુગટ.

રાજભોગ દર્શન : ચૈત્રી ગુલાબની ફુલમંડળી.

ચૈત્ર સુદ - ૬ શ્રીયુદુનાથજીનો ઉત્સવ (ગનગૌર)
(શ્રીગુંસાઈજીના છઠ્ઠાલાલજી સંવત - ૧૬૧૫)
શ્રીયમુનાજીનો ઉત્સવ, (નિયમના શૃંગાર)

સાજ : કેસરી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો કેસરી, પટકા અને ઠાડા વસ્ત્ર લાલ.

આભુષણ : લીલા, - સફેદ, હાંસ ત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

ચૈત્ર સુદ-૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો પચરંગી લહેરીયાના, શ્યામ કટિનો પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડાંવસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : પચરંગી લહેરીયાની, છજેદાર પાઘ, ગુલાબી કામની મોરશિખા.

ચૈત્ર સુદ-૮
શ્રી વ્રજભુષણજીનો ઉત્સવ, સંવત ૧૮૩૫
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળો તનિયા, સુથન અને ચાકદાર વાઘો લાલ, પીળો કટિનો પટકા, પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ, લાલ હાંસ ત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ કુલ્હે, કામનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, ફુલ મંડળી આવે.

ચૈત્ર સુદ-૯ રામનવમી
શ્રીબાલકૃષ્ણજીના તૃતીય પુત્ર શ્રી વ્રજભુષણજીનો ઉત્સવ - સંવત ૧૬૩૬
ચિ શ્રી યુદુનાથજીનો જન્મદિવસ સંવત ૧૯૮૮ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના લાલજી
(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : જરદોજી પિછવાઈ, આજથી મંગળા, શૃંગાર, શયન અને રાતે અનોસર પણ તિબારીમાં થાય.

મંગળા પછી પંચામૃત નો શૃંગાર : પીળા રેશમી ધોતી ઉપરણા, સોનાનાં આભરણ, કડાં નૂંપુર દુલરી, કટિમેખલા, ઝાલર ઘંટા શંખ વાગે શ્રી ને તિલક કરી પંચામૃત નો સંકલ્પ કરવો. તુલસી સમર્પવા દુધ, દહી, ઘી, ખાંડ અને મધથી આ ક્રમે સ્નાન કરાવવું. ફરી દુધથી સ્નાન કરાવ્યા પછી પાંચ શંખ શીતલ જલથી

સ્નાન થાય, તે પછી ઉષ્ણજલથી સ્નાન કરાવી અભ્યંગ કરાવી તે પછી અંગવસ્ત્ર કરવું.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી તનિયા - કેસરી સુથન બંધે બંદનો વાઘો કેસરી દોરીયાનો, પટકા કેસરી સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બે જોડી, (૧) લાલ (૨) લીલા સફેદ કડાં, પહોંચી, કુંડલ ચારે આભરણ - મણિ આદિ, બે હમેલ, લાલ હાંસ, લીલી ત્રવલ, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મધ્યમ કુલ્હે સાત ચંદ્રિકાનો જોડ, બે વૈજ્યંતી હાર, ટકમા ચોકઠું.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

જન્મ દર્શન : રાજભોગ સરે તે પછી ફુલમંડળી આવે પછી જન્મના દર્શન ખૂલે શાલિગ્રામજીને પંચામૃત થાય.

ઉત્સવ ભોગ : સકરાપારા, બુંદી, ફળાહારમાં સેવ, ઘેંસ, શીતલભોગ, છોકયો મીઠો દહી, કચોરી, બીજ, કાચા સંધાણા, દહીભાત, છાશ, દુધઘરની એક સામગ્રી, તુલસી, શંખોદક, ધૂપદીપ થાય ભોગ સર્યા પછી રાજભોગ આરતી થાય ન્યોછાવર થાય.

સંધ્યા : સંધ્યા આરતી પછી બધા શૃંગાર વડા કરવા કેસરી ઉપરણો કેસરી નિત્યની કુલ્હે, ફૂલનો અડધો જોડ, શયનભોગ તિબારીમાં આરાગે. મઠડી, આરાગે, આજથી શયનમાં ફુવારા શરૂ.

નોંધ :- આજથી હિંડોળા ખાટ, અને પંખાશરૂ વધુ ગરમી હોય તો સવંત્સર અથવા ગુપ્ત ઉત્સવથી શરૂ થાય.

ચૈત્ર સુદ - ૧૦

(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ખૂલ્લે બંધનો ચાકદાર વાઘો, કેસરી દોરીયાનો, સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ - ૧ જોડીનો શૃંગાર, લીલા હાંસ ત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી નિત્યની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

ચૈત્ર સુદ - ૧૧ (નિયમના શૃંગાર)

શ્રી મહાપ્રભુજીના ઉત્સવની વધાઈ

ગીત નગારા બેસે, ચોક પુરાય, ધ્વજા પતાકા બંધાય, બંદનબાર બંધાય.

સાજ : જરદોજી પિછવાઈ

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ખૂલ્લેબંદનો ચાકદાર વાઘો કેસરી, સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) સફેદ. લીલી ઠેકડાની પહોંચી, સફેદ કડાં, હાર, પદક, લાલ હાંસ, લીલી ત્રવલ, આયુધના સાત ફુલ, બે વૈજયંતી હાર, ચરણચોકીની ઉપલી કોર સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મધ્યમ કુલ્હે ૧૧ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

ચૈત્ર સુદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતામ્બર પીળા, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ડાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ચૈત્ર સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદારવાઘો લહેરીયાનો, પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : લહેરીયાની છજેદાર પાઘ, કામનો કતરો.

ચૈત્ર સુદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ચાકદાર વાઘો ગુલાબી, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર, કટિનો પટકા પીળો.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી ચકરીદાર પાઘ, મેઘશ્યામ કતરો.

ચૈત્ર સુદ - ૧૫

(નિયમનો શૃંગાર)

છપ્પનભોગ ઉત્સવ સંવત ૧૯૮૧

શૃંગાર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતામ્બર ગુલેનાર, સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટ, લાલ જરીના ગોકર્ણ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

ચૈત્ર વદ-૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલો કાછા, મલ્લનો પટકા લીલો, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ટિપારો, કામના કતરા, મોરશિખા.

ચૈત્ર વદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બે કાછની અને પીતાંમ્બર ખસખસી, સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : રૂપેરી ડાંકનો મુગટ.

ચૈત્ર વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ઘેરદાર વાઘો શ્યામ લહેરીયાનો, પિરોજાઇ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : શ્યામ લહેરીયાની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

ચૈત્ર વદ - ૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી મહાપ્રભુજીના ઉત્સવની બડી વધાઈ

સાજ : ત્રણ રંગીન પિછવાઇ, જરદોજી ગાદી તકિયા, ગાદી પર અડધી સફેદી રહે, તકીયા પર સફેદી રહે, લીલા શ્યામ વસ્ત્ર બંધ થાય.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ ધોતી, કેસરી ખુલ્લે બંધનો વાઘો, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલા, લાલ હાંસ ત્રવલ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી નિત્યની કુલ્હે, કામનો જોડ.

ચૈત્ર વદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર ગુલાબી, પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : મેઘશ્યામ ઢાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ચૈત્ર વદ - ૬

શ્રી ત્રિલોકીભુષણજી (શ્રીશિશિરકુમારજી)નો જન્મદિવસ સંવત ૨૦૦૮

શૃંગાર : સુથન, ખૂલ્લેબંદનો વાઘો, અને કંધાનો પટકો. લાલ ચુંદડીના, પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ કિરીટ.

ચૈત્ર વદ - ૭

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીમથુરાધીશ, શ્રીદ્વારકાધીશજી વિઠ્ઠલવિલાસ બાગમાં ખસખાનામાં બિરાજ્યા શ્રી બાલકૃષ્ણજી મહારાજકૃત વિશેષ મનોરથ સંવત ૧૯૬૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બંને કાછની અને પીતાંમ્બર ગુલેબાંસી, સફેદ ભાંતવાર ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ

શ્રીમસ્તકે : ગુલેબાંસી સોનેરી ઢાંકનો મુગટ

નોંધ :- મુગટ જ ધરે, વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ચૈત્ર વદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, ખુલ્લેબંદીવાઘા, અને અંતરવાસનો પટકો લહેરીયાના, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર, પીળો કટિનો પટકા.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : લહેરીયાની છજેદાર પાઘ, જડાઉ સેહરા

નોંધ :- સેહરો અથવા દુમલો ધરે. વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ચૈત્ર વદ - ૯

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન અને ખૂલેબંદનો વાઘો પીળો, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : પીળો પગા, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

ચૈત્ર વદ - ૧૦

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળી ધોતી, લાલ ખૂલ્લેબંદનો વાઘો, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના, કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા, લાલ કર્ણફુલ, સફેદ જડાઉ શિરપેચ અને મોરશિખા.

ચૈત્ર વદ - ૧૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ - સંવત ૧૫૩૫

જાગવાથી જ ઝાંઝ પખાવજ વાગે

બંદનબાર બંધાય, ચોક પુરાય.

સાજ : ત્રણ જરદોજી પિછવાઈ, જરદોજી, ગાદી તકિયા. અર્ધી સફેદી રહે સિંહાસન નીચે કોરી હલ્દીનો ચોક પુરાય.

મંગળ ભોગ : જલેબી, મંગળા આરતી મોતીની.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, પટકાલાલ, કેસરી સુથન, ખૂલ્લે બંદનો વાઘો કેસરી બંધે બંદનો કરી ઘરે, સફેદ મલમલના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બે જોડી (૧) લાલ (૨) સફેદ. લીલી ઠેકડાની પહોંચી, મણિ આદી ચાર આભરણ, બે હમેલ, ૧૧ આયુધના ફુલ, ઉત્સવના બધા આભરણ, પાંચ વૈજ્યંતી હાર, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મોટી કુલ્હે, ૧૧ ચંદ્રિકાનો જોડ, ચરણચોકીની નીચલી કોર સુધી. શૃંગાર થાય. કમળપત્ર થાય.

ગોપીવલ્લભ : શ્રી...ને ગોપીવલ્લભધરી શ્રી મહાપ્રભુજીને ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતા ગીત કીર્તન ગવાતા પંચામૃત સ્નાન કરાવવું. પછી બધા સ્વરૂપને શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુંસાઈજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજીને અભ્યંગ સ્નાન કરાવી, આભરણ ધરાવવા તે પછી કેસરી ઝાલરની ઓઢણી ધરાવવી. તે પછી ગોપી વલ્લભ ભોગ ધરવા. જન્માષ્ટમી ઉત્સવ પ્રમાણે ડબરા ભોગ સર્યા પછી શ્રીમહાપ્રભુજીને માલા ધરાવી, ચંદન, ચોવા, ગુલાલ, અબીરથી ખેલે તે પછી રાજભોગ ધરવો.

રાજભોગ : **સખડી :-** પાંચ ભાત, ખાટોભાત. શ્રીખંડભાત, દહીભાત, વડીભાત, મીઠોભાત, છડિયાળદાળ, પતરવેલિયાની કઢી, તિલવડી, ઢેબરી, પાપડ ભુજેના, ડબરાનો સાજ, પાટિયાની સામગ્રી.

અનસખડી :- ખીર ચાર, સેવની, ચોખાની, મણકાની, અને સંજાબની, જલેબી, બુંદી, મનોહર, ફેની, સફેદ અને કેસરી, ગુંજા, સેવ, મઠડી, સકરપારા મેવાટી, ઈન્દરસા, પંજરી, શિખંડવડી, જીરાપુરી, બિલસારૂં, ખાજાં સુંઠની બુકની.

દુધઘર : છોકયો મીઠો દહીં, બરફી, સઠેલીસાબુની, રસખોરા, સંધાણા, બીજ, વડાની છાશ, બેરાયતાં, ફળફુલ ગાઢુ દુધ.

રાજભોગનો સમય ૩ા ઘડી રહે.

ભોગ સરે બધી જગ્યાએ થાપા દેવાય.

રાજભોગ દર્શન : સાજ માડી, વેણું વેત્ર, ધરાવી, આરસી બતાવી તિલકકરી, મોતીની આરતી કરવી. ન્યોછાવર થાય. ફરી આરસી બતાવી વેણુંવેત્ર વડાં કરવા, તે પછી ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતા શ્રીમહાપ્રભુજીને તિલક થાય. તે પછી શ્રીગુંસાઈજીને તિલક થાય. તે પછી શ્રીબાલકૃષ્ણજીને તિલક થાય, બીડાં ધરી, ભેટ કરી ચુનના મુઠિયા વારી ચુનની આરતી કરવી, ન્યોછાવર કરવી, તે પછી જન્મપત્રિકા વંચાય.

મુખ્યાજી શ્રી તિકેટને તિલક કરે. સાથે બિરાજતાં બીજા બાળકોને પણ તિલક કરે.

તે પછી શ્રી તિકેટ મુખ્યાજી તથા ભીતરીયા વિગેરેને તિલક કરે તે પછી રાજભોગ અનોસર થાય, અનોસરમાં પલના રહે.

સંધ્યાભોગ : છુટી બુંદી આરાગે, મોતીની આરતી થાય.

શયનમાં : કેસરી ઉપરણો, વનમાલા સુધી શૃંગાર રહે, મોતીની આરતી થાય.

ચૈત્ર વદ - ૧૨
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ઉત્સવના, ખૂલ્લેબંદનો વાઘો

આભુષણ : ઉત્સવના, શ્રીકંઠનો શૃંગાર થોડો હલકો થાય, ટકમા ચોકડું.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મધ્યમ કુલ્હે.

ગોપીવલ્લભ ભોગ: તુવેરની દાળ, ડુબકીની કઢી.

રાજભોગ દર્શન : ચંદાભોગ, (નંગ બાલભોગની સામગ્રી) અનોસરમાં પલના રહે.

શયનમાં : છેડા સુધી શૃંગાર રહે.

ચૈત્ર વદ - ૧૩
(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી પુરૂષોત્તમજીના ઉત્સવની વધાઈ બેસે, ગીત ગવાય, નગારા બેસે.

સાજ : ગુલેનાર

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલેનાર ધોતી ઉપરણાં, લીલા ઠાંડાવસ્ત્ર
(આજથી વાગા બંધ થાય)

આભુષણ : પચ્ચીના, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર કુલ્હે, કામનો જોડ.

ચૈત્ર વદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ ચુંદડીના સુથન પટકા, પીળાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બાલલીલાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉટોપી.

નોધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

ચૈત્ર વદ - ૦))

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કાછા, અને મલ્લનો પટકા લીલો, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ટિપારો, ગુલાબી, કામનો કતરા મોર શિખા.

નોધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

વૈશાખ-સુદ - ૧

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી પુરૂષોત્તમજીનો ઉત્સવ પ્રા. સં. ૧૮૪૬

ચોક પુરાય, બંદનબાર બંધાય.

સાજ : પિછવાઇ સફેદ છાપાની, કમળના ફુલવાળી.

મંગળભોગ : બુંદીના લાડું, મોતીની આરતી થાય.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની, સુથન, અને પીતાંમ્બર ગુલેનાર રંગના, ઠાડાં વસ્ત્ર મલમલના.

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) સફેદ, લીલી ઠેકડાની પહોંચી, સફેદકડાં, બન્ને હમેલ, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર, પાંચ વૈજયંતીહાર, આયુધના ફૂલ સાત, ટકમાં ચોકઠું આવે.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટ, ગુલેનાર રંગના ગોકર્ણ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, રાજભોગના અનોસરમાં પલના રહે, રાજભોગ આરતી મોતીની, ન્યોછાવર થાય.

સંધ્યા : સંધ્યા આરતી મોતીની થાય.

શયન : છેડા સુધીનો શૃંગાર રહે, મોતીની આરતી આવે.

વૈશાખ-સુદ - ૨
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પટકા ગુલેનાર રંગનાં, ઠાડા વસ્ત્ર સફેદ મલમલના.

આભુષણ : સફેદ, ચરણાવિંદ સુધીનો શૃંગાર, ટકમાં ચોકઠું આવે.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર ટિપારા, અને કતરા, ચંદ્રિકા.

વૈશાખ સુદ - ૩
(નિયમનો શૃંગાર)
અક્ષય તૃતિયા
નિ.લી.તિ. શ્રી વ્રજભુષણજી મહારાજશ્રી ગાદી બિરાજ્યા
ઉત્સવ સંવત ૧૯૭૬

સાજ : કેસરી કોરનો સફેદ મલમલનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : કેસરની કોરનો સફેદ મોટો પિછોડા, અરગજાઈ રંગના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના આભૂષણ, હાંસત્રવલ ન ધરે, વનમાલા સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કોરની નિત્યની સફેદ કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે. સતુવા, પકોડીની છાશ, મેવા ભાત. ચનાની દાળ, અડબંગા આવે.

રાજભોગ આવ્યા પછી ચંદન, કરવા, કુંજા વિગેરેને પાટલા પર પધરાવી અધિવાસન કરવું

રાજભોગ દર્શન : માળા ધરી ખૂલ્લા દર્શનમાં ઝાલર ઘંટા વગાડતાં શ્રી મહાપ્રભુજીને દંડવત કરી, ચંદન ધરાવવું. ચંદનની એક ગોળી હૃદય પર, ચારગોળી શ્રી હસ્તમાં, અને બે ગોળી બે ચરણારવિંદ ઉપર ધરાવવી, દરેક ગોળી ઉપર તુલસીનું પાન લગાવવું, પંખા કરવા.

ઉત્સવભોગ : દર્શન બંધ કરી ઉત્સવ ભોગ ધરવો, બીજના લાડુ, તીખી કચોરી, મિશ્રીનો અને બુરાનો શીતલ ભોગ, દહીભાત શ્રીખંડભાત, ધોળેલો સતુવા, લીલોમેવો, વધારેલુ અને મીઠું દહી, ચણાની અને મગની કાચી ભીજવેલી દાળ, પેડા બીજ અને સંધાણા ભોગમાં ધરવા તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ કરવા. ભોગનો સમય એકઘડી રહે.
આજથી ઉષ્ણકાલનો ક્રમચાલુ ખંડપાટ પાસે શ્રી યમુનાજીના જળનો થાળ આવે, જળ છંટાય, ગુલાબદાની ચંદન, કરવા કુંજા, બધુ આવે.
આજથી જન્માષ્ટમી સુધી રાજભોગમાં શ્રીખંડ ભાત અને સતુવા. વારા ફરતી આવે. ઉત્થાપન ભોગમાં શીતલભોગ અને ચણાંની તથા મગની ભીજવેલી કાચી દાળ વારા ફરતી આવે, ખસના ટેરા બંધાય.
સંધ્યા આરતીમાં તિબારીમાં પધારે.

શયન દર્શન : શયનમાં મોટો આડબંધ ધરે, ફુલનો જોડ આવે.

નોંધ :- આજથી રથયાત્રા સુધી શ્રીયમુનાજીની પરાત (થાળ) ખસના પડદાં, જલનો છંટકાવ, ફુવારા આવે તે પછી બંધ થાય. કરવા કુંજા, ચંદનની બરણી હિંડોરા ખાટ, ગુલાબદાની જન્માષ્ટમી સુધી આવે.

વૈશાખ સુદ - ૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી પિતામ્બરજી (શ્રી પરાગકુમારજી)નો જન્મદિવસ સંવત ૨૦૦૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરની કિનારીની કોરનો બેટુકનો પીછોડા, અરગજા રંગના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : જડાઉ મોતીના આભુષણ, છેડા સુધીનો શૃંગાર, ચાર કર્ણ ફુલ.

શ્રસમસ્તકે : કેસરના કોરની છજેદાર પાઘ, મોતીની એક ચંદ્રિકા.

વૈશાખ સુદ - ૫

(નિયમનો શુંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજાઇ બે ટુકનો પિછોડા, આજથી ઠાડા વસ્ત્ર ન આવે અષાડસુદ પૂર્ણિમા સુધી વચ્ચે વચ્ચે ઉત્સવોમાં ધરી શકાય.

આભુષણ : મોતીના કટિ પેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : અરગજાઇ છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

વૈશાખ સુદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી છાપાનો મલ્લકાછ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છાપાનો સફેદ ફેંટા, સફેદ સાદો કતરા.

વૈશાખ સુદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પિરોજાઇ રંગનો આડબંધ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : પિરોજાઇ રંગની, ચકરીદાર, પાઘ, મેઘશ્યામ સાદી ચંદ્રિકા.

વૈશાખ સુદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આછા લીલા રંગના સુથન પટકા.

આભુષણ : મોતીનાં.

શ્રીમસ્તકે : આછી લીલા રંગની છજેદાર પાઘ, કપાસી રંગની સાદી મોર શિખા.

વૈશાખ સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા રંગની પરદની.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : લીલા રંગનો ફેંટા, કેસરી અને સફેદ રંગનો કતરો.

વૈશાખ સુદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પિરોજાઇ રંગનો મોટો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : પિરોજાઇ રંગની છજેદાર પાઘ, લીલો, સાદો કતરો.

વૈશાખ સુદ - ૧૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીદ્વારકેશજી નો ઉત્સવ વધાઇ બેસે

ગીત ગવાય, નગરા બેસે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજાઇ (હલકો કેસરી) રંગનો બેટુકનો પીછોડા.

આભુષણ : મોતીના, છેડા સુધી શૃંગાર, ચાર કર્ણફુલ.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી ખીડકીની કેસરી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

વૈશાખ સુદ - ૧૨

(નિયમનો શૃંગાર)

તિ. શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજશ્રી ગાદી બિરાજ્યા ઉત્સવ સવંત ૨૦૩૬
ચોક પુરાય ગીત ગવાય.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજાઇ (હલકો કેસરી) ધોતી ઉપરણાં.

આભુષણ : મોતી અને પચ્ચીના, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : અરગજાઇ છજેદાર પાઘ, મોતીનો સહેરો.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, મેવા ભાંત.

રાજભોગ દર્શન : ફુલ મંડળીનો મનોરથ થાય.

વૈશાખ સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચંદનના રંગની પરદની.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ચંદનના રંગનો ફેટો, પોપટી રંગની ચંદ્રિકા

વૈશાખ સુદ - ૧૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીનૃસિંહ ચર્તુદશી, અને શ્રી બાલકૃષ્ણજીના
પ્રથમ પુત્ર શ્રી દ્વારકેશજીનો ઉત્સવ પ્રા. સં. ૧૬૨૯
ચોક પુરાય, બંદન બાર બંધાય.

સાજ : ઉષ્ણકાળનો કેસરી સાજ.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : ઘેરા કેસરી રંગનો વગર કિનારીનો મોટો પિછોડા. કેસરના છાપાના સફેદ તનિયા, ઠાડા વસ્ત્ર સફેદ મલમલના.

આભુષણ : એક જોડીનો શૃંગાર, લાલ આભરણ, લીલાં હાંસત્રવલ મયૂરાકૃતિ લાલ કુંડલ, બન્ને હમેલ, વાઘનખની જોડ, મોતીનું ચોકઠું, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ઘેરા કેસરી રંગની નિત્યની કુલ્હે, સાત ચંદ્રિકા નો સાદોજોડ

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, મોતીની આરતી, ન્યોછાવર થાય.

શયન : સાંજે શયનભોગમાં કઢીને બદલે ખરબુજાનું શાક આવે. શયનમાં જન્મના દર્શન ચોકમાં થાય. બીરી આરોગ્યા પછી રામનવમી પ્રમાણે શ્રી શાલીગ્રામજીને પંચામૃત થાય, ત્યાર બાદ ઉત્સવ ભોગ આવે.

ઉત્સવભોગ : રામનવમી પ્રમાણે. વધુમાં દહીભાત આવે. જન્મ સમયે રાયવેલની ફુલની માળા ધરે, પીતામ્બર ધરે. તે પછી ખેલ થાય. ઉત્સવભોગ પછી શયન આરતી થાય શયનના દર્શન પછી બધો શૃંગાર વડો થાય અને અનોસર થાય.

વૈશાખ સુદ - ૧૫
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી, કિનારી વિનાનો મોટો પિછોડા,, ઠાડા વસ્ત્ર ન આવે.

આભુષણ : મોતીના, એક જોડી શૃંગાર, ચરણારવિંદ સુધીના.

શ્રીમસ્તકે : નિત્યની કેસરી કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

વૈશાખ વદ - ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોતીના સુથન પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : મોતીની છજેદાર પાઘ, શ્વેત પર(પંખ).

વૈશાખ વદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કમલ પત્રી કાછા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કમલ પત્રી સાદા ફેટા, ખસખસી ગોળ ચંદ્રિકા.

એક શૃંગાર

જે દિવસે રોહિણી નક્ષત્રમાં પ્રથમ કેસરી
ચંદન ધરે તે દિવસનો શૃંગાર.

વસ્ત્ર : અરગજાઇ બડો પીછોડા, એવોજ અંતરવાસનો પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : અરગજાઇ છજેદાર પાઘ, મોતીનો સહેરો, રાજભોગ સરે ત્યાર પછી ફુલનો સહેરો ધરે અને તે પછી ચંદનની ચોળી ધરે. અને ફુલના આભરણ ધરે અને ફુલ ચાર ચંદનની ગોળી શ્રી હસ્તપર આવે અને બે ગોળી ચંદનની ચરણારવિંદ પર ધરે.

રાજભોગ દર્શન : રાજભોગ દર્શનમાં નિજમંદિરમાં, શરદના ચોતરા પર ચંદનના બંગલામાં બિરાજે, કેળનો બગીચો બંધાય, મોતીની આરતી ન્યોછાવર થાય.

સંધ્યા : સંધ્યા આરતી પછી બધો શૃંગાર વડો થાય અને શીતજલમાં બરાસ અને ગુલાબ જળ મેળવી સ્નાન થાય.

બીજો શૃંગાર

જે દિવસે રોહિણી નક્ષત્રમાં સફેદ
ચંદન ઘરે ત્યારે નીચેનો શૃંગાર આવે

વસ્ત્ર : ચંદની રંગનો બે ટુકનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ચંદની રંગની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

વૈશાખ વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોતીની પરદની.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ ફેટા અને સફેદ કતરો.

વૈશાખ વદ - ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ખસખસી રંગનો આડબંધ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ખસખસી રંગનો ફેટા, ગુલાબી સાદી ચંદ્રિકા.

વૈશાખ વદ - ૫

(નિયમનો શૃંગાર)

છપ્પનભોગનો ઉત્સવ સં. ૧૯૭૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર કેસરી રંગના, આછા સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો ટકમાં મુગટ, કિનારીના લાલગોકર્ણ ઘરે.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

વૈશાખ વદ - ૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ખસખસી રંગના બે ટુકનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીનાં.

શ્રીમસ્તકે : ખસખસી રંગની છજેદાર પાઘ, પીળી ચંદ્રિકા.

વૈશાખ વદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચંદનના રંગના ધોતી ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ચંદનના રંગની છજેદાર પાઘ, મોતીનો સેહરા.

વૈશાખ વદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પોપટી રંગના, સુથન - પટકા.

આભુષણ : મોતીનાં.

શ્રીમસ્તકે : પોપટી છજેદાર પાઘ, ગુલાબી મોર શિખા.

વૈશાખ વદ - ૯
(નિયમનો શૃંગાર)
છપ્પનભોગ ઉત્સવ સવંત ૨૦૪૧

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને અંતરવાસનો પટકા અરગજાઇ અરગજાઇની કિનારી ના ગોકર્ણ, ઠાડા વસ્ત્ર કમલપત્ર.

આભુષણ : પચ્ચીના અને મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : અરગજાઇ ટીપારો, કામનો જોડ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

વૈશાખ વદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ પરદની.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ ફેંટા, સાદી સફેદ ચંદ્રિકા.

વૈશાખ વદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ જાળીવાળા મલ્લકાછ.

આભુષણઃ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જાળીનો ફેંટા, સફેદ મોર પંખનો કતરા.

વૈશાખ વદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આછા લીલા રંગનો, આડબંધ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : આછા લીલા રંગની ગોળ પાઘ, ખસખસી રંગની મોર શિખા.

વૈશાખ વદ - ૧૩

ચિ. શ્રીવ્રજાભરણજી (શ્રીકપિલકુમારજી)નો જન્મદિવસ સંવત ૨૦૩૧ શ્રીશિશિરકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળા રંગના સુથન પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : પીળી ચકરીદાર પાઘ, ગુલાબી કતરો.

વૈશાખ વદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ધનકનો (પંચરંગી લહેરીયા) મોટો પિછોડા,

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ધનકનો દુમાલો, તિરંગી સાદા કતરા, મોર શિખા.

વૈશાખ વદ - ૦))

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા રંગનો મલ્લકાછ અને મલ્લનો પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ટિપારો, રેશમી કતરા, અને મોર શિખા.

જેઠ સુદ - ૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી સુથન પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છજેદાર પાઘ, પીળો કતરો.

જેઠ સુદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ મલમલનો મલ્લકાછ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસતકે : સફેદ બારીક મલમલનો ફેટા, સફેદ કતરો.

જેઠ સુદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કમલ પત્રી ધોતી અને ચંદની ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કમલ પત્રી ખિડકીની ચંદની પાઘ, બદામી સાદી ચંદ્રિકા.

જેઠ સુદ - ૪

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીવ્રજનાથજીના ઉત્સવની વધાઈ

ગીત ગવાય, નગારા બેસે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજા રંગનો મોટો પિછોડા, કિનારીવાળો.

આભુષણ : મોતીના, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : અરગજા રંગની રોજની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

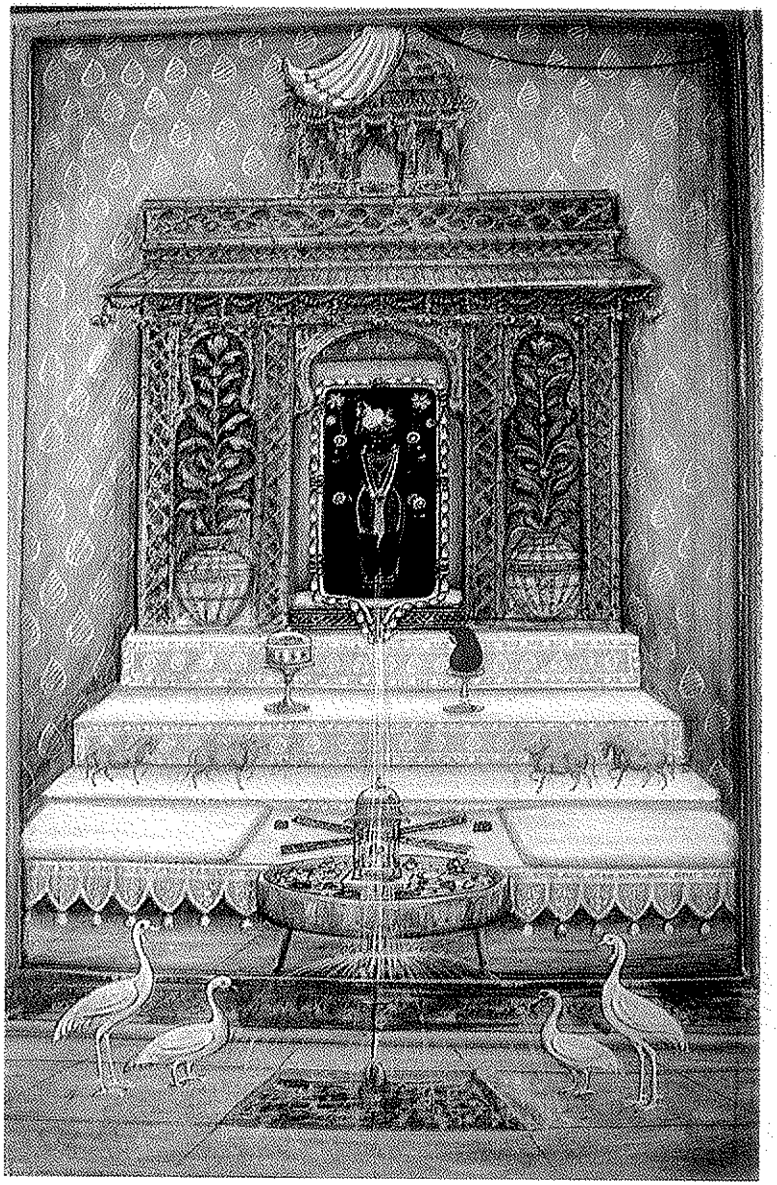

જેઠ સુદ - ૫

ચિ. શ્રીપુરૂષોત્તમજી (શ્રી વાગીશકુમારજી)શ્રી વ્રજેશકુમારજીના જ્યેષ્ઠ લાલજી નો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કાછા, અને મલ્લનો પટકા-કપાસી રંગનો.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કપાસી રંગનો ટિપારો, સાદા કતરા, મોરશિખા.

જેઠ સુદ - ૬

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રી બાલકૃષ્ણજીના છઠ્ઠલાલજી શ્રી પુરૂષોત્તમલાલજીનો ઉત્સવ સંવત ૧૬૪૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : હલકો ગુલાબી, બે ટુકનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીનાં કટિપેચ સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : હલકા ગુલાબી રંગની છજેદાર પાઘ, મોતીની મોરશિખા, સાદી ચંદ્રિકા.

જેઠ સુદ - ૭
(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીવ્રજનાથજીનો ઉત્સવ પ્રા. સં. ૧૭૮૮

ચોક પુરાય, બંદનબાર બંધાય.

સાજ : અરગજાઇ રંગનો.

મંગળભોગ : સતવો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : કેસરી મધ્યમ કિનારીનો મોટો પિછોડા, હલકા ગુલાબી રંગનાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બે જોડીના શૃંગાર (૧) સફેદ (૨) મોતીનો. સફેદ કડાં, અને પહોંચી સફેદ, મોતીના આભુષણ બે હમેલ, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર, કુંડલ સફેદ, બે વૈજ્યંતી હાર, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી નાની કુલ્હે, સાતચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, સખડી અને અનસખડી શ્રી મહાપ્રભુજીના ઉત્સવ પ્રમાણે, પંજરીના બદલે બીજના લાડવા આવે.

રાજભોગ દર્શન : આરતી મોતીની થાય, ન્યોછાવર થાય.

શયન : શયનભોગનો ક્રમ શ્રી મહાપ્રભુજીના ઉત્સવ પ્રમાણે. છેડા સુધી શૃંગાર રહે, આરતી મોતીની.

જેઠ સુદ - ૮
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આગલા દિવસનો ઉત્સવનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના, એક જોડીનો શૃંગાર. ચરણાંરવિંદ સુધી શૃંગાર ઠાડા વસ્ત્ર નહી.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી નિત્યની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

જેઠ સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : શ્વેત છાપાના, ધોતી ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના આભરણ.

શ્રીમસ્તકે : શ્વેત છાપાની છજેદાર પાઘ, સાદી મોરશિખા.

જેઠ સુદ - ૧૦ ગંગા દસમી
(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : અક્ષય તૃતિયાનો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ, કેસરના છાપાનો કિનારીવાળો બે ટુકનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના, ચારકર્ણફુલ, છેડા સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરના છાપાની સફેદ છજેદાર પાઘ. મોતીની એક ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : રાજભોગમાં શ્રીગંગાજીના ભાવનાજી પધારે. કેસરની કિનારીનો બડો વસ્ત્ર, ચોળી, અને ગુંજા માળા ધરાય, માટીનો કુંજા, અને ફુલની માળા ધરાય, ગુલાલ અબીલથી ખેલે.
રાજભોગમાં ડબરાનો સાજ, સતુવાનો ડબરા આવે. ચણાની દાળ, પકોડીની છાશ, ગુદડિયા પૂવા, સુહારી, દહીભાત, શ્રીખંડભાત, ધોળેલો સતુવા, મેદાની પુરી આવે, લુચ્ચઈમાં સતુવા.

રાજભોગ દર્શન : તિબારીમાં જલભરાય અનોસરમાં ચોકમાં જલભરાય. અનોસરમાં વિશેષ સામગ્રીનો ભોગ આવે તેમાં જીરાપૂરી, બિલસારૂં ફીકા અને શીતલ સામગ્રી આવે.
સંધ્યા આરતી પછી તિબારીનું જલ ચોકમાં જાય.
શયન : ચોકમાં ચંદનના બંગલા પર બિરાજે રાત્રે અનોસરમાં બપોરના અનોસરની જેમ ભોગ આવે, શયનપછી ચોકનું જળ છોડવામાં આવે.

જેઠ સુદ - ૧૧
ચિ. શ્રી પ્રબોધકુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૧૫
શ્રીયદુનાથજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મોતીના ધોતી ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : મોતીની નાની કુલ્હે, મોતીનો જોડ.

જેઠ સુદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચંદની રંગનાં કાછા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ચંદની રંગની છજેદાર પાઘ, ખસખસી સાદી ચંદ્રિકા.

જેઠ સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : આછા લીલાં રંગનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : આછા લીલા, રંગનો ફેટા, ગુલાબી કતરા.

જેઠ સુદ - ૧૪

સ્નાન યાત્રાના આગલા દિવસનો ક્રમ

(નિયમનો શૃંગાર)

ચિ. શ્રી વ્રજાલંકારજી (શ્રી નૈમિષકુમારજી) નો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૨૯
શ્રી પરાગકુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : હલકા ગુલાબી રંગનો બેટુકનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી ફેટા, એક સાદી ચંદ્રિકા.

શયનભોગ આવ્યા પછી સ્નાન યાત્રાનું જળ ભરવા બે વખત જવું. તે જળમાં કદમના ફુલ, રાયવેલની કળી, અરગજા, ખસના વાળા, તુલસી, મોગરા, ગુલાબ જળ, અને જમુના જળ પધરાવવું. તે પછી જળનું અધિવાસન કરવું.

જેઠ સુદ - ૧૫

સ્નાનયાત્રા

(નિયમનો શૃંગાર)

જે દિવસે જ્યેષ્ઠા નક્ષત્ર હોય તે દિવસે સ્નાનયાત્રા કરવી. નીચે જણાવ્યા પ્રમાણે બધો ક્રમ કરવો સવારે શ્રીઠાકોરજી વહેલા જાગે, તારા દેખાતાં સ્નાન થવું જોઈએ. મંગલા આરતી પછી ટેરો ખેંચી રાત્રિનો શૃંગાર વડો કરી. સ્નાન માટેનો નીચેનો શૃંગાર ધરવો.

સ્નાન શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરની કિનારી વાળાં શ્વેત ધોતી ઉપરણાં.

આભુષણ : સોનાના નૂપુર, કંદોરા, કડાં, જનોઇ, અને દુલરી. સિંહાસન પાસે હળદરનો ચોક પુરી તે પર સ્નાન ચોકી પધરાવવી તે પર સફેદ ચાદર બિછાવવી, તે પર શ્રી ઠાકોરજીને પધરાવી દર્શન ખોલવાં, ઝાલર ઘંટા, શંખવાગે, પ્રાણાયામ સંકલ્પ કરી શ્રીઠાકોરજીને તિલક કરવા. બીડા ધરવાં. બીડાં ઉઠાવી શંખથી સ્નાન કરાવવું, સ્નાન થઇ રહ્યા પછી ટેરો લઇ ગાળેલા સ્વચ્છ જળથી સ્નાન કરાવવું. પછી શૃંગાર કરવા.

વસ્ત્ર : કેસરના કિનારીના સફેદ, ધોતી ઉપરણા અરગજાઇ રંગના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના. સોનાની તથા મોતીની જનોઇ, જડાવ મોતીના કુંડળ, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરની કિનારીની સફેદ કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.
ગોપી વલ્લભમાં ઉત્સવભોગ આવે.
સામગ્રી – બીજના લાડુ, ચીરોંજીના લાડુ, કચોરી, છોંકયો

અને મીઠો દહી, શીતલ ભોગ, અંકુરી, કેરી, કેરીનો શીરા, અને બરફી, પેડા, કેરીનો રસ, દહીભાત, શ્રીખંડભાત, સતુવા, તુલસી, શંખોદક ધૂપદીપથાય. ન્યોછાવર અને રાઈલોન થાય.

રાજભોગ : કટોરાની સાજ, ચણાંની દાળ, પકોડીની છાશ, સતુવા.

રાજભોગ દર્શન : જમનાજીના જલની ત્રણ પરાત ઉપરા ઉપરી આવે.

ઉત્થાપનભોગ : આજથી દર ત્રીજા દિવસે કાચી અંકુરી આવે.

જેઠ વદ - ૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરની કોરનો શ્વેત ધોતી ઉપરણા, ઠાડા વસ્ત્ર ન આવે.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કેસરના કોરની નાની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ સાદો.

જેઠ વદ - ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કમલપત્રી.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કમલપત્રી કુંજાનીટોપી.

જેઠ વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મેઘશ્યામ પરદની.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : મલયાગિરી ફેટા, સફેદ ચંદ્રિકા.

જેઠ વદ - ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અગુંરી કાછા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : અગુંરી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

જેઠ વદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજા રંગનો મોટો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : અરગજા રંગનો ટિપારો, ગુલાબી કતરા, અને મોર શિખા.

જેઠ વદ - ૬

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીદ્વારકેશલાલજીનો ઉત્સવ પ્રા. સં. ૧૯૬૪

ખસખાનાનો મનોરથ

ચોક પુરાય, બંદનબાર બંધાય, ગીત ગવાય.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી કિનારીનો ધારીનો કાછા.

આભુષણ : પચ્ચીના.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી કુંજાની ટોપી.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

રાજભોગદર્શન : મોતીની આરતી આવે ન્યોછાવર થાય. તિબારીમાં ખસખાના બંધાય, રેતી બિછાવાય, સાંજે ભોગમાં ફુલનો શૃંગાર, ફુલનો કાછા અને ટિપારો ઘરે.
શયન : શયનમાં ફુલની પરદની અને ફૈટા. શયનમાં ચોકમાં બિરાજે.

જેઠ વદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી આડબંધ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

જેઠ વદ - ૮

(નિયમનો શૃંગાર)

છપ્પનભોગનો ઉત્સવ સંવત ૨૦૧૬

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની, સુથન અને પીતાંમ્બર કેસરી, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પચ્ચીના.

શ્રીમસ્તકે : પચ્ચીનો મુગટ, કેસરી ગોકર્ણ.

જેઠ વદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા ધોતી ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : લીલો પગા, સાદા કતરા, મોરશિખા.

જેઠ વદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પિરોજાઇ પરદની.

આભુષણ : મોતીનાં.

શ્રીમસ્તકે : પિરોજાઇ છજેદાર પાઘ, શ્વેત અને શ્યામ ગોળ ચંદ્રિકા.

જેઠ વદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી રંગનો મોટો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી રંગની નાની કુલ્હે, ગુલાબી સાદો જોડ.

જેઠ વદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મુગિયા સુથન પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : મુગિયા છજેદાર પાઘ, ગુલાબી પર (પંખ).

જેઠ વદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલો આડબંધ.

આભુષણ : મોતીનાં.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ફેટા, પીળી ચંદ્રિકા.

જેઠ વદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બદામી ધોતી ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : બદામી રંગની ગોળ પાઘ, સાદો કતરો.

જેઠ વદ ૦))

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પોપટી રંગનો મલ્લકાછ અને પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી રંગનો ટિપારો, સાદા કતરા અને મોર શિખા.

અષાઢ સુદ - ૧
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજાઇ રંગની પરદની.

આભુષણ : મોતીના, ખુબ જ હલકો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : અરગજાઇ ફેંટા, સાદી ચંદ્રિકા.

અષાઢ સુદ - ૨ રથયાત્રા
(નિયમના શૃંગાર)

જે દિવસે પુષ્યનક્ષત્ર હોય તે દિવસે રથયાત્રા કરવી તે દિવસનો ક્રમ નીચે પ્રમાણે છે.

સાજ : લાલ મોરની છીંટનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, લાલ અતલસનું સુથન, સફેદ કારચોબીનો ચાક દાર વાઘો, લાલ પટકા, પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બે જોડીના (૧) લાલ (૨) લીલા. સફેદ કડાં અને પહોંચી લાલહાંસ, લીલી ત્રવલ, બે હમેલ, પાંચ વૈજ્યંતીહાર, ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ મધ્યમ કદની કુલ્હે, નવ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, જીરાપુરી બિલસારૂ.

રાજભોગ આવ્યા પછી કોરી હળદરનો ચોક પુરી તે પર રથ પધરાવી અધિવાસન કરવું. રથની દાંડી, અને ઘોડાના પગ ઉપર ચંદન લગાવી, ઘોડાને માળા પહેરાવવી.

રાજભોગ : ખંડપાટ બિછાવ્યા વિના મોતીની આરતી કરવી. માળા વડી કરી, શ્રીમહાપ્રભુજીને દંડવત કરી, ઝાલર ઘંટા વગાડતા શ્રી...ને રથમાં પધરાવવા.

રથના પ્રથમ દર્શનઃ શ્રી....ને માળા ધરાવી દર્શન ખોલવા.

પહેલો ભોગ : અંકુરી, કેરી, મિસરીનો અને બુરાનો પના, લીલો મેવો, બરફી પેંડા.

ભોગનો સમય ૧ ઘડીનો રહે આચમન મુખ વસ્ત્ર કરાવી બીડાં ધરવા.

બીજા દર્શન : માળા ધરાવી દર્શન ખોલવા.

બીજો ભોગ : મઠડી, ગુંજા, સેવ, બીજ અને ચારોળીના લાડુ, છુટી બુંદી, બરફી, પેંડા, મિસરી, અને બુરાનો પના, વડાની છાશ, સંધાણા, અંકુરી, કેરી, લીલો મેવો, બીજ અને એક ફીકાની સામગ્રી.

ભોગનો સમય બે ઘડીનો, આચમન મુખ વસ્ત્ર કરાવી બીડા ધરવા.

ત્રીજા દર્શન : માળા ધરાવી દર્શન ખોલવા, રથ ધીમે ધીમે ચલાવવો.

ત્રીજો ભોગ : મઠડી, ગુંજા, સેવના લાડુ, છુટી બુંદી, બીજ અને ચારોળીના લાડુ શ્રીખંડવડી, પેંડા, બરફી, કેસરી દુધ, રસની બરફી અને શીરો, મિસરી અને બુરાનો પના, વડાની છાશ, કચોરી, છોંકયું દહી, બીજ, સંધાણાં અંકુરી, કેરી, લીલો મેવો, તુલસી શંખોદક અને ધૂપદીપ થાય.

ભોગનો સમય ચાર ઘડી રહે, આચમન મુખ વસ્ત્ર કરાવી. બીડા ધરવા.

ચોથા દર્શન : સુકા મેવાની ખીચડી ઢાંકીને રથમાં ધરવી. ત્રીજો ભોગ સરાવ્યા પછી અંકુરી અને કેરી ઘોડાને ધરવા. પછી ઘોડા જોડવા. માળા ધરાવવી. બીડી આરોગાવવી. મોતીની આરતી થાય. ત્યારે ફુલ વરસાવવા. ન્યોછાવર કરવી નિજ મંદિરના દ્વાર તરફ રથનું મુખ રાખવું, પાંચ પ્રદક્ષિણા કરવી, રથમાંથી શ્રી..ને ગાદી પર પધરાવી શ્રૃંગાર વડો કરવો અને ફરી નીચે પ્રમાણે શૃંગાર કરવો.

વસ્ત્ર : સફેદ સોનેરી કિનારીનો મોટો પિછોડો.

આભુષણ : મોતીના. વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ નાની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ સાદો, નિત્યની જેમ સાજ માંડવો અને અનોસર કરવા.

શયન : સાંજે શયનમાં છત્રી વિનાનાં ખુલ્લા રથમાં બિરાજે.

નોંધ :- આજથી ધોયેલાં વસ્ત્ર બંધ થાય, જળ છાંટવાનું બંધ થાય, જળની પરાત ભરાય નહી, આજથી અષાઢ સુદ ૧૫ સુધી છીટના વસ્ત્ર અને સાજ આવે તેના પર સોનેરી કિનારી લાગે. ઉત્થાપનમાં કાચી દાળને બદલે છોંકેલી દાળ આવે.

અષાઢ સુદ - ૩
(નિયમના શૃંગાર)

મંગળા : શ્રી મંગલામાં રથમાં બિરાજે.

વસ્ત્ર : **સફેદ સોનેરી કિનારીના ઘેરાનો આડબંધ.**

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ નિત્યની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ.

અષાઢ સુદ - ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા સુથન પટકા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : લીલી ચકરીદાર પાઘ, પીળો કતરા.

અષાઢ સુદ - ૫

(નિયમના શૃંગાર) સંવત
શ્રીદ્વારકાધીશજીનો પાટોત્સવ સં ૧૭૨૦.
ચોકપુરાય, ગીત ગવાય, બંદનબારબંધાય,

સાંજ : કેસરી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : અરગજાઇ રંગનો કિનારી વાળો મોટો પિછોડા.

આભુષણ : જડમાં, મોતીના, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : અરગજાઇ નાની કુલ્હે, પાંચ ચંદ્રિકાનો જોડ.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ. બુંદી, જલેબી, શિખરનવડી બિલસારૂં, જીરાપુરી, બડાની છાશ.

રાજભોગ દર્શન : મોતીની આરતી થાય, ન્યોછાવર થાય.
: જન્માષ્ટમીની વધાઇ ગવાય.

અષાઢ સુદ - ૬ કસુંબા છઠ

(નિયમના શૃંગાર)
શ્રીલક્ષ્મણ ભટ્ટજીનો ઉત્સવ

સાજ : છીટનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : ગુલાબી તનિયા અને ગુલાબી પિછોડા, સફેદ મલમલના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના. ચાર ગોળ કર્ણફુલ વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી છજેદાર પાઘ, મોતીની ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચઇને બદલે અનસખડીની કોઇ પણ એક સામગ્રી, રાયતુ ન આવે.

અષાઢ સુદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ધનકના સુથન પટકા.

આભુષણ : આભૂષણ મોતીનાં.

શ્રીમસ્તકે : ધનકની છજેદાર પાઘ, પીળો પર (પંખ).

અષાઢ સુદ - ૮
શ્રી અભિષેકજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૪૧
શ્રી પ્રબોધ કુમારજીના લાલજી

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સફેદ ધોતી ઉપરણા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ ચકરીદાર પાઘ, લીલો કતરો.

અષાઢ સુદ - ૯

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પિરોજાઇ આડબંધ.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : પિરોજાઇ ગોળપાઘ, ગુલાબી, સાદો કતરો.

અષાઢ સુદ - ૧૦ વેંગણ દશમી
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : વેંગણના રંગનો, બે ટુકનો પિછોડા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : વેંગણરંગનો ફેટા, પીળી સાદી ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

શયનભોગ : વેંગણની ટોકરી, વેંગણના ભુજેના, ભરતાની પકોડી, ભરતાનાં ગુજા, જીરાપુરી, ઘી, બુરા, સતુવા, છોંકયો દહી.

અષાઢ સુદ - ૧૧ દેવશયની
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સોસની રંગનો બડો પિછોડા, અરગજાઇ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના, ચાર ચોરસ કર્ણફુલ, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સોસની રંગની છજેદાર પાઘ, મોતીની ચંદ્રિકા.

અષાઢ સુદ ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કથ્થાઈ કાછા.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : કથ્થાઈ ફેંટા, સાદી મોર શિખા.

અષાઢ સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ચંદની રંગની પરદની.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : ચંદની રંગની ગોળ પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

અષાઢ સુદ - ૧૪

ચિ. શ્રી શરદ કુમારજીનો જન્મ દિવસ સંવત ૨૦૦૭
શ્રી યદુનાથજીના લાલજી

જો હિંડોળે અષાઢ વદ - ૧ ના દિવસે બિરાજે તો આજે અક્ષય તૃતીયાનો બધો શૃંગાર થાય.

જો હિંડોળે અષાઢ વદ - ૨ ના દિવસે બિરાજે તો અક્ષય તૃતીયાનો શૃંગાર અષાઢ વદ - ૧ ના રોજ થાય, અને આજે અષાઢ વદ - ૨ ના શૃંગાર થાય.

અષાઢ સુદ - ૧૫ વ્યાસ પૂર્ણિમા

(નિયમનો શૃંગાર)

સાજ : લીલી છીંટની પિછવાઈ અને બધો સાજ લીલો આવે.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લીલો તનિયા, ગુલાબી, સુથન, નીચેની કાછની લીલી, ઉપરની કાછની ગુલાબી. પીતાંબર ગુલાબી, સફેદ મલમલના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના.

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો મુગટ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, પકોડીની છાશ, લુચઈને બદલે ચારોળીના લાડુ, રાયતું ન આવે, કચોરી, છોકેલું દહી.

ઉત્થાપન ભોગ : લાટાના લાડુ.

અષાઢ વદ - ૧ હિંડોળે બિરાજે
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : કિનારીની ધારીનો લાલ.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ કિનારીનો મોટો પીછોડા, લીબોઇ રંગનો તનિયા, લીબોઇ રંગના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લીલાં.

શ્રીમસ્તકે : લાલ નાની કુલ્હે, કામનો જોડ, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ, તેવટી દાળ.

આજથી મંગળાથી શયન પર્યંત તિબારી માંજ બિરાજે. સાંજે સંધ્યા આરતી પછી ડબરા ભોગ આરોગીને હિંડોળામાં પધારે, સાંજે હિંડોળાનું અધિવાસન કરવું ઝાલર ઘંટા વાગતા શ્રી. હિંડોળે પધારે.

હિંડોરા : હિંડાળામાં ભોગ આવે. ઠોર, પેડા, કચોરી, રસની બરફી, અને શીરા, છોકર્યો મીઠો દહી, ખાસા ભંડારની સામગ્રી, બીજ, સંધાણાં, તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય.

હિંડોળામાં દરરોજ એક સામગ્રી જમણી બાજુ પડઘા પર ઢાંકીને ધરવી. ડાબી બાજુ પડઘા પર ઝારી રહે.

હિંડોળામાં આબખોરા (કુંજા) ગુલાબી પાસ (ગુલાબદાની) અને બીડાં રહે પહેલાં દિવસે શ્રી ગોવિંદ સ્વામીના ચાર હિંડોરાં ગવાય.

શયન : આજથી ઉપરણો ઓઢે, ફુલનો જોડ બંધ થાય, બે પુષ્પમાળા ધરે.

અષાઢ વદ - ૨
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલા મોટો પિછોડા, લીલાં ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ ચાર પાંખડીના કર્ણફુલ, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર, પીળી ખિડકીની પાઘ, કામની ચંદ્રિકા.

અષાઢ વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની, અને પીતામ્બર પંચરંગી લહેરીયાનાં શ્વેત ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સોનેરી ડાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

અષાઢ વદ - ૪

(નિયમના શૃંગાર)

જન્માષ્ટમીની વધાઈ બેસે
ગીત ગવાય, નગારા બેસે.

સાજ : કેસરી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, કેસરી સુથન, કેસરી ખુલ્લે બંધનો ચાકદાર વાઘો, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : બે જોડીનો શૃંગાર (૧) લાલ (૨) લીલા. સફેદ કડાં અને પહોંચી. ચરણ ચોકીના મધ્ય સુધી શૃંગાર, આયુધના ફુલ, બે વૈજ્યંતીહાર, ટકમાં ચોકઠું.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી મધ્યમકુલ્હે, ૧૧ ચંદ્રિકાનો જોડ
આજથી રાધાષ્ટમી સુધી શૃંગારમાં ખિલૌના થી ખેલે.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.

અષાઢ વદ - ૫

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર લીલાં, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : રૂપેરી ડાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

અષાઢ વદ - ૬

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી દ્વારકાધીશજી, શ્રી નવનીતપ્રિયાજી, તથા
શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી સંવત ૨૦૪૨માં એક સાથે હિંડારા ઝુલ્યા.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન બન્ને કાછની અને પીતાંબર ગુલેનાર રૂપેરી કિનારીની ધારીનો, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ અને લીલા. બે જોડીનો શૃંગાર, હાંસ સફેદ, ત્રવલ લીલી, ચરણારવિંદ સુધીનો શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ મુગટ પચ્ચીનો

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.

અષાઢ વદ - ૭

લાલ ઘટા

સાજ : લાલ

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ધોતી ઉપરણા અને ઠાડા વસ્ત્ર લાલ.

આભુષણ : લાલ

શ્રીમસ્તકે : લાલ ચકરીદાર પાઘ, લાલ મખમલની મોરશિખા.

અષાઢ વદ - ૮

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતાંમ્બર શ્યામ ચુંદડીના, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો ડાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

અષાઢ વદ - ૯
ગુલાબી ઘટા

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલાબી રંગના સુથન પટકા, ગુલાબી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : ગુલાબી મીનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી રંગનો પગા, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

અષાઢ વદ - ૧૦
(નિયમના શૃંગાર)

શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીના ઉત્સવની વધાઈ
ગીત ગવાય, નગારા બેસે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલેનાર મોટો પીછોડા, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર છોટી કુલ્હે, સોનેરી કામનો જોડ.

અષાઢ વદ - ૧૧

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની અને પીતામ્બર લાલ ચુંદડીના, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : નીલમણિના.

શ્રીમસ્તકે : રૂપેરી ડાંકનો મુગટ.

નોંધ :- વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

અષાઢ વદ - ૧૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લીલા સુથન, પટકા, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લીલી છજેદાર પાઘ, પીળો કતરો.

અષાઢ વદ - ૧૩
(નિયમના શૃંગાર)
શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીનો ઉત્સવ પ્રા. સં. ૧૯૨૪
દોહરા મંડાણ
બંદનબાર બંધાય, ચોક પુરાય.

સાજ : જરદોજી કાચની પિછવાઈ.

મંગળભોગ : ખોવાના ગુંજા તથા મોહનથાળ.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલેનાર મોટો પિછોડા, ઠાડા વસ્ત્ર લીલા, અંતરવાસનો પટકા ગુલેનાર.

આભુષણ : સફેદ, લીલા, લાલ હાંસ ત્રવલ, સફેદ કડાં, સફેદ અને લીલી પહોંચી, લીલા સાંકળા, સફેદ મુદ્રિકા.

શ્રીમસ્તકે : ગુલેનાર દુમાલો, સફેદ જડાઉ સેહરા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે કેસરી ઘેબર, મદનદીપક, તથા સખડીમાં છપ્પન ભોગ પ્રમાણે પાંચભાત, બીજો ક્રમ ઉત્સવ પ્રમાણે દોહરો.

સંધ્યા અને શયન : સંધ્યામાં તથા શયનમાં સોનાના હિંડોરામાં ઝૂલે. આઠ હિંડોરા ગવાય. ૪ રીતના ગોવિંદસ્વામીના તથા ૪ સેહરાની ભાવનાના.

અષાઢ વદ - ૧૪
પીળી ઘટા

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ધોતી, ઉપરણા અને ઠાડા વસ્ત્ર પીળા.

આભુષણ : સોનાનાં.

શ્રીમસ્તકે : સોનાનો કિરીટ.

અષાઢ વદ ૦))
હરિયાળી - અમાસ
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : લીલો.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : સુથન, બન્ને કાછની પટકા અને ઠાડા વસ્ત્ર લીલા.

આભુષણ : લીલા, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ટિપારો. ટિપારા ઉપર ત્રણ સાદી ચંદ્રિકા, હિંડોળો આસોપાલવનાં પાનની બાડીઓનો બંધાય, આઠ કેળની કુંજ બને.

શયન : શયનમાં રોશની થાય, અને હિંડોળા ઝુલે.

શ્રાવણ સુદ - ૧

શૃંગાર

વસ્ત્ર : ગુલાબી ધોતી ઉપરણા, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : ગુલાબી ચકરીદાર પાઘ પીળીચંદ્રિકા.

શ્રાવણ-સુદ ૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની, સુથન અને પીતામ્બર, મેઘશ્યામ રંગના સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ મીનાનાં.

શ્રીમસતકે : રૂપેરી ડાંકનો મુગટ.

નોંધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.
ખુંપ પણ ધરી શકાય.

શ્રાવણ સુદ-૩ ઠકુરાણી ત્રીજ
(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : ચુંદડીનો.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : ચુંદડીનો બડો પિછોડા, અંતરવાસનો ચુંદડીનો પટકા, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : એક જોડીનો શૃંગાર, સફેદ, લીલા આભુષણ, સફેદ કુંડલ, લાલ હાંસ, લીલી, ત્રવલ, જેહર, પાયલ, અણવટ, વીછીયા, સાંકળા બધું ધરાય, ચરણ ચોકીની ઉપલી કોર સુધી શૃંગાર બે વૈજયંતીહાર, ટકમાં ચોકઠાં આવે.

શ્રીમસ્તકે : ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, શિરપેચ, ત્રવલનો કતરા, ચંદ્રિકા, લુમતોરા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, વડાની છાશ, પુવા
સાંજે હિંડાળામાં બિરાજે ત્યારે ભોગ આવે મનોહર, રસની બરફી અને શીરા, કેસરી પેડા, કચોરી, છોક્યું દહી, બીજ સંધાણાં, તુલસી શંખોદક–ધૂપદીપ થાય. હિંડોળા તિબારીમાં ૩ર કેળની કુંજ બંધાય, શ્રીયમુનાજી ભરાય, ફુલપાનનો હિંડોળો બંધાય.

શયન : શયનમાં ચુંદડીનો નાનો ઉપરણો, ચુંદડીની છજેદાર પાઘ, સફેદ આભૂષણ, સફેદ કડાં, જોડી, પહોંચી, જેહર, તોડા, શ્રીહસ્તફુલ અને ચરણારવિંદના પગપાન, મુદ્રિકા શિશફુલ લર શિરપેચ, લીલીત્રવલ રહે વનમાલા સુધી શૃંગાર શયનભોગમાં રાજભોગ જેવો જ ક્રમ આવે. શયનમાં ઝુલે શયનભોગમાં અનોસરમાં ખાસા ભંડારની સામગ્રી આવે હિંડોળાથી શૈયા મંદિર સુધી પેંડો બિછાવાય.

શ્રાવણ સુદ - ૪
(નિયમના શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની સુથન અને પીતાંબર ચુંદડીના, સફેદ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ, લીલા ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉનો મુગટ.

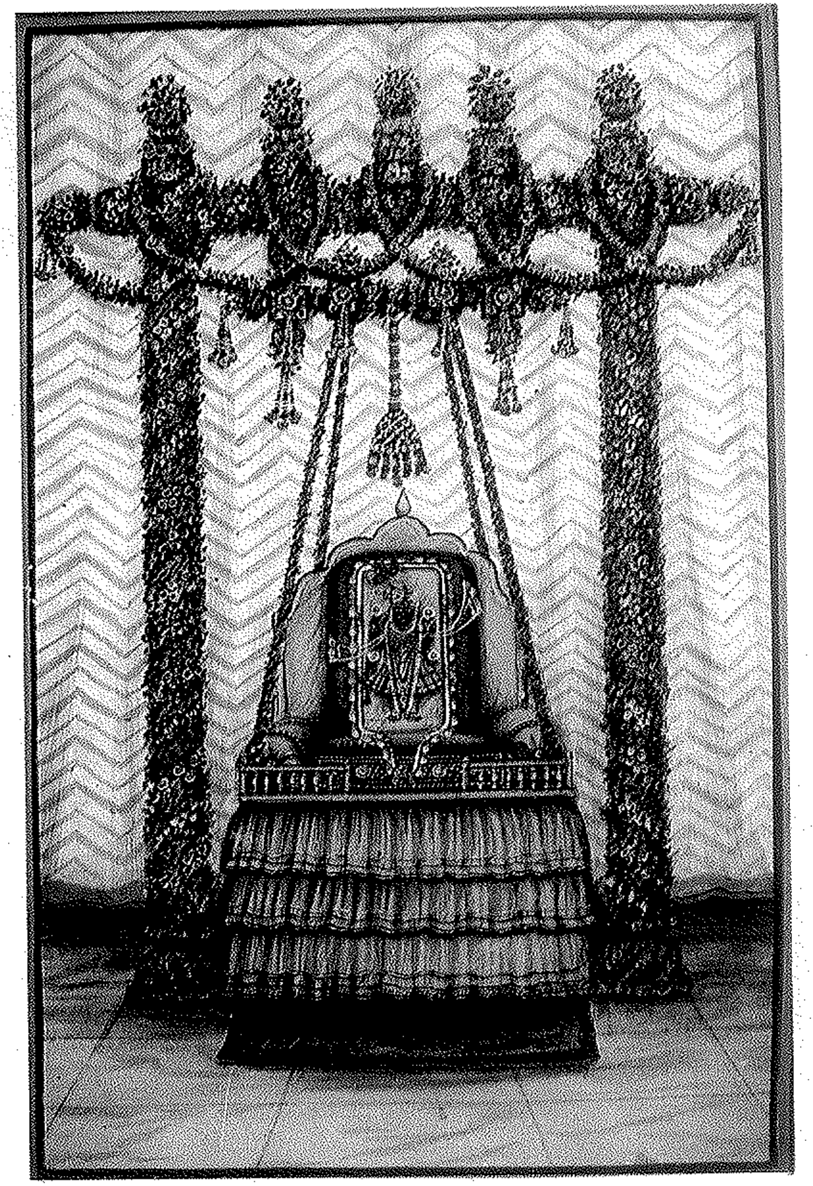

શ્રાવણ સુદ - ૫ નાગપંચમી
(નિયમના શૃંગાર)

ચોક પુરાય અને બંદનબાર બંધાય

સાજ : કોયલી રંગનો.

મંગલભોગ : ઈન્દરસા.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કોયલી રંગનો કિનારીવાળો બે ટુકનો પિછોડા, તનિયા અને ઠાડા વસ્ત્ર લાલ.

આભુષણ : લાલ, સફેદ પાંખડીના ચાર કર્ણફુલ, છેડા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કોયલી રંગની સોનેરી ખીડકીની છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ પકોડીની છાશ, લુચ્ચઈના બદલે ચોખાના લાડું, સખડીમાં ફરા (ચોખાના ચુનની સામગ્રી) બુરા, માખણ અને મુરબ્બાની કટોરી.

રાજભોગ : મોતીની આરતી અને ન્યોછાવર થાય, રાજભોગ સર્યા પછી શ્રીવહુજી, બેટીજી ડેરી માંડે અને પૂજન કરે.

શ્રાવણ વદ - ૬

શૃંગાર

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની, સુથન અને અંતર વાસનો પટકા, પંચરંગી લહેરીયાની પીળા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : પિરોજાના.

શ્રીમસ્તકે : મોતીનો ખુંપ.

શ્રાવણ સુદ - ૭

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : કેસરી બડો પીછોડા, અને અંતર વાસનો પટકા, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : નીલમણિના.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી દુમાલો, મોતીનો સેહરો.

શ્રાવણ સુદ - ૮ સફેદ ઘટા

સાજ : સફેદ.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની સુથન પીતાંબર અને ઠાડા વસ્ત્ર સફેદ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉનો મુગટ.

નોંધ : વસ્ત્ર અને આભરણના રંગ બદલી શકાય.

શ્રાવણ સુદ - ૯

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રીનાથદ્વારામાં સવંત ૨૦૨૩માં સાતે સ્વરૂપનો છપ્પન ભોગ ઉત્સવ

સાજ : કેસરી.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : બન્ને કાછની સુથન તથા અંતરવાસનો પટકો કેસરી, મેઘશ્યામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ અને લીલા આભરણ.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી ટિપારો, કામનો જોડ અને કેસરી ગોકર્ણ.

શ્રાવણ સુદ - ૧૦

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : જો ભાદરવા સુદ ૧૦ ના દિવસે શ્યામ મલ્લકાછ ટિપારા ધરે તો આજે લીલાં ધરે અને તે દિવસે લીલા ધરે તો આજે શ્યામ ધરે અને મલ્લકાછ અને મલ્લનો પટકા લીલા, ઠાડા વસ્ત્ર પીળા.

આભુષણ : લાલ કટિપેચ સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : લીલો ટિપારો કામનો કતરા અને ચંદ્રિકા.

શ્રાવણ સુદ - ૧૧ પવિત્રા એકાદશી

શ્રી નાથદ્વારમાં સાતે સ્વરૂપોને પવિત્રા ધરાવ્યા વિશેષ ઉત્સવ સંવત ૨૦૨૩

સાજ : સોનેરી કિનારીનો સફેદ.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : લાલ તનિયા, સફેદ જામદાનીનો સોનેરી કિનારીનો બડો પીછોડા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના, જડવા મોતીના હાંસ, મોતીની ત્રવલ, મકરાકૃતિ કુંડલ, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ નાની કુલ્હે પાંચ ચંદ્રિકાનો સાદો જોડ, શૃંગાર સમયે પવિત્રા અને રક્ષાનું અધિવાસન થાય સવારે પવિત્રા ધરે તો શૃંગારમાં ધરે, સાંજે ધરે તો ભોગમાં ધરે, પવિત્રા ધરાવતી વખતે ઝાલર ઘંટા વાગે, પહેલું કેસરમાં રંગેલું સુતરનું પવિત્રુ, પછી રેશમની ફુલમાળા, પછી બાદલાનું પવિત્રુ ધરાય, પવિત્રા ધર્યા પછી પિછવાઇ સિંઘાસન વિગેરે પર પવિત્રા ધરાય, પછી ખિલૌનાથી ખેલાવાય ત્યાર બાદ ઉત્સવ ભોગ આવે.

ઉત્સવ ભોગ : સકરપારા, બુંદી, કચોરી છોકયો - મીઠો દહી પેડા રસની બરફી, અને શીરો મિસરીની ડલી, બીજ, સંધાણાં તુલસી શંખોદક - ધૂપદીપ થાય.

નોંધ : પવિત્રા ધરાવતી વખતે જમણી તરફ મિશ્રી ઢાંકીને ધરાવવી પવિત્રા ધરાવી ભેટ કરવી. ઉત્સવનો ભોગ સવારે આવે તો ગોપીવલ્લભ ભોગમાં આવે, અને સાંજે પવિત્રા ધરે તો ઉત્સવ ભોગ સંધ્યા ભોગમાં આવે.

રાજભોગ : ડબરાનો સાજ.
સાંજે હિંડોળા પવિત્રાના સજાવાય.

શયન દર્શન : શયનમાં પણ શ્રી કંઠમાં બે પવિત્રા રહે.

શ્રાવણ સુદ - ૧૨ પવિત્રા બારસ

(નિયમના શૃંગાર)

સાજ : પિછવાઇ પર પવિત્રા રહે.

શૃંગાર : કિનારીનો કેસરી બડો પિછોડા, કોયલી રંગના ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મોતીના, મોતીના ચાર કર્ણફુલ, વનમાલા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : કેસરી છજેદાર પાઘ, સાદી ચંદ્રિકા, આજથી રક્ષા ધરાય ત્યાં સુધી શૃંગાર થયા પછી શૃંગારીની ઇચ્છા હોય તો પવિત્રા ધરાય, ઘંટા ઝાલર શંખ વાગતાં એકાદશી વત્ આજે પવિત્રા ધરાવવા પવિત્રા ધર્યા બાદ ગોપીવલ્લભ ભોગ આવે દર્શન ખૂલે.

સંધ્યા : સંધ્યા આરતીમાં હિંડોરા પવિત્રાના રહે.

શયન : શયનમાં શ્રીકંઠમાં બે પવિત્રા રહે.

શ્રાવણ સુદ - ૧૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : મલ્લકાછ બે રંગી ધરવો, નીચેનો મેઘશ્યામ, ઉપરનો ગુલાબી, મલ્લકાછનો પટકા, મેઘશ્યામ, કટિનો પટકા, ગુલાબી, ખભાનો પટકા, કેસરી, પિરોજાઇ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ ટિપારો, સફેદ જડાઉ કતરા, અને મોર શિખા

શ્રાવણ સુદ - ૧૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલેનાર સુથન - પટકા, ઠાડા વસ્ત્ર મેઘશ્યામ.

આભુષણ : સફેદ.

શ્રીમસ્તકે : લીલી જરદોજી તાજની ટોપી.

શ્રાવણ સુદ - ૧૫ રક્ષા બંધન

(નિયમના શૃંગાર)

શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી, શ્રીમદનમોહનજી અને શ્રીદ્વારકાધીશજી એ સાથે રક્ષા ધરી વિશેષ ઉત્સવ સંવત ૨૦૨૩ આજથી જન્માષ્ટમીની બડી વધાઈ બેસે.
ચોકપુરાય બંદનબાર બંધાય, થાળી માદલ વાગે જન્માષ્ટમી સુધી.

સાજ : જરદોજી, ગાદી તકિયા જરદોજી, જન્માષ્ટમી સુધી આવે સફેદી વડી થાય.

શૃંગાર : અભ્યંગ થાય.

વસ્ત્ર : પીળો કિનારીવાળો મોટો પિછોડા, લાલ ઠાડાં વસ્ત્ર.

આભુષણ : પીરોજાના, ચારકર્ણફુલ, વનમાળા સુધી શૃંગાર.

શ્રીમસ્તકે : પીળી છજેદાર પાઘ, એક સાદી ચંદ્રિકા, સવારે રક્ષા ધરે તો શૃંગારમાં અને સાંજે ધરે તો ભોગમાં ઝાલર ઘંટા શંખ વાગતાં તિલક કરી ચારે શ્રીહસ્તમાં રક્ષા બાંધવી, આરતી ન થાય, સામગ્રી ભોગ, મિઠાઈના ખાંડના કતલા (મોટા ચોરસ ટુક) ઢાંકીને જમણી તરફ ધરવાં. રક્ષા ધર્યા પછી ખેલ થાય અને ઉત્સવ ભોગ આવે.

ઉત્સવભોગ : મેંદાનો મોહનથાળ, ગોળ અને ખાંડનો મોહનથાળ, કચોરી, છોંકયો દહીં, રસનો શીરા, અને બરફી, બીજ, સધાણાં, ફળ ફુલ તુલસી-શંખોદક-ધૂપદીપ થાય.

સવારે ઉત્સવભોગ આવે તો ગોપીવલ્લભ ભોગમાં આવે, અને સાંજે આવે તો સંધ્યા ભોગમાં આવે.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ લુચ્ચઈને બદલે મોહનથાળ વડીની છાશ.

સંધ્યા : સાંજે સંધ્યામાં કાચના હિંડોળે ઝુલે.

શયન : શયન દર્શન સુધી રાખી રહે. શયનમાં મોટો સેલા ધરે. નિત્ય શયનમાં શ્રાવણ વદ ૭ સુધી મોટો સેલોધરે અને ફુલના તોરણ બંધાય.

નોંધ :- આજે જન્માષ્ટમી માટે બાલભોગની ભટ્ટીનું પૂજન થાય.

શ્રાવણ વદ - ૧

(નિયમનો શૃંગાર)

શ્રીદ્વારકાધીશજીની સાથે પાંચે સ્વરૂપ હિંડોરા ઝુલ્યા
વિશેષ ઉત્સવ સંવત ૨૦૨૨

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : ગુલેનાર ધોતી ઉપરણા, મેઘશયામ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : સફેદ આભરણ.

શ્રીમસ્તકે : સફેદ જડાઉ કિરીટ.

રાજભોગ : કટોરાનો સાજ, લુચ્ચઈને બદલે એક સામગ્રી આવે ને વડાની છાશ.

પાંચે સ્વરૂપોના નામ

(૧) શ્રીદ્વારકાધીશજી સાથે (૨) શ્રી ચંદ્રમાજી (૩) શ્રી મદનમોહનજી
(૪) શ્રી મુકુંદરાયજી અને (૫) શ્રી નટવરલાલ હિંડોળા ઝુલ્યાં.

શ્રાવણ વદ - ૨ હિંડોળા વિજય
(નિયમનો શૃંગાર)

જે દિવસે હિંડોરા બિરાજ્યા હોય તે દિવસનો શૃંગાર આજે ધરે.

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : લાલ કિનારીનો મોટો પિછોડા, લીબોઇ રંગનો તનીયા, લીબોઇ રંગના ઠાડા વસ્ત્ર, ચરણારવિંદ સુધી શૃંગાર.

આભુષણ : લીલા.

શ્રીમસ્તકે : લાલ નાની કુલ્હે કામનો જોડ.

હિંડોરા દર્શન : હિંડોરા ઉતરે ત્યારે મોતીની આરતી થાય, ન્યોછાવર થાય, ત્યાર પછી પાંચ પ્રદિક્ષિણા કરવી.

શ્રાવણ વદ - ૩

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : પીળા ધોતી ઉપરણા, ઠાડા વસ્ત્ર લીલા.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : જડાઉ કિરીટ.

નોંધ: જો હિંડોરા વિજય ત્રીજના દિવસે થાય તો આ શૃંગાર બીજના દિવસે કરવો. અને બીજનો શૃંગાર આજે કરવો.

શ્રાવણ વદ - ૪

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : નીલપીતનો બે ટુકનો પિછોડા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : નીલપીતનો પગા, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

અથવા

વસ્ત્ર : પચરંગી લહેરીયાના સુથન પટકા, ખસખસી ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : મુંગાના.

શ્રીમસ્તકે : પંચરંગી લહેરીયાનો ફેંટા. પંચરંગી સિતારાની ટકમાં કલગી.

શ્રાવણ વદ - ૫
(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :

વસ્ત્ર : નીલપીત રંગનો બે ટુકનો પીછોડા, લાલ ઠાડા વસ્ત્ર.

આભુષણ : લાલ.

શ્રીમસ્તકે : નીલપીત રંગનો પગા, કામનો કતરો અને ચંદ્રિકા.

શ્રાવણ વદ - ૬

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :
વસ્ત્ર : લાલ ચુંદડીનો બડો પિછોડા, લીલા ઠાડા વસ્ત્ર.
આભુષણ : નીલ મણિના.
શ્રીમસ્તકે : લાલ ચુંદડીનો દુમાલો, કામનો કતરો, ચંદ્રિકા.

શ્રાવણ વદ - ૭ છઠ્ઠીનો ઉત્સવ

(નિયમનો શૃંગાર)

શૃંગાર :
વસ્ત્ર : લાલ બડો પિછોડા, મેઘશ્યામ પાટના ઠાડાં વસ્ત્ર.
આભુષણ : પીરોજાના, લાલ ચાર કર્ણફુલ, કટિપેચ સુધી શૃંગાર.
શ્રીમસ્તકે : લાલ છજેદાર પાઘ, સફેદ જડાઉ શિરપેચ, અને મોર શિખા, એક સાદી ચંદ્રિકા.
શૃંગારભોગ : આજે શૃંગાર ભોગ આવે, શૃંગાર ભોગમાં ખીરનો ડબરા આવે તુલસી શંખોદક ધૂપદીપ થાય. ભોગ સર્યા પછી બીડી આરોગે ગ્વાલના દર્શન થાય, ખંડપાટ મંડાય, ચોપડ મંડાય, અને તે પછી શૃંગાર આરતી થાય.
રાજભોગ : કટોરાનો સાજ.
શયન : શયન ભોગમાં છઠ્ઠીના ભોગ ધરવા, શયનભોગમાં ફેણી, કચોરી, ખાજાં, સુંઠની બુકની, મેદાની પુરી, બાસુંદી ચાર ટોકરી, ઘી આવે, લુણની કેટોરી, સાદા લપેટ આવે.

।। શ્રી દ્વારકેશો જયતિ ।।

શ્રીદ્વારકાધીશ પ્રભુની સેવા પ્રણાલીની વિશેષ માહિતી

અભ્યંગ

શ્રીદ્વારકાધીશના ઘરની સેવા પ્રણાલી પ્રમાણે વર્ષ ભરમાં શ્રી પ્રભુનું નીચે લખ્યા દિવસોમાં અભ્યંગ થાય.

શ્રી જન્માષ્ટમી, રાધાષ્ટમીની વધાઈ, રાધાષ્ટમી, દાન એકાદશી, વામન જ્યંતી તિ. શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ, પ્રથમ નવરાત્રિ, દશેરા, શરદ, પ્રથમ નૌમહલા રૂપચતુર્દશી, દિવાળી, ભાઈબીજ, ગોપાષ્ટમી, પ્રબોધિની, પહેલી ચોકી, તિ. શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ, તિ. શ્રી ગોકુલ નાથજીનો ઉત્સવ, શ્રી ગુંસાઈજીનો ઉત્સવ, તિ. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ, ભોગી સક્રાંતિ, વસંત, હોળી દંડારોપણ, શ્રીનાથજીનો પાટોત્સવ, હોળી, ડોલોત્સવ, દ્વિતીયાપાટ, સંવત્સર, રામનવમી શ્રીમહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ, તિ. શ્રી પુરૂષોત્તમજીનો ઉત્સવ, અક્ષયતૃતિયા, શ્રી નૃસિંહ જ્યંતી, શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ, રથયાત્રા, કસુંબાછઠ્ઠ, અષાઢી પૂર્ણિમા, પ્રથમ હિંડોરા, ઠકુરાની ત્રીજ, પવિત્રા એકાદશી, રાખી. (એમ ૪૧ અભ્યંગ થાય છે)

વિશેષ

(૧) રવિવાર, મંગળવારના દિવસે તથા પ્રબોધિની થી ડોલોત્સવ સુધી અભ્યંગમાં આંબળા ન આવે.
(૨) રીતના અભ્યંગના સિવાય દસ દિવસની અંદર અભ્યંગ ન થાય, પ્રબોધિનીથી ડોલ સુધી અભ્યંગના દિવસે સખડીનો ગોપીવલ્લભ આવે.
(૩) ડોલથી અક્ષય તૃતીયા સુધી આઠ દિવસનો ઓસરા (અંતર) રહે.
(૪) અક્ષય તૃતીયાથી અષાડી પૂર્ણિમાં સુધી છ (૬) દિવસનું અંતર (ઓસરા) રહે ગોપીવલ્લભમાં સખડીને બદલે દહીભાત અને શિખરન ભાત આવે
(૫) અષાડીથી પ્રબોધિની સુધી આઠ દિવસનો ઓસરા રહે.
(૬) જન્માષ્ટમી, રૂપ ચર્તુદશી, દ્વિતીયાપાટ, રામનવમીના દિવસે અભ્યંગમાં આબળાં જરૂર આવે રવિવાર અને મંગળવારની બાધા નહી.
(૭) અભ્યંગ ના દિવસે શૃંગાર સમયે માખન-બુરાની કટોરી નિત્યથી મોટી આવે.

પાદુકાજીના નીચે લખેલા દિવસોએ અભ્યંગ થાય. જન્માષ્ટમી, તિ. શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ, રૂપચર્તુદશી, શ્રી ગુંસાઈજીનો ઉત્સવ, દ્વિતીયાપાટ, શ્રીમહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ.

પંચામૃત

(૧) શ્રીઠાકોરજીને પંચામૃત જન્માષ્ટમી અને રામનવમીના દિવસે જ થાય.
(૨) શ્રીમહાપ્રભુજીને તેમના ઉત્સવના દિવસે ભીતર જ પંચામૃત થાય.
(૩) શ્રી ગુંસાઈજી તથા તિ. શ્રી બાલકૃષ્ણજીને તેમના ઉત્સવના દિવસોએ ભીતર કેવળ દુધથી જ સ્નાન થાય.
(૪) શાલિગ્રામજીના પંચામૃત-જન્માષ્ટમી, અને રામનવમી ના દિવસે બે વખત નૃસિંહજયંતી, વામન જયંતી તથા પ્રબોધિની પર એક વખત.
(૫) શ્રી સ્વામિનીજીને રાધાષ્ટમીના દિવસે અભ્યંગ તથા કેવળ દુધથી સ્નાન થાય.

સ્નાન

(૧) શ્રી ઠાકોરજીને સ્નાનયાત્રાના દિવસે જ્યેષ્ઠાભિષેક થાય.
(૨) શ્રીમહાપ્રભુજી આદિને ગાળેલાં જલથી સ્નાન થાય.
(૩) ગ્રહણ હોય તે દિવસે બધે ઠેકાણે સ્નાન થાય ગ્રહણ છુટ્યા પછી શ્રી ને સ્નાન થાય.
(૪) ચંદન ધરે, ત્યારે સંધ્યા આરતી થયા પછી (શ્રીઅંગમાં ચંદન લાગેલું હોય તો જલથી સ્નાન થાય.)

તિલક

શ્રી ઠાકોરજીને નીચે લખેલા દિવસોએ તિલક થાય

(૧) જન્માષ્ટમી - પંચામૃત અને તિલક સમયે
(૨) રાધાષ્ટમી - રાજભોગ આરતી થયા પછી ટેરા આવ્યા પછી ભીતર તિલક થાય.
(૩) તિ. શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ - રાજભોગ આરતીમાં
(૪) દશેરા - બે વખત, (રાજભોગ સર્યા પછી અને જવારા ધરે ત્યારે.)
(૫) રૂપચર્તુદશી - સ્નાન સમયે.
(૬) અન્નકુટ - શ્રીગોર્વધન પૂજા કરીને પધારે ત્યારે.

(૭) ભાઈબીજ - થાળ સાજીને તિલક થાય, પછી ધુપદીપ
(૮) શ્રી ગુંસાઈજીનો ઉત્સવ - રાજભોગ આરતીમાં.
(૯) શ્રીનાથજીનો પાટોત્સવ - રાજભોગ સર્યા પછી.
(૧૦) રામનવમી - સવારે પંચામૃત સમયે
(૧૧) શ્રી મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ- - રાજભોગ આરતીમાં
(૧૨) સ્નાન યાત્રા - અભિષેક ના સમયે
(૧૩) રાખી - રાખી બાંધે ત્યારે તે સમયે.

આરતી

(૧) જન્માષ્ટમી - મોતીની આરતી મંગળામાં - બલુની રીતે તથા પચ્ચીસપદ્મમ્ શ્રીભામિની વહુજીના શ્રીહસ્તની, રાજભોગમાં - - શ્રીકમલાવહુજીના શ્રીહસ્તની, સંધ્યાં સમયે શ્રીસ્ક્ષમણી વહુજીના શ્રી હસ્તની, શયનમાં - શ્રીજાનકી વહુજીનાં, શ્રી હસ્તની મહાભોગ અને પલનામાં શ્રી અક્કાજીના શ્રીહસ્તની.
(૨) શ્રાવણ વદ - ૯ - ચારે વખત ડોરાની
(૩) રાધાષ્ટમીની વધાઈ - ડોરાની
(૪) તિ. શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ - ચારે વખત ક્રમથી શ્રીભામિની વહુજી, શ્રી અક્કાજી, શ્રી સ્ક્ષમણિ વહુજી અને જાનકી વહુજીના શ્રીહસ્તની.
(૫) ગુપ્ત ઉત્સવ - ડોરાની
(૬) રાધાષ્ટમી - ચારે વખત શ્રી ભામિની વહુજી, શ્રી અક્કાજી, શ્રી સ્ક્ષમણી વહુજી અને શ્રી જાનકી વહુજીના શ્રી હસ્તની.
(૭) દાન એકાદશી - સંધ્યા વખતે મુગુટની
(૮) વામન જયંતી - ડોરાની
(૯) શ્રીબાલકૃષ્ણજીના ઉત્સવની વધાઈ - ડોરાની
(૧૦) શ્રી ગોપીનાથજીનો ઉત્સવ - ડોરાની
(૧૧) શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ - ચારે વખત (સમય) રાધાષ્ટમી પ્રમાણે.
(૧૨) પ્રથમ નવરાત્રિ - ડોરાની
(૧૩) દશેરા - રાજભોગમાં દશહરાની
(૧૪) છપ્પનભોગનો ઉત્સવ - ડોરાની
(૧૫) શરદના દિવસે - રાજભોગમાં મોરની, શયનમાં ગોપીની.

(૧૬) દુસરી શરદ - મુગુટની.
(૧૭) શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ - ડોરાની
(૧૮) પહેલો નૌમહલાથી દિવાળી સુધી શયનમાં નૌમહલાની
(૧૯) બીજો નૌમહલા - રાજભોગમાં મુગટની
(૨૦) ત્રીજો નૌમહલા -- સંધ્યા સમય નૌમહલાની
(૨૧) ધનતેરસ - રૂપ ચૌદસ - ડોરાની
(૨૨) દિવાળી - ત્રણડોરાની, શયનમાં કાન તિવારીની હટડીમાં - ચૌપડની
(૨૩) અન્નકૂટ - રાજભોગ ડોરાની, અન્નકૂટમાં સુલતાન પાધની માફક રીતે.
(૨૪) ભાઇબીજ - ડોરાની
(૨૫) ગોપાષ્ટમી - રાજભોગમાં ડોરાની.
(૨૬) પ્રબોધિની - મંગળામાં સોળ પાંખડીના પદ્મની, રાજભોગમાં અઠમાસની જાલ, સંધ્યા સમયે ટેડે (વાંકો) સ્વસ્તિક દેવ ઉઠે ત્યારે - કુંડીની શયનમાં ટેઠી સુધી સ્વસ્તિક દુસરે (બીજા) દર્શનમાં શંખ, ત્રીજા દર્શનમાં ચક્ર ચોથા દર્શનમાં ગદા, મંગળામાં અષ્ટદલ પદ્મ રાજભોગમાં પટલજોડ સંધ્યા સમયે લડુઆ શયનમાં દુસરીજાલ, એકાદશી તથા દ્વાદશી બન્ને દિવસ આરતીમાં કમળા-કમળી લાગે કોર નહી.
(૨૭) તિ. શ્રી ગિરધરલાલજી નો ઉત્સવ - ડોરાની.
(૨૮) શ્રી ધનશ્યામલાલજીનો ઉત્સવ - ડોરાની
(૨૯) તિ. શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ - ચારે સમયરાધાષ્ટમી પ્રમાણે.
(૩૦) બડે તાતજી તિ. શ્રી વ્રજભુષણજીનો ઉત્સવ - ડોરાની
(૩૧) શ્રીગુંસાઇજીની વધાઇ - ડોરાની
(૩૨) છપ્પન ભોગ ઉત્સવ - ડોરાની
(૩૩) શ્રી ગુંસાઇજીનો ઉત્સવ - ચારે સમય રાધાષ્ટમી પ્રમાણે.
(૩૪) તિ. શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજશ્રી નો જન્મ દિવસ થાળની
(૩૫) તિ. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી મહારાજનો ઉત્સવ, - ચારે સમય રાધાષ્ટમીવત્
(૩૬) ભોગી સંક્રાંતિ - ડોરાની
(૩૭) ગુપ્ત - ઉત્સવ - ડોરાની
(૩૮) વસંત - રાજભોગમાં વસંતની.
(૩૯) તિ. શ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજનો ગાદી ઉત્સવનો દિવસ - ડોરાની.
(૪૦) શ્રીનાથજીનો પાટોત્સવ - ડોરાની
(૪૧) મંડળી તથા કુંજએકાદશી - મુગુટની
(૪૨) બગીચા - ડોરાની

(૪૩) હોરી - રાજભોગ તથા શયનમાં ડોરાની
(૪૪) ડોલોત્સવ - રાજભોગ તથા બીજા અને ત્રીજા ભોગમાં ડોરાની, ચોથા ભોગમાં ડોલની.
(૪૫) દ્વિતીયા પાટ - ગુપ્ત ઉત્સવ, છપ્પન ભોગ, સંવત્સર શ્રી યદુનાથજી નો ઉત્સવ, તિ. શ્રી. વ્રજભુષણજીનો ઉત્સવ શ્રી રામનવમીના દિવસે ડોરાની, શ્રી મહાપ્રભુજીના ઉત્સવની વધાઇ - ડોરાની, ઉત્સવના દિવસે ચારે સમય રાધાષ્ટમી પ્રમાણે.
(૪૬) તિ. શ્રી. પુરૂષોત્તમજી મહારાજનો ઉત્સવની વધાઇનો દિવસ ડોરાની તથા ઉત્સવના દિવસે ચારે સમય રાધાષ્ટમી પ્રમાણે
(૪૭) અક્ષય તૃતિયા - ડોરાની
(૪૮) શ્રી નૃસિંહ જયંતી - રાજભોગ તથા શયનમાં - ડોરાની
(૪૯) શ્રી વ્રજનાથજીના ઉત્સવની વધાઇ - ડોરાની તથા ઉત્સવને દિવસે ચારે સમય રાધાષ્ટમી પ્રમાણે.
(૫૦) ગંગાદશમી - ડોરાની
(૫૧). સ્નાન યાત્રા - મંગલામાં ડોરાની
(૫૨) રથયાત્રા - રાજભોગ અને ચોથા ભોગમાં ડોરાની
(૫૩) કસુંબા છઠ - ડોરાની કસુંબા છઠથી તિ. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી મહારાજના ઉત્સવ સુધી નિત્ય શયનમાં મોતીની આરતી ઉતરે.
(૫૪) અષાડી પૂર્ણિમા - મુગુટની
(૫૫) જન્માષ્ટમીની વધાઇ - ડોરાની
(૫૬) તિ. શ્રી. બાલકૃષ્ણલાલજીનો ઉત્સવ - ચારે સમય ચાર ડોરાની તથા નિત્યની ખંડની આરતી દુહેરી ઉતરે.
(૫૭) ઠકુરાની ત્રીજ, નાગપંચમી, તથા પવિત્રા દ્વાદશી - ડોરાની
(૫૮) રાખીથી જન્માષ્ટમી સુધી - રાજભોગમાં નિત્ય ડોરાની આરતી ઉતરે.

માલા

નીચે લખેલા વિશેષ સમયે વિશેષ માલા આવે.

(૧) જન્માષ્ટમી - જન્મ સમય જુઇ
(૨) વામન જયંતી - ચમેલી
(૩) રામ નવમી - નિવારા
(૪) નૃસિંહ જયંતી - રાયવેલ
(૫) ડોલ - ચોથા ભોગમાં ચૈત્રી ગુલાબ.

અનૌસરના પલના

વર્ષ ભરમાં રાજભોગના અનૌસરમાં નીચે લખ્યા દિવસોએ પલના આવે.

(૧) જન્માષ્ટમી - બે (અષ્ટમી અને નવમીના દિવસે)
(૨) શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ - બે (૧૩, ૧૪ ના દિવસે)
(૩) શ્રી ગુંસાઈજીનો ઉત્સવ બે (૯, ૧૦ મી ના દિવસે)
(૪) શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ બે (૧૪, અમાસના દિવસે)
(૫) શ્રી મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ - બે (૧૧ થી ૧૨ ના દિવસે)
(૬) શ્રી પુરૂષોત્તમજીનો ઉત્સવ - ૧ દિવસ

વિશેષ - પ્રકીર્ણ - માહિતિ

નિત્ય ભોગનો સમય (૧ ઘડી - ૨૦ મિનીટ)

*	મંગળભોગ	૧ ઘડી	૨૦ મિનીટ
*	રાજભોગ	૨ા ઘડી	૫૦ મિનીટ
*	ઉત્થાપનભોગ	૧ ઘડી	૨૦ મિનીટ
*	શયન ભોગ	૧ ઘડી	૨૦ મિનીટ
	દુસરા ભોગ	—	૭ મિનીટ

શીતકાળની ચોકી

જે દિવસે ચોકીનો ભોગ આવે ત્યારે નવો વાઘો ધરાય, અને ચોકી ભોગ ગોપીવલ્લભ ભોગમાં આવે. નીચે લખેલા ચોકીના દિવસોએ સામગ્રી નીચે પ્રમાણે આવે. જે ચોકીના દિવસે મિતી ના લખી હોય, તે વચ્ચેના દિવસોએ અનુકુળતાએ સાવકાશ કરવી.

(૧) ખીર વડા, ફીકા ભરતાંનાં ગુજિયાં, દુહેરા કુંડવારા.
(૨) માખન વડા, રતાળુના ગુજિયા.
(૩) કાર્તિક વદી - ૧૧ તિ. શ્રી ગોકુલનાથજીના ઉત્સવની વધાઈ - ઘેબર, ભરતાની પકોડી.
(૪) કાર્તિક વદ-૧૪ તિ. શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ. ખોવાનો ગુંઝાં, ખાજાં ચોકીભોગ રાજભોગમાં આવે.
(૫) માગસર સુદ ૭ શ્રી ગુસાઈજીના ઉત્સવની વધાઈ, કચોરી ફીકા, મગની દાળની કચોરી.

(૬) દહીથરા, સુરણની ગુંજિયા, કાંકરોલીમાં ચોકી ભોગના સમયે શ્રીનાથજી તથા શ્રીયુમનાજીના **ભાવાનાજી** પધારે.
(૭) માગસર વદ - ૯ શ્રી ગુંસાઈજીનો ઉત્સવ, કપુરનાડી ખાજા, ચોકીભોગ, રાજભોગમાં આવે.
(૮) માગસર વદ-૧૧ તિ. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના ઉત્સવની વધાઈ ચંદ્રકલા, અડદની દાળની કચોરી.
(૯) માગસર વદ-૧૪ તિ. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ મનોહર, ખાજા, ચોકીભોગ રાજભોગમાં આવે.
(૧૦) મદનદીપક મગની દાળના ગુંજીયા, દુહેરા, કુંડવારા.
(૧૧) તવાપુરી, અડદની દાળની કચોરી.
(૧૨) દુધપુવા, કાચા કેળાંના ગુંજીયા.
(૧૩) પોષ વદી-૪ ગુપ્ત ઉત્સવ, ખરમંડા, ભરમાં મંગળભોગ રોટી ખીર તથા લોંગ પાનની કઢી.
(૧૪) માડા આદાકી ગુંજીયા, મંગલભોગ, વેંગણભાતનો.
(૧૫) મુખ વિલાસ મગની દાળની ભરમાપુરી.
(૧૬) ફેની (ઉપર ચૈત્રી ગુલાબની પાંખડી, લીલવાના ગુંજીયા, દુહેરા કુંડવારા. શ્રી મસ્તક પર કેસરી ફેંટા)

મંગળ ભોગ

શીતકાળમાં મંગળભોગમાં નીચે લખેલા પ્રમાણે આઠ દિવસોએ વિશેષ સામગ્રી આવે.

(૧)	ખાંડના ચુરમા	બે વખત
(૨)	ગોળના ચુરમા	બે વખત
(૩)	ગોળની સેવ	એક વખત
(૪)	ગોળની બુંદી	એક વખત
(૫)	માંડી	એક વખત
(૬)	ખરમંડી	એક વખત

શીતકાળમાં સખડીના ચાર મંગળભોગ આવે.

(૧) ખિચડી - મીઠો ચુરમા
(૨) છડિયાળ દાળભાત, મીઠા ભાંસોદીભાત.
(૩) રોટી, મીઠામાં સીરો અને ખીર (ગુપ્ત ઉત્સવ પોષ વદ ૪ ને દિવસે)

(૪) વેગણ ભાત, મીઠામાંથુલી, માંડાની ચોકીના દિવસે વિશેષ ખરમંડા માંડાના મંગળભોગમાં લોંગ પાનની કઢીપકોડી આવે.

મંગળભોગ

(૬) નીચે લખેલાં દિવસોએ નીચે લખેલી સામગ્રી વિશેષ રૂપમાં મંગળ ભોગમાં આવે છે.
(૧) જન્માષ્ટમી (ફેની) ઘેબર
(૨) નવમી - સેવના લાડુ
(૩) ભાદરવા સુદ-૨ ઉત્સવ - તવાપુરી
(૪) શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ - જલેબી
(૫) અન્નકુટ - સેવના લાડુ
(૬) પ્રબોધિની - કુરના ગુંજીયા
(૭) કાર્તિક સુદ - ૧૨ - મઠડી
(૮) શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ - મનોહર ખાજા
(૯) શ્રી ગુંસાઇજીનો ઉત્સવ - જલેબી
(૧૦) તિ. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ - જલેબી
(૧૧) કુંજ એકાદશી- ખાજા
(૧૨) હોરી - સકરપારા
(૧૩) શ્રી મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ - જલેબી
(૧૪) શ્રી પુરૂષોત્તમજીનો ઉત્સવ - બુંદીના લાડુ
(૧૫) શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ - સતુવાના લાડુ
(૧૬) નાગ પંચમી - ઇંદરસા

ભોગ સમયની ઘડી

એક ઘડી = ૨૦ મિનીટ

શ્રી દ્વારકાધીશ પ્રભુના સાધારણ દિવસોમાં ભોગનો સમય નીચે લખ્યા પ્રમાણે નિર્ધારીત કરવામાં આવ્યો છે.

(૧) મંગલ ભોગ = ૧ઘડી
(૨) ગોપી વલ્લભ = ૧ ઘડી
(૩) ડબરાભોગ નો સમય = શૈયાની સેવા કરીને ઝારીજી ભરાય ત્યાં સુધી

(૪) રાજભોગની = ૨॥ ઘડી
(૫) ઉત્થાપન ભોગ = ૧ ઘડી
(૬) સંધ્યા ભોગ = અડધી ઘડી
(૭) ભોગ સંધ્યા ભેગા હોય તો = ૧ ઘડીનો સમય
(૮) ડબરા ભોગ નો સમય = ઝારી ભરતા સુધી
(૯) શયનભોગ = ૧ ઘડી દુસરા ભોગનો સમય ઝારી ભરીને બીડીના પાંચ પાન તૈયાર થાય ત્યાં સુધી

ઉત્સવના ભોગનો સમય નીચે લખ્યા અનુસાર રહે

(૧) જન્માષ્ટમી - મહાભોગ – ૬ ઘડી
(૨) રાધાષ્ટમી - રાજભોગ – ૧ ઘડી વધારે
(૩) વામન જ્યંતી - ઉત્સવ ભોગ – ૧ઘડી
(૪) તિ. શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ – રાજભોગ – ૧ ઘડી વધારે
(૫) દશેરા - રાજભોગ અને સંધ્યા ભોગમાં ૦॥ ઘડી વધારે
(૬) નૌમહલા - ત્રણે દિવસે સંધ્યા ભોગમાં ૦॥ ઘડી વધારે
(૭) અન્નકુંટના ભોગનો સમય - પનો પીને પરિક્રમા થાય ત્યાં સુધી
(૮) પ્રબોધિની - દેવને ભોગ જે સમયે આવે તે સમયે ૦॥ ઘડી
(૯) વધારે જાગરણના ભોગમાં પહેલા ભોગમાં ૦॥ ઘડી બીજાભોગમાં ૧ ઘડી ત્રીજા ભોગમાં ૧ ઘડી
(૯) તિ. શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ - રાજભોગમાં ૧ઘડી વધારે
(૧૦) શ્રી ગુંસાઇજીનો ઉત્સવ -રાજભોગમાં ૧ ઘડી વધારે
(૧૧) તિ શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ - રાજભોગ ૧ ઘડી વધારે
(૧૨) સંક્રાતિ ઉત્સવ ભોગમાં ૦। ઘડી વધારે
(૧૩) વસંત ભોગ - ૧ ઘડી
(૧૪) શ્રીનાથજીનો પટોત્સવ - રાજભોગ ૦॥ ઘડી વધારે
(૧૫) બગીચા ભોગ - ૧ ઘડી
(૧૬) ડોલોત્સવ - પહેલો ભોગ - ૧ ઘડી, બીજો ભોગ - ૧ ઘડી ત્રીજો ભોગ ૨। ઘડી
(૧૭) રામનવમી - ઉત્સવ ભોગ ૧ ઘડી
(૧૮) શ્રી મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ - રાજભોગ ૧ ઘડી વધારે

(૧૯) તિ. શ્રી. પુરૂષોત્તમજી મહારાજનો ઉત્સવ - રાજભોગ ૧ ઘડી વધારે
(૨૦) અક્ષયતૃતિયા - ઉત્સવ ભોગ ૧ ઘડી
(૨૧) નૃસિંહ જયંતિ - ઉત્સવ ભોગ ૧ ઘડી
(૨૨) શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ - રાજભોગમાં ૧ ઘડી વધારે
(૨૩) સ્નાન યાત્રા - ગોપી વલ્લભમાં ૦ાા ઘડી વધારે
(૨૪) રથયાત્રા - પહેલો ભોગ ૦ાા ઘડી, બીજો ભોગ ૧ ઘડી, ત્રીજો ભોગ ૨ાા ઘડી.
(૨૫) પ્રથમ હિંડોળા - ઉત્સવ ભોગ ૧ ઘડી
(૨૬) ઠકુરાનીત્રીજ - ઉત્સવ ભોગ ૧ ઘડી
(૨૭) પવિત્રા - ઉત્સવ ભોગ જે સમયે આવે તે સમય ૦ાા ઘડી વધારે.
(૨૮) રાખી - ઉત્સવ ભોગ જે સમયે આવે તે સમય ૦ાા ઘડી વધારે
(૨૯) શ્રાવણ વદ - ૭ - શ્રૃગાર ભોગ ૦ાા ઘડી, શયન ભોગમાં છઠ્ઠીનો ભોગ ૦ાા ઘડી વધારે તેજ પ્રમાણે શ્રીસ્વામિનીજીની છઠ્ઠી
(૩૦) ગોપાષ્ટમી - શૃંગાર ભોગ અડધી ઘડી.
(૩૧) ડબરાનો સાજ ઉત્સવના દિવસોએ - રાજભોગમાં ૦ા ઘડી વધારે સમય
(૩૨) ચૌકી તથા કુંડવારો હોય ત્યારે - ૦ાા ઘડી વધારે
(૩૩) પ્રત્યેક એકાદશી - રાજભોગમાં ૦ા ઘડીનો અધિક સમય.

ગોપીવલ્લભ ભોગ

શીતકાળના ક્રમથી અનસખડીમાં નીચે લખેલી સામગ્રી આવે.

(૧) ભરતાના ગુંજીયા, રતાળુના ગુંજીયા, કાચા કેળાના ગુંજીયા સુરણના ગુંજીયા, આદાના ગુંજીયા, લીલવાના ગુંજીયા, મગના ગુંજીયા, ભરમાપુરી, ચોળાની ઋતુમાં ચોળાના ગુંજીયા. કચોરી (ગુંજીયા - ઘુઘરા)
(૨) સખડીમાં - આખા મગની ખિચડી, છડિયળ દાળની ખીચડી, મગની દાળની ખિચડી, ચણાની દાળની ખિચડી, લીલવાની દાળની ખીચડી, અડદની દાળની ખિચડી, તુવેરની દાળની ખિચડી, વેંગણભાત, આદાભાત, લવિંગભાત, વડીભાત, ચણાભાત, લીલવાભાત, ચોળાની ઋતુમાં ચોળાભાત, ભોગી સંક્રાંતિમાં ગોપીવલ્લભમાં ચીલા આવે.

રાજભોગ

શીતકાળમાં રાજભોગમાં નીચે લખેલી વિશેષ સામગ્રી ક્રમથી આવે.

(૧) આદાની લીટી બે વખત, એકમાં ગોળની થુલી, બીજામાં સાથ ખાંડની થુલી, ગોળની લીટીની સાથે બાસોંદી ભાત.
(૨) થાળીના ઢોકળાં ચાર વખત, બે વખત મગના અને બે વખત અડદના.
(૩) બે વાર ચંદા રોટી.
(૪) બે વાર સુરજ રોટી.
(૫) એક વખત તુતઇ રોટી.
(૬) એક વખત વેઢમી.
(૭) અડદની દાળના ઓસરા હોય ત્યારે ટિકરા છુટી લીટી ફેના દુપડા, રોટી આવે.
(૮) એક વખત આખા અડદ આવે.
(૯) પ્રબોધીનીથી વસંત સુધી લુચઇને બદલે **શીતકાળ** આરોગે.
(૧૦) વસંતથી પ્રબોધિની સુધી લુચઇઆરોગે.
(૧૧) પ્રબોધિનીથી ડોળ સુધી ગોળ તથા ગોળની સામગ્રી.

ખેલની તબકડી

ખેલની તબકડીમાં આટલી વસ્તુઓ આવે.

સાબુની સઠેલી, બદામનો શીરા, પેંડા, દુધઘરની કેટલીક સામગ્રી બાલભોગનો ફીકા, ભંડારનો ફીકા, માખન બુરા, બધી પ્રકારનો તરમેવા.

બાલભોગની નીચે પ્રમાણે લખેલી એક સામગ્રી નિત્ય નવી આવે.

બુંદીના લાડુ, મઠડી, સેવના લાડુ, કુરતા ગુંજા, ખાજાં મગજ મોહનથાળ, ઉકરેટા, ફેની કપુરનારી જલેબી નાડી મુરકી પાયેલાં મંડા, ખરમંડા, દહીથરા, મનોહર માખનવડા, ખિચડીનો મનોહર, ઝીણી સેવના લાડુ સકરપારા, ખોવાનો મનોહર કચોરી, ખીરવડા, ચોરીઠાનો મોહનથાળ ઘાંસનો લાડુ, ઘેબર, બુંદીનો મોહનથાળ, પપચી, ગુડફલ, મગનો ઉક્કર, દહીની સેવ, મુખ વિલાસ, ખોવાનાં ગુંજા, અધિક દિવસ હોય તો તળસાંકળી.

ડબરાનો સાજ (ઉત્સવ ક્રમ)

ડબરાનો ઉત્સવનો ક્રમ નીચે લખ્યા પ્રમાણે

(૧) સખડીમાં - છડિયાળ દાળ, તિનકુરા, વડીનો ઝોલ, તિલવડી ઢેબરી, પાપડ, સાદા લપેટમાં મિરચફુલ. ગોપીવલ્લભમાં પાટિયા આવે. સખડીનો ગોપીવલ્લભ બંધ રહે.

(૨) અનસખડીમાં - જલેબી, બુંદીપુરી શિખરનવડી. બિલસારું રસોઇની ખીર પાટિયાની, છાછવડા, થપડીના બદલે સેવ. તે દિવસે આરતી મોતીની, ન્યોછાવર થાય, અને ચોક દહેરી મંડાય, તથા બંદનબાર બંધાય.

કટોરાનો સાજ

રાજભોગમાં - મીઠાને બદલે પાટિયા આવે, છડિયાલ દાળ કઢીને બદલે તિનકુરા, તિલવડી ઢેબરી, સાદા ભૂજેના, લુચઇના બદલે પાટીયાની ખીર, વડાની છાશ, ગોપીવલ્લભમાં તુવેરની દાળ, પકોડીની કઢી.

મોતીની આરતી થાય ચોક દેહરી મંડાય, બંદનબાર બંધાય, ન્યોછાવર થાય.

વર્ષ દરમ્યાન કરવામાં આવતાં સંકલ્પની સુચી નીચે પ્રમાણે છે.

સંકલ્પ - પ્રકાર

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशति तमे युगे कलियुगे प्रथम चरणे भूलोके भरतखडे जम्बुद्वीपे नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तर्गतमेदपाटेके देशे विक्रमशके बौध्दावतारे श्रीकृष्णावतारे अमुक नाम संवतसरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक राशिस्थिते वर्तमाने सूर्ये अमुक राशि स्थिते चंद्रे अमुक राशि स्थिते श्रीदेवराज मूरौ अेवं ग्रहगुण विशेषेण विशिष्टाया शुभ पुण्यतिथौ अद्य अस्य

(૧) જન્માષ્ટમી પંચામૃત સમયે	ॐ विष्णुः३ (पूर्ववत्) एव ग्रहगुण विशेषेण विशिष्टाया शुभतिथौ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य कृष्णावतारोत्सव कर्तुं पचामृत स्नान करयिष्ये,
તિલક સમયે	ॐ विष्णुः ३ (पूर्ववत्) भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य आयुष्याभिवृद्ध्यर्थं नानानाम गोत्रेभ्यो बाह्मणेभ्यो दातुम् अहं उत्सृजे
જન્મસમયે પંચામૃત	ॐ विष्णुः ३ (पूर्ववत्) भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य प्रादुर्भावोत्सवकर्तुं पंचामृत स्नान करायिष्ये
નંદરાયજીનો નંદમહોત્સવ સમયે	विष्णुः३ (पूर्ववत्) अस्य कुमारस्य माता पित्रोः शिशोस्य नैरुज्य पूर्वकदीर्घायुष्य कामनया इदं गोदानागभूत द्रव्य अमुकगोत्राय नंद पुरोहिताय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे

अनेन नांदीमुख देवताः प्रीयतां वृध्धिः

(૨) વામન જયંતી	विष्णुः (३) पूर्ववत् भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य वामनावतारोत्सवं कर्तुमृतदङ्गत्वेन पचामृत स्नानमहं कारयिष्ये.
(૩) દેવપ્રબોધ	विष्णु : ३ (पूर्ववत्).........
નીએકાદશી	श्रीमन्नदराजकुमारस्य देवोत्थापनकर्तुं तदगत्वेन पंचामृत स्नानमहं
પંચામૃત	करयिष्ये
દેવજગાવતી	उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यजनिद्रा जगत्पते ।
વખતે	त्वया चोत्थाप्यमानेन उत्थित भूवन त्रयम् ॥

(૪) વસંત	ૐ विष्णु : 3 (पूर्ववत्)
પંચમી	भगवतः पुरुषोत्तमस्य वसन्तोत्सवं कुर्तुं तदंगत्वेन
અધિવાસન	कलशाधिवासनमहं करिष्ये.
વસંતનો કલશ	
(૫) ડોલોત્સવ	ૐ विष्णु : 3 (पूर्ववत्)
	भगवतः पुरुषोत्तमस्यदोलाधिरोहणार्थं दोलाधिवासनमहं करिष्ये.
(૬) રામનવમી	ૐ विष्णु : 3 (पूर्ववत्)
શ્રીપંચામૃત	भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य रामावतारोत्सवं कर्तुं पंचामृत स्नानमहं
તથા જન્મસમયે	करयिष्ये.
શાલિગ્રામજીને	
(૭) નૃસિંહ	ૐ विष्णु : 3 (पूर्ववत्)
જયંતી	रामनवमीवत् भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य नृसिंहावतरात्सवं कर्तुं
	पचामृत स्नानमहं करयिष्ये.
(૮) જ્યેષ્ઠા-	ૐ विष्णु : 3 (पूर्ववत्)
ભિષેકજલ	भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य प्राप्त सुवर्ण धर्मानुवाक्सूक्त द्वारा
અધિવાસન	ज्येष्ठाभिषेक स्नानार्थ जलाधिवासनमहं करिष्ये.
જ્યેષ્ઠાભિષેક-	ૐ विष्णु :3 (पूर्ववत्) भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य
	सुवर्णधर्मानुयवाक्सूक्त
સ્નાનસમયે	मन्त्रैः ज्येष्ठाभिषेकस्नानमहं करयिष्ये.
(૯) રથયાત્રા	ૐ विष्णु :3 (पूर्ववत्) भगवतः श्री पुरुषोत्तमस्य रथाधिरोहणार्थं
રથનું અધિવાસન	रथाधिवासनमहं करिष्ये
(૧૦) હિંડોરા	रथयात्रावत् भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य हिंदोलाधिरोहणार्थ
અધિવાસન	हिंदोलाधिवासनमहं करिष्ये.
(૧૧) અન્નકૂટ	ૐ विष्णुः 3 (पूर्ववत्) श्रीमन्नंन्दराजकुमारस्य अभ्युदयार्थं
	अन्नकूट
સમયે	महोत्सवं कर्तुं तदंगत्वेन गोवर्धनपूजामहं करिष्ये
ગોવર્ધન	गोवर्धनधराधार गोकुलत्राणकारक ।
પૂજાવખતે	विष्णु बाहु कृतच्छाया गवां कोटिप्रदोभव ॥

જન્માષ્ટી : જન્મ સમયે બોલાતાં શ્રીમદ્ ભાગવત ૧૦ સ્કંધના ૩ જો અધ્યાય, તેના પ્રથમ ૮।। શ્લોક (નીચે પ્રમાણે બોલવાં)

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परम शोभनः ।
यर्ह्येवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम् ॥१॥

दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम् ।
मही मंगलभुयिष्ठपुरग्रामव्रजाकरा ॥२॥

नद्यः प्रसन्नसलिला ह्रदा जलरुहश्रियः ।
द्विजालिकुलसंनादस्तबका वनराजयः ॥३॥

ववौ वायुः सुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहः शुचिः ।
अग्नयश्च द्विजातीनां शान्तास्तत्र समिन्धत ॥४॥

मनांस्यासन् प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम् ।
जायमानेऽजने तस्मिन् नेदुर्दुन्दुभयोदिवि ॥५॥

जगुः किन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुः सिध्दचारणाः ।
विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं तदा ॥६॥

मुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदान्विताः ।
मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरनुसागरम् ॥७॥

निशीथे तमउद्भूते जायमाने जनार्दने ।
देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः ॥८॥

आविरासीद् यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ।

શૃંગાર પ્રણાલીમાં આવેલાં કેટલાંક શબ્દોના અર્થ

(અ)

અડતું = ભાત પાડેલી એક સાટિન
અતલસ = સોનેરી છાપાવાળું રેશમી વસ્ત્ર
અનવટ બિંછીયા = પગના, અંગુઠા આદિના છલ્લાં
અનવસર = પોઢીજાવું અનવકાશ
અભ્યંગ = ચંદન ફુલેલ આદિથી સ્નાન
અરગજાઈ = એક પ્રકારનો રંગ
અલંકાર = નેત્ર આભૂષણ
આત્મસુખ = રૂનું વસ્ત્ર
આબખારા = એક પ્રકારનું પીવાનું પાત્ર
ઉત્તુ = ભાત પાડેલી એક સાટિન
એકદરા = એક દરવાજાવાળી

(ક)

કણ્ઠાભરણ = ગળાનું આભરણ
કતરા = એક પ્રકારની કલગી
કંન્દોરા = કમરનું ઘરેણું
કમલપત્ર = કપોલો (ગાલ) પર કેસરની સમાન ચિત્રેલી રેખાઓ
કલ્પવૃક્ષ = વંશવૃક્ષ
કવાય = શીતકાળનું રૂભરેલું એક વસ્ત્ર
કસુમલ = પાક્કો લાલ રંગ
કાછની = ઘાઘરાની માફક અડધી જાંઘ સુધીનું આવતું વસ્ત્ર
કાછા = કચ્છા - કછની
કામકો જોડ = બાદલાનો જોડ પચ્ચીના આભરણ
કીનખાબ = એક પ્રકારનુ રેશમી વસ્ત્ર
(કુલ્હે) = એક પ્રકારની પાગ
કોયલી રંગ = એક પ્રકારનો રંગ
કૌસ્તુભ = એક મણિનું નામ છે.
ક્ષુદ્રઘંટિકા = ઘુઘરૂં વાળી કરધની

(ખ)

ખપુવા = કટાર
ખરસલ = વગર છત્રીનો રથ
ખિડકીદારપાઘ = એક પ્રકારની પાઘ
ખુલતે = યથા યોગ્ય શોભિત
ખુલે બંધ = એક પ્રકારના વાઘા
ખોલ = ચાદર

(ગ)

ગદ્દલ = રૂનો અંગરખા
ગંગાજમની = સોનાચાંદીની મળેલી વસ્તુ
ગાતી = ગળામાં પાછળ ગાંઠ દઈને બાંધેલું વસ્ત્ર
ગુજરી = હાથમાં પહેરવાનું આભૂષણ
ગુલેનાર = એક રંગ
ગુલેબાંસ = એક પ્રકારનો રંગ
ગોકર્ણ = ગાયના કાનની સમાન લાંબા, શ્રી મસ્તક પર ધરાતાં વિશેષ વસ્ત્ર
ગોખડા = એક પ્રકારની પાઘ

(ઘ)

ઘટા = એક જ રંગની સજાવટ
ઘેરદાર = ઘેરવાલા વાઘા

(ચ)

ચંદ્રિકા = મોર પંખ
ચાકદાર = કોણા નિકળેલા એક પ્રકારના વાઘા
ચીડા = પક્ષીની માફકનું આભરણ
ચૌકી = ગળાનું આભરણ અને ખંડપાટ ચૌકી
ચૌખડા = શ્રીઠાકોરજીના શ્રીઅંગની બહાર ત્રણે બાજુ આવતા.

(છ)

છજેદાર = એક પ્રકારની પાઘ
છાપા = છપાયેલા વસ્ત્ર
છોટાવસ્ત્ર = ચોળી

(જ)

જરદોજી = સોનેરી કલા વાળુ વસ્ત્ર
જંગાલી = એક પ્રકારનો રંગ
જામદાન = એક પ્રકારનું મલમલનું વસ્ત્ર
જેહર = પગનું આભુષણ (પાયજેલા)
જોડ = શ્રીમસ્તક પર ધરવવાનો જોડ

(ઝ)

ઝગુલી = નાની અંગરખી

(ટ)

ટકમાં = જડાઉના જેમાં ઠેકડા હોય
ટિપારા = ત્રિકોણ વાળુથી મસ્તકનુ આભુષણ

(ઠ)

ઠાઉવસ્ત્ર = સ્વરૂપની બહારનું વસ્ત્ર
ઠેકડા = આભરણમાં જડેલા રત્ન

(ડ)

ડબરા = મોટો કટોરા
ડોરીયા = ધારીવાળી મલમલ

(ઢ)

ઢોલના = ગળાનું એક આભરણ

(ત)

તનિયા = લંગોટની માફકનું એક વસ્ત્ર
તાંઇ = પ્રર્યન્ત
તાઈત = ગળાનું તાવીજ
તોડા = પગનું આભુષણ
ગસેટિયા = ગળાનું એક આભુષણ

(થ)

થાળસાનના = દાળ ભાત મેળવવા

(દ)

દરયાઇ = એક પ્રકારનું રેશમી વસ્ત્ર
દામન = અંગનો નીચેનો ભાગ

દુગદુગી = ગળાનું એક ઘરેણું
દુમાલા = પાઘ ઉપર આવતા પટકા જેના બન્ને છોડ કાન પર આવે છે.
દુલડી = બેલરની માળા

(ન)

નિચલે = નીચેના
નિબુંઆઇ = એક પ્રકારનો રંગ
નીમા = શ્રી અંગનો રૂનું વસ્ત્ર

(પ)

પગપાન = પગનું આભુષણ
પતંગી = એક પ્રકારનો રંગ
પાનતુર્રા = ફુલ્હેનો છોડ
પાયલ = પાયજેબ
પેચ = પાગનો પેચ

(ફ)

ફગુવા = ફાગમાં અપાતું એક વસ્ત્ર
ફગુનિયા = એક પ્રકારની સાડી
ફતવી = શ્રીઅંગનું વસ્ત્ર
ફરૂખશાહી = એક પ્રકારનું જરીનું વસ્ત્ર
ફરગુલ = શીતકાળમાં રૂવાળુ વસ્ત્ર જે ગદલ પર આવે
ફોંદા = ફુંદના

(બ)

બગીચાખેલે = બગીચા પર ગુલાલરંગ નાંખવો
બટમા = બટ લગાવેલું
બંટા = કાપડનો સેટ
બડે હોય = ઉતરી જાય
બડોવસ્ત્ર = સાડી
બાગા = જામો, પહેરવાનું એક વસ્ત્ર
બાદલા = સોના ચાંદીની તારાવાળી માળા
બીડી = પાન

(ભ)

ભાંતવાર = જુદી જુદી રીતે
ભેલી = એક સાથે જોડે

(મ)

મઝલેવસ્ત્ર = લેંઘા
મબ્લકાછ = પહેલવાનનો કચ્છ
મંદીલ = એક પ્રકારની પાઘ
માંદલ = એક પ્રકારનું વાજીત્ર
મિલમા = મળેલાં
મોઠડા = એક પ્રકારના લહેરીયા
મોજા = શીતકાળમાં પગ ઢાંકવાનું રૂનું વસ્ત્ર

(ર)

રૂપેહરી = ચાંદીની કળા વાળુ

(લ)

લટકન = લટકતું ઘરેણું
લોલકબંદી = કાનપર લટકાવતુ લટકણ

(વ)

વિગત = પ્રકાર

(સ)

સગી = ચોટી
સરેસરના = સરકાવી દેવું હટાવી દેવું
સાંગામાચી = એક નાનું સિંધાસન
સિલુ = એક વૃક્ષ
સુંયન = પાયજામા
સોસની = એક પ્રકારનો રંગ

(હ)

હમેલ = ગળાનું આભરણ
હંસલી = ગળાનું આભરણ
હસ્તસાંકળા = હાથના આભૂષણ
હરેરંગની બત્તી = લીલી પાઘ
હાંસિયા = મોટી કિનાર (ચોડી)
હિંડોરા વિજય = હિંડોરા સમાપ્તિ

શ્રી કાંકરોલીના ઘરના વિદ્યમાન ગોસ્વામી બાલકોના જન્મદિવસની યાદી

અનુ ક્રમ નંબર	નામ	જન્મદિવસ તિથિ	પ્રાકટ્યસંવત વર્ષ
૧	ગો. શ્રી. વ્રજેશકુમારજી (તિલકાયત)	પોષ સુદ-૧૦	૧૯૯૬
૨	ગો. શ્રી. વાગીશકુમારજી (શ્રીપુરૂષોત્તમજી)	જ્યેષ્ઠ સુદ-૫	૨૦૨૧
૩	ગો. શ્રી. વેદાન્તકુમારજી (શ્રીવ્રજભુષણજી)	કાર્તિક વદ-૯	૨૦૪૫
૪	ગો. શ્રી. સિદ્ધાન્તકુમારજી (શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી)	કાર્તિક સુદ ૧૦	૨૦૫૦
૫	ગો. શ્રી. દ્વારકેશલાલજી	કાર્તિક વદ-૪	૨૦૨૪
૬	ગો. શ્રી. પરાગકુમારજી (શ્રીપીતામ્બરજી)	વૈશાખ સુદ-૩	૨૦૦૫
૭	ગો. શ્રી નૈમિષકુમારજી (શ્રીવ્રજાલંકારજી)	જ્યેષ્ઠ સુદ-૧૪	૨૦૨૯
૮	ગો. શ્રી શિશિરકુમારજી(શ્રીત્રીલોકીભુષણજી)	ચૈત્ર વદ-૬	૨૦૦૮
૯	ગો. શ્રી. કપિલકુમારજી (શ્રીવ્રજાભરણજી)	વૈશાખ વદ-૧૩	૨૦૩૧
૧૦	ગો. શ્રી. વિઠ્ઠલનાથજી	પોષ વદ-૯	૧૯૭૦
૧૧	ગો. શ્રી. યદુનાથજી	ચૈત્ર સુદ-૯	૧૯૮૮
૧૨	ગો. શ્રી. કૃષ્ણકુમારજી	માહ સુદ-૪	૧૯૯૪
૧૩	ગો. શ્રી અક્ષયકુમારજી	કાર્તિક સુદ-૯	૧૯૯૬
૧૪	ગો. શ્રી રાજેન્દ્રકુમારજી	કાર્થિક વદ-૮	૨૦૦૧
૧૫	ગો. શ્રી શરદકુમારજી	અષાઢ સુદ-૧૪	૨૦૦૭
૧૬	ગો. શ્રી પ્રબોધકુમારજી	જ્યેષ્ઠ સુદ-૧૧	૨૦૧૫
૧૭	ગો શ્રી સંજયકુમારજી	પોષ સુદ -૫	૨૦૨૮
૧૮	ગો. શ્રી પ્રણય કુમારજી	આસો સુદ-૧	૨૦૧૯
૧૯	ગો. શ્રી પરિતોષ કુમારજી	પોષ વદ-૬	૨૦૨૧
૨૦	ગો. શ્રી પંકજકુમારજી	માગસર વદ-૮	૨૦૨૪
૨૧	ગો. શ્રી રવિકુમારજી	આસો સુદ-૯	૨૦૨૫
૨૨	ગો. શ્રી અભિષેકજી	અષાઢ સુદ-૮	૨૦૪૧
૨૩	ગો. શ્રી ગોપાલલાલજી	મહા વદ-૯	૨૦૩૫
૨૪	ગો. શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી	કાર્તિક સુદ-૫	૨૦૩૭
૨૫	ગો. શ્રી રત્નેશકુમારજી	ભાદરવા સુદ-૪	૨૦૪૫

શ્રી દ્વારકાધીશપ્રભુશ્રી કાંકરોલી ઘરના તિલકાયત શ્રી ના જન્મદિવસની યાદી

અનુક્રમ નંબર	નામ	જન્મદિવસ તિથિ	પ્રાકટ્ય સવંત વર્ષ
૧	ગો. શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજી	ભાદરવા વદ-૧૩	૧૬૦૬
૨	ગો. શ્રી દ્વારકેશજી મહારાજ	ચૈત્ર વદ-૧૪	૧૬૨૯
૩	ગો. શ્રી ગિરિધરજી (પ્રથમ)	કાર્તિક વદ-૮	૧૬૬૨
૪	ગો. શ્રી વ્રજભૂષણજી (પ્રથમ)	શ્રાવણ વદ-૯	૧૭૦૦
૫	ગો. શ્રી ગિરિધરજી (દ્વિતીય)	આસો વદ-૫	૧૭૪૫
૬	ગો. શ્રી વ્રજભૂષણજી (દ્વિતીય)	માગસર સુદ-૧	૧૭૬૫
૭	ગો. શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી	માગસર વદ ૧૩	૧૮૧૫
૮	ગો. શ્રી વ્રજભૂષણજી (તૃતીય)	ચૈત્ર સુદ-૮	૧૮૩૫
૯	ગો. શ્રી પુરૂષોત્તમજી	વૈશાખ સુદ-૧	૧૮૪૭
૧૦	ગો શ્રી ગિરિધરલાલજી (તૃતીય)	ભાદરવા સુદ-૨	૧૮૯૮
૧૧	ગો. શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજી	અષાઢ વદ ૧૩	૧૯૨૪
૧૨	ગો. શ્રી દ્વારકેશલાલજી	ભાદરવા વદ ૬	૧૯૬૪
૧૩	ગો. શ્રી વ્રજભૂષણજી (ચર્તુથ)	મહા વદ-૨	૧૯૬૮
૧૪	ગો. શ્રી વ્રજેશકુમારજી (વર્તમાન)	પોષ સુદ-૧૦	૧૯૯૬

શ્રી દ્વારકાધીશ પ્રભુ કાંકરોલીના ઘરના વાર્ષિક ઉત્સવ તથા અપ્રસિદ્ધ ઉત્સવોનો સંક્ષિપ્ત પરિચય

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૧	શ્રાવણ વદ	૨	હિંડોરા વિજય	શ્રી ના હિંડોરા ઝુલવાનું બંધ થાય છે
૨	શ્રાવણ વદ	૭	છઠ્ઠીનો ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે
૩	શ્રાવણ વદ	૮	જન્માષ્ટમી શ્રી કૃષ્ણ જયન્તી	પ્રસિદ્ધ છે
૪	શ્રાવણ વદ	૯	(અ) નંદ મહોત્સવ (બ) શ્રી વ્રજભૂષણજીનો ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે પ્રા. સં ૧૬૯૯ જેમણે શ્રી દ્વારકાધીશજીને ગોકુલથી પ્રથમ રાજનગર (અમદાવાદ) બાદ સં. ૧૭૨૬મા આસોટીયા પધરાવ્યા
૫	શ્રાવણ વદ	૧૩	છઠ્ઠીના પલના	જન્માષ્ટમી પછીના પલના
૬	,, ,,	૧૪	શ્રી ગિરધરલાલજીના ઉત્સવની વધાઈ	
૭	ભાદરવા સુદ	૧	શ્રી રાધાષ્ટમીની વધાઈ	પ્રસિદ્ધ છે.
૮	,, ,,	૨	શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ	પ્રા સં ૧૮૯૯ શ્રીપુરૂષોતમજી મહારાજના વહુજી શ્રી પદમાવતીજીએ સંવત ૧૯૦૮માં ગોદ લીધા ૧૨૦ વચનામૃત ગ્રંન્થ કર્તા
૯	,, ,,	૫	ગુપ્ત ઉત્સવ	શ્રી ચન્દ્રાવલીજીનો ઉત્સવ
૧૦	,, ,,	૮	રાધાષ્ટમી	પ્રસિદ્ધ છે.

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૧૧	ભાદરવા સુદ	૯	શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ	પ્રા સં ૧૮૫૪ જસવન્તરાવ હોલકરને સં ૧૮૫૮માં ચર્તુભુજ રૂપથી દર્શન દીધા.
૧૨	„ „	૧૧	દાન એકાદશી	પ્રસિદ્ધ છે
૧૩	„ „	૧૨	વામન દ્વાદશી	પ્રસિદ્ધ છે
૧૪	„ વદ	૧	સાંઝીનો પ્રારંભ	પ્રસિદ્ધ છે
૧૫	„ „	૬	શ્રી બાલકુષ્ણજીના ઉત્સવની વધાઇ	
૧૬	„ „	૧૨	શ્રી ગોપીનાથજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૫૬૭ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ના જયેષ્ઠ પુત્ર
૧૭	„ „	૧૩	શ્રી બાલકૃષ્ણજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૬૦૬ શ્રી ગુંસાઇજીના તૃતીય પુત્ર આ ઘરના પ્રથમ તિલકાયત
૧૮	આસો સુદ	૧	નવરાત્રિ પ્રારંભ	પ્રસિદ્ધ છે
૧૯	„ „	૮	શ્રી ગિરધર ગોપાલજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૯૯૪ શ્રી વ્રજભુષણલાલજીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર
૨૦	„ „	૧૦	દશેરા અને અન્નકુટની વધાઇ	પ્રસિદ્ધ છે
૨૧	„ „	૧૩	છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	શ્રી બાલકૃષ્ણજી મહારાજ કૃત વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં થયો સંવત ૧૯૪૨માં
૨૨	„ „	૧૫	શરદ પૂર્ણિમા	રાસોત્સવ પ્રસિદ્ધ છે
૨૩	આસો વદ	૧	શરદ ઉત્સવ દિવસનો	પ્રસિદ્ધ છે
૨૪	„ „	૨	શ્રી ગિરધરલાલાજીના ઉત્સવની વધાઇ	

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૨૫	આસો વદ	૫	શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૭૪૫ શ્રી વ્રજભુષણજીના પ્રથમ પુત્ર જેમણે આસોટિયાથી શ્રી દ્વારકાધીશજીને કાંકરોલીમાં પધરાવ્યા આ ભવાઇ વાળા પણ કહેવાય છે.
૨૬	„ „	૭	(અ) શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજી ગાદી બિરાજ્યાનો ઉત્સવ	સં ૧૯૩૬માં શ્રી ગિરધરલાલજીના સ્થાન પર શ્રી પદમાવતી માજી મહારાજે ગોદ લીધા પ્રા. સં ૧૯૨૪ મથુરાના ઘરથી ગોદ આવ્યા
			(બ) શ્રી પુરૂષોત્તમલાલજી નો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૯૬૬માં શ્રી બાલકૃષ્ણજીના બીજા પુત્ર નાની અવસ્થામાં લીલામાં પધાર્યા
			પહેલો નૌ મહલા	નૌ મહોલામાં બિરાજવાનો ઉત્સવ
૨૭	„ „	૮	બીજો નૌ મહલા	નૌ મહોલામાં બિરાજવાનો ઉત્સવ
૨૮	„ „	૮	ત્રીજો નૌ મહલા	નૌ મહોલામાં બિરાજવાનો ઉત્સવ
૨૯	„ „	૧૧	દિવાળીની વધાઇ	પ્રસિદ્ધ છે
૩૦	„ „	૧૩	ધનતેરસ	પ્રસિદ્ધ છે.
૩૧	„ „	૧૪	રૂપચર્તુદશી	પ્રસિદ્ધ છે.
૩૨	„ „	૩૦	દિવાળી	પ્રસિદ્ધ છે.
૩૩	કાર્તિક સુદ	૧	અન્નકુટ ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે
૩૪	„ „	૨	ભાઇબીજ, યમ દ્વિતીયા	પ્રસિદ્ધ છે.

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૩૫	કાર્તિક સુદ	૬	શ્રી મદન મોહનજી (કામવન) કાંકરોલી પધાર્યા	શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજ કૃત. શ્રી દ્વારકાધીશ પ્રભુ સાથે બિરાજ્યા સં ૨૦૩૯ શયનમાં નૌ મહલામાં દર્શન થયા
૩૬	,, ,,	૮	ગોપાષ્ટમી	પ્રસિદ્ધ છે.
૩૭	,, ,,	૯	અક્ષય નવમી શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	વર્તમાન તિ શ્રી વ્રજેશકુમાર મહારાજશ્રી કૃત છપ્પન ભોગ ઉત્સવ સં ૨૦૪૯ વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં
૩૮	,, ,,	૧૦	શ્રી બાલકૃષ્ણજી (સુરત) કાંકરોલી પધાર્યા	શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજ કૃત. શ્રી દ્વારકાધીશ પ્રભુની સાથે બિરાજ્યા સં ૨૦૪૨ ચોકમાં નૌમોહલામાં દર્શન થયા.
૩૯	,, ,,	૧૧	પ્રબોધિની એકાદશી	પ્રસિદ્ધ છે.
૪૦	,, ,,	૧૨	શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ	શ્રી ગુંસાઈજીના પ્રથમ લાલજી પ્રા. સં ૧૫૯૭
			શ્રી રઘુનાથજીનો ઉત્સવ	શ્રી ગુંસાઈજીના પંચમ લાલજી પ્રા. સં ૧૬૧૧
૪૧	,, વદ	૧	વ્રતચર્યા પ્રારંભ	પ્રસિદ્ધ છે.
૪૨	,, ,,	૫	શ્રી ગિરધરલાલજીના ઉત્સવની વધાઈ	
૪૩	,, ,,	૭	શ્રી ગોપાલલાલજી મહારાજ નો ઉત્સવ	મથુરા નિવાસી શ્રી બાલકૃષ્ણજીના ભાઈ, શ્રી કલ્યાથરાયજીના પુત્ર

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૪૪	કાર્તિક વદ	૮	શ્રી ગિરધરલાલજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૬૬૨ શ્રી દ્વારકેશજી ના પુત્ર મહારાણા જગત - સિંહજીને દીક્ષા આપી આસોટિયા ભેટ આવ્યું
			શ્રી ગોવિન્દરાયજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૫૯૯ શ્રી ગુંસાઈજી ના દ્વિતીય પુત્ર
૪૫	,, ,,	૯	છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	સં ૧૯૯૪ શ્રી વ્રજભૂષણજી લાલજી કૃત શ્રી ગિરધર ગોપાલજીના જન્મ પછીનો વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં
૪૬	,, ,,	૧૧	શ્રી ગોકુલનાથજીના ઉત્સવની વધાઈ	
૪૭	,, ,,	૧૩	શ્રી ઘનશ્યામજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૬૨૮ શ્રી ગુંસાઈજી ના સપ્તમ પુત્ર
૪૮	,, ,,	૧૪	શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ	પ્રા.સં ૧૮૨૧ શ્રી વ્રજનાથજી ના બીજા પુત્ર તથા શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના નાનાભાઈ તે તિલકાયત નથી થયા
૪૯	માગસર સુદ	૨	શ્રી વ્રજભુષજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૭૬૫ શ્રીગિરધરજી ભવાઈવાળાના પુત્ર શ્રી દ્વા. પ્રાકટ્ય વાર્તા નીતિ નિત્ય વિનોદના અદિના ગ્રન્થ કર્તા
૫૦	,, ,,	૪	શ્રી દ્વારકાધીશજી તથા શ્રી મથુરેશજી એક સાથે વિરાજ્યા	શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજના સમયમાં સં ૧૯૬૫માં બન્ને સ્વરૂપો સાથે બિરાજ્યા વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૫૧	માગસર સુદ	૭	શ્રી ગોકુલનાથજીનો ઉત્સવ તથા શ્રી ગુંસાઇજીના ઉત્સવ ની વધાઇ	શ્રી ગુસાઇજીના ચર્તુથ પુત્ર પ્રા. સં ૧૬૦૮
૫૨	માગસર વદ	૭	છપ્પન ભોગ ઉત્સવ	શ્રી પુરૂષોત્તમજી મહારાજ કૃત સં ૧૮૯૫
૫૩	„ „	૯	શ્રી ગુંસાઇજીનો પ્રાકટય ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૫૭૨ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી ના દ્વિતીય પુત્ર પ્રસિદ્ધ છે.
૫૪	„ „	૧૧	શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના ઉત્સવની વધાઇ	
૫૫	„ „	૧૪	શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં. ૧૮૧૧ શ્રી વ્રજનાથજીના પ્રથમ પુત્ર જેમની આણંદની બેઠક છે. શ્રી વ્રજભૂષણજી પછી તે તિલકાયત થયા એમના પિતા તિલકાયત નથી થયા
૫૬	પોષ સુદ	૧૦	શ્રી વ્રજેશકુમારજીનો જન્મ દિવસ	વર્તમાન તિલકાયત શ્રી પ્રા. સં ૧૯૯૬
૫૭	„ „		મકર સંક્રાંતિ નો પ્રથમ દિવસ ભોગી ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે.
૫૮			મકર સંક્રતિનો દિવસ	પ્રસિદ્ધ છે.
૫૯	પોષ વદ	૪	ગુપ્ત ઉત્સવ	શ્રી સ્વામિનીજીનો ઉત્સવ ગુજાં વનમાંથી આજે પધાર્યા
૬૦	„ „	૯	શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીનો જન્મ દિવસ	પ્રા. સં ૧૯૭૦ શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજીના ચતુર્થ પુત્ર બડાલ્લા કાંકરોલી તથા મથુરાના શ્રી ગોપાલ લાલજીની ગાદી એ ગયા શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજશ્રીના નાનાભાઇ

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૬૧	મહા સુદ	૫	વસંત પંચમી	પ્રસિદ્ધ છે
૬૨	„ „	૧૪	શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજના ઉત્સવની વધાઇ	
૬૩	„ „	૧૫	હોરી ડંડા રોપણી	હોલિકા રોપણનો દિવસ હોળી ડાંડો
૬૪	મહા વદ	૨	શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૯૬૮ શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીના તૃતીય પુત્ર તિલકાયત થયા સં ૧૯૭૬
૬૫	„ „	૪	શ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજ ગાદી બિરાજ્યા ઉત્સવ	સં ૧૯૦૮ શ્રી પુરૂષોત્તમજી મહારાજના સ્થાન પર મથુરાથી આવી તિલકાયત થયા
૬૬	„ „	૭	શ્રીનાથજીનો પાટોત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે
૬૭	„ „	૧૩	શિવરાત્રી	પ્રસિદ્ધ છે.
૬૮	ફાગણ સુદ	૮	હોલિકાષ્ટક પ્રારંભ દિવસ	પ્રસિદ્ધ છે.
૬૯	„ „	૧૧	કુંજ એકાદશી	પ્રસિદ્ધ છે.
૭૦	„ „	૧૩	ચોર્યાશી ખંભનો બગીચો	પ્રસિદ્ધ છે.
૭૧	„ „	૧૫	હોલિકા ઉત્સવ હોળી	પ્રસિદ્ધ છે.
૭૨	ફાગણ વદ	૧	ડોલોત્સવ	શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજીના ચતુર્થ શ્રી પીતામ્બરજીનો ઉત્સવ સં૧૬૩૯
૭૩	„ „	૨	દ્વિતીયા પાટોત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે.
૭૪	„ „	૯	ગુપ્ત ઉત્સવ	શ્રી સ્વામિનીજીનો ઉત્સવ

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૭૫	„ „	૧૦	છપ્પન ભોગ ઉત્સવ	સં. ૧૯૫૧ શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજ કૃત
૭૬	ચૈત્ર સુદ	૧	સંવત સરોત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે.
૭૭	„ „	૩	ગનગૌરનો ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે.
૭૮	„ „	૬	શ્રી યદુનાથજી મહારાજજી નો પ્રાગટ્ય ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૬૧૩ શ્રી ગુંસાઈજી ના ષષ્ઠમ લાલજી
૭૯	„ „	૮	શ્રી વ્રજભૂષણજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૮૩૪ શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના પ્રથમ પુત્ર વડોદરા ટાંકાકુઈ મદન ઝાંપાની બેઠક એમની છે. આપેજ શ્રી નાથજીને ઘસ્યાડથી પાછા શ્રીનાથ દ્વારા પધરાવ્યા.
૮૦	″ ″	૯	શ્રી રામનવમી શ્રી વ્રજભુષણજીનો ઉત્સવ પ્રસિદ્ધ છે.	પ્રસિદ્ધ છે. પ્રા. સં. ૧૬૩૬ શ્રીબાલકુષ્ણજી (તૃલાલજી) ના તૃતીય પુત્ર તિલકાયત નથી થયા તેમના વંશમાં શ્રી વ્રજભૂષણજી ઉપનામ શ્રીપ્રાણવલ્લભજી સં ૧૭૧૭ શ્રી ગિરધરજીના દત્તક તિલકાયત થયા
૮૧	„ „	૧૧	શ્રી મહાપ્રભુજીના પ્રાગટ્ય ઉત્સવની વધાઈ	
૮૨	„ „	૧૫	છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	શ્રી સૌદર્યવતી ભાભીજી મહારાજ દ્વારા સં. ૧૯૮૧માં શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના યજ્ઞોપવીત પ્રસ્તાવ સમયે કરેલો

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૮૩	ચૈત્ર વદ	૪	શ્રી મહાપ્રભુજીના ઉત્સવ પ્રાગટ્ય ઉત્સવની બડી વધાઈ	
૮૪	ચૈત્ર વદ	૭	શ્રી દ્વારકાધીશજી તથા શ્રીમથુરેશજી સાથે બિરાજ્યા	સં ૧૯૬૬ માં કાંકરોલીમાં મહારાજ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી ના સમયમાં ખસખાનાનો મનોરથ
૮૫	„ „	૧૧	શ્રી મહાપ્રભુજીનો પ્રાગટ્ય ઉત્સવ	પ્રા. સં. ૧૫૩૫ શ્રી શુદ્ધાદ્વૈત સંપ્રદાયના પ્રથમ આચાર્ય શ્રી વલ્લભાચાર્ય ચરણ પ્રસિદ્ધ છે.
૮૬	„ „	૧૩	શ્રી પુરૂષોત્તમજીની વધાઈ	
૮૭	વૈશાખ સુદ	૧	શ્રી પુરૂષોતમજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં ૧૮૪૬ શ્રી ગોકુલનાથજીના પુત્ર જે શ્રી વ્રજભૂષણજીના દત્તક આવી તિલકાયત થયા . સંવત ૧૮૭૭
૮૮	„ „	૩	અક્ષય તૃતીયા શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી ગાદી બિરાજ્યા ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે. સં. ૧૯૭૬ આપશ્રીના મોટા ભાઈ દ્વારકેશજી પછી ગાદી બિરાજ્યા.
૮૯	„ „	૧૧	શ્રી દ્વારકેશજીના ઉત્સવની વધાઈ	
૯૦	„ „	૧૨	શ્રી વ્રજેશકુમારજી ગાદી બિરાજ્યા ઉત્સવ	વર્તમાન તિલકાયત શ્રી વ્રજેશકુમારજી ગાદી બિરાજ્યા સં. ૨૦૩૬
૯૧	„ „	૧૪	શ્રી નૃસિંહ જ્યંતી શ્રી દ્વારકેશજીનો ઉત્સવ	પ્રસિદ્ધ છે. પ્રા. સં ૧૬૨૯ શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજી (તૃ-લાલજી)ના પ્રથમ પુત્ર શ્રીગોકુલમાં શ્રીદ્વારકાધીશજી નું મંદિર બનાવ્યું અને ત્યાં પધરાવ્યા.

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૯૨	વૈશાખ વદ	૫	છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	સં. ૧૯૭૬માં શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજના યજ્ઞોપવીત પ્રસ્તાવ સમયે શ્રીસૌદંર્યવતી ભાભીજીમહારાજ દ્વારા કૃત
૯૩	,, ,,	૯	છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	સં. ૨૦૪૧માં વર્તમાન તિ. શ્રી. વ્રજેશકુમારજી મહારાજ કૃત શ્રી પ્રભુને વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં પધરાવીને કર્યો
૯૪	જ્યેષ્ઠ સુદ	૪	શ્રી વ્રજનાથજીના ઉત્સવની વધાઇ	
૯૫	,, ,,	૭	શ્રી વ્રજનાથજીનો ઉત્સવ	પ્રા.સં૧૭૮૮ શ્રીવ્રજભૂષણજી ના પુત્ર તે તિલકાયત નથી થયા તેમના પુત્ર શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી શ્રીવ્રજભૂષણજી પછી તિલકાયત થયા આ લાલજી શ્રી વ્રજનાથજીના નામથી પ્રસિદ્ધ હતા
૯૬	,, ,,	૧૦	ગંગા દશમી	પ્રસિદ્ધ છે.
૯૭	,, ,,	૧૧	જ્યેષ્ઠા ભિષેક	પ્રસિદ્ધ છે.
૯૮	જ્યેષ્ઠ વદ	૬	શ્રી દ્વારકેશલાલજીનો ઉત્સવ	પ્રા. સં. ૧૯૬૪ શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીના પ્રથમ પુત્ર તેઓ પિતાશ્રી પછી કેવળ ૧ વર્ષ જ તિલકાયત રહ્યા આપના પછી શ્રી વ્રજભુણજી તિલકાયત થયા

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૯૯	જ્યેષ્ઠ વદ	૮	છપ્પન ભોગનો ઉત્સવ	સં. ૨૦૧૭ શ્રી વ્રજેશકુમારજીના લગ્ન વિવાહ પ્રસ્તાવ પ્રસંગે શ્રી દ્વારકાધીશ પ્રભુ છપ્પન ભોગ આરોગ્યા.
૧૦૦	અષાડ સુદ	૨	રથ યાત્રા	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૦૧	,, ,,	૫	શ્રી દ્વારકાધીશજીનો પાટોત્સવ	સં. ૧૭૨૦ શ્રી વ્રજરાયજીના ડાકાથી પાછા ગોકુલ શ્રી વ્રજભૂષણજીએ પધરાવ્યા.
૧૦૨	〃 〃	૬	કંસુબા છઠ્ઠ	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૦૩	〃 〃	૧૧	દેવશયની	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૦૪	〃 〃	૧૫	વ્યાસ પૂર્ણિમા	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૦૫	〃 વદ	૧	હિંડોરા પ્રારંભ	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૦૬	〃 〃	૪	જન્માષ્ટમીની વધાઇ	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૦૭	〃 〃	૫	શ્રી દ્વારકાધિશજી. શ્રી નવનીત પ્રિયાજી અને શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી કાંકરોલીમાં વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં પધાર્યા.	સવંત ૨૦૪૨ વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં એક સાથે હિંડોરા ઝુલ્યા. વર્તમાન તિ. શ્રી વ્રજેશકુમારજી મહારાજ કૃત મનોરથ.
૧૦૮	〃 〃	૧૦	શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજીના ઉત્સવની વધાઇ	

અનુ. નં.	માસ	તિથી	ઉત્સવનું નામ	પરિચય
૧૦૯	અષાડ વદ	૧૩	શ્રી બાલકૃષ્ણ લાલજીનો ઉત્સવ દોહરા મંડાણ	પ્રા. સં ૧૯૨૪ શ્રી ગિરધરલાલજી મહારાજના સ્થાન પર મથુરાથી ગોદ પધાર્યા. વર્તમાન તિલકાયત ગો. શ્રી વ્રજેશકુમારજીના તાતજી મહારાજ. ગાદી બિરાજ્યા સં ૧૯૩૬.
૧૧૦	" "	૩૦	હરિયાળી અમાસ	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૧૧	શ્રાવણ સુદ	૩	ઠકુરાની ત્રીજ	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૧૨	" "	૫	નાગપંચમી	પ્રસિદ્ધ છે.
૧૧૩	" "	૧૧	પવિત્રા એકાદશી સાતસ્વરૂપ પવિત્રા ઉત્સવ	ગો. તિ. શ્રી ગોવિન્દલાલજી મહારાજ કૃત વિશેષ ઉત્સવ. નાથદ્વારા.
૧૧૪	" "	૧૫	રક્ષા બંધન રાખી પાંચ સ્વરૂપોને રક્ષા ધરાવી.	પ્રસિદ્ધ છે. ગો. શ્રી વ્રજભૂષણજીમહારાજ કૃત વિશેષ ઉત્સવ.

સુચના :- વર્ષ ભરના નાનાં અને મોટા ઉપર કહેલા ઉત્સવોની સુચી શ્રી દ્વારકાધીશજી કાંકરોલીના ઘરની સેવા શૃંગાર પ્રણાલી તથા કિર્તન પ્રણાલિકાના આધાર પર જ્ઞાન સૌકર્યાર્થ લખવામાં આવી છે. એનું વિવરણ તે કહેલાં ઉક્ત ગ્રન્થોમાંથી વિદિત થઇ શકે છે.

P 919

શ્રી વલ્લભ પુસ્તકાલય
કાંદિવલી મુંબઈ
સુખધામ : ૨૮૦૧૨૮૩૦
સુરેન્દ્ર જ શાહ : ૯૮૩૩૨૭૨૩૮૩
ક્રિષ્ણાબેન શાહ : ૭૫૦૬૦૮૭૪૬૨
No. P 919

આ ગ્રંથ પ્રકાશનમાં સહીયોગી

શ્રી બાલકૃષ્ણ પરીખ, વડોદરા.

શ્રી વલ્લભભાઈ પી. શાહ, વડોદરા.